2024-25

वित्तीय बाज़ार का परिचय

INTRODUCTION TO FINANCIAL MARKET

(सहायक-सामग्री)
कक्षा नौवीं

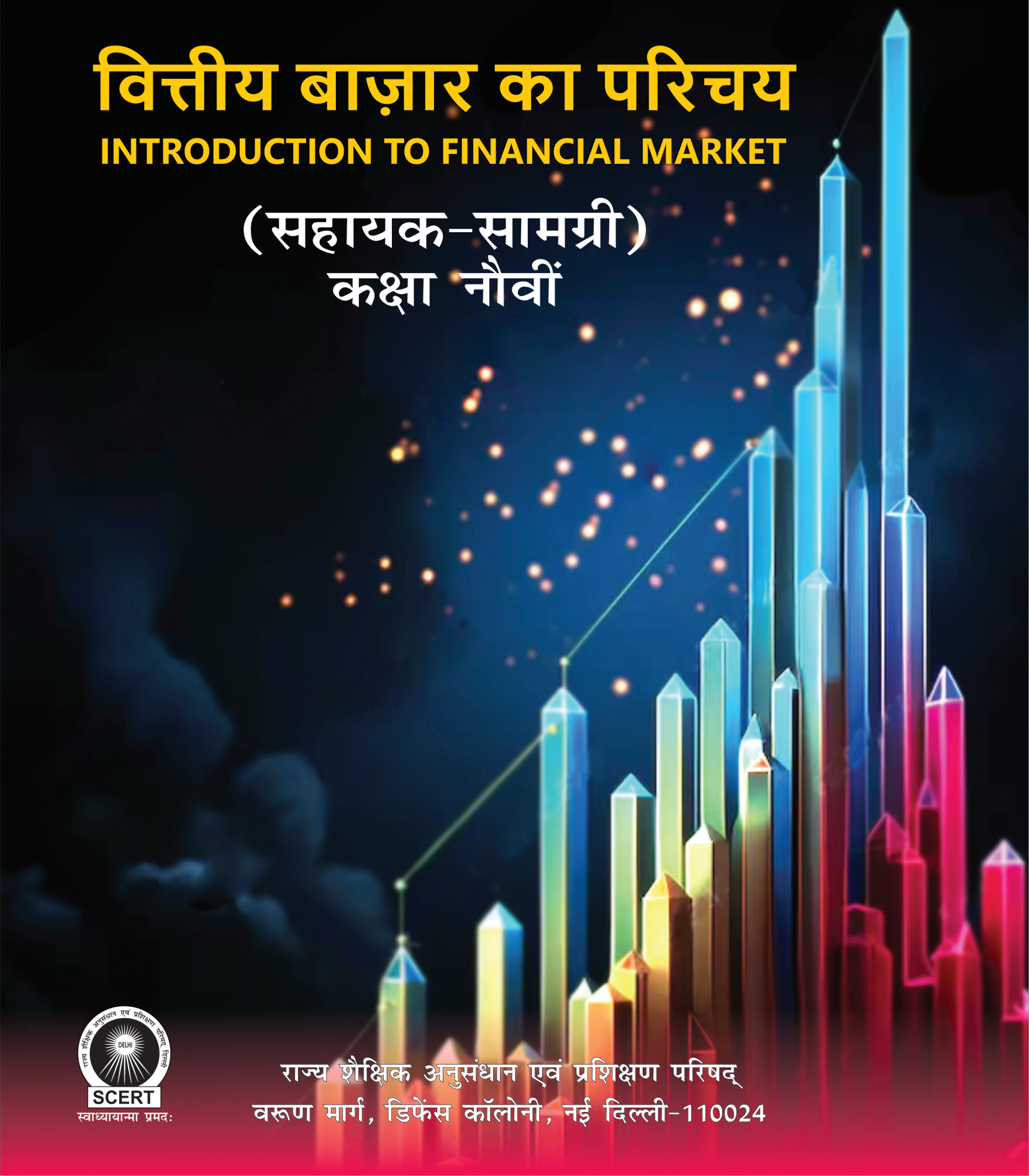

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
वरूण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

Introduction to Financial Markets

(वित्तीय बाज़ार का परिचय)

Class IX-2024-25

SCERT DELHI

State Council of Educational Research & Training, Delhi
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi - 110024

ISBN: 978-81-971736-6-0

©राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली

फरवरी 2024

मुख्य सलाहकार

डॉ रीता शर्मा, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली
डॉ नाहर सिंह, संयुक्त निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली

सलाहकार

बिमला कुमारी, डी.डी.ई, वोकेशनल शिक्षा
राकेश बल, ओ.एस.डी., वोकेशनल ब्रांच
संजीव कुमार गौड़, ओ.एस.डी., वोकेशनल ब्रांच

नोडल अधिकारी

सुश्री रमन अरोड़ा, सहायक प्रोफेसर, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली

विषय समन्वयक

डॉ. सीमा श्रीवास्तव, सहायक प्रोफेसर, मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान आर.के.पुरम., नई दिल्ली
सुश्री रमन अरोड़ा, सहायक प्रोफेसर, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली

लेखक एवं समीक्षक समूह

श्री विनय कुमार, विषय विशेषज्ञ, सेवानिवृत पी.जी.टी. (कॉमर्स), इन्द्रप्रस्थ वर्ल्ड स्कूल, नई दिल्ली
श्री सुधीर सपरा, प्रवक्ता (वाणिज्य), सर्वोदय विद्यालय, पूर्वी पंजाबी बाग, नई दिल्ली
श्री गौरव पालिया, पी.जी.टी. (कॉमर्स), डी.ए.वी. सेंटेनरी पब्लिक स्कूल, पश्चिम एन्क्लेव, नई दिल्ली
श्री श्याम सुंदर, व्यावसायिक समन्वयक (एफ.एम.एम.), व्यावसायिक शाखा (ए आई एस ई सी टी), नई दिल्ली
श्री परवीन कुमार, वोकेशनल ट्रेनर (एफ. एम. एम.), एस वी किचनर रोड, मालचा मार्ग, नई दिल्ली
श्री अभय कुमार रॉय, वोकेशनल ट्रेनर (एफ. एम. एम.), जी बी एस एस एस, राजौरी गार्डन, दिल्ली
सुश्री मधुलिका रावल, विषय विशेषज्ञ एवं पूर्व बैंकर, बैंक ऑफ बड़ौदा
सुश्री सोनम यादव, (बी.आर.पी.), एस. सी. आर. टी, दिल्ली
डॉ. आनंद सक्सेना, एसोसिएट प्रोफेसर, डी. डी. यू., दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
डॉ. विजय कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ एजुकेशन, ए पी जे सत्या यूनिवर्सिटी, सोहना, गुरुग्राम
डॉ. शारदा कुमारी, पूर्व प्राचार्य, मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर. के. पुरम, नई दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
डॉ. राकेश कुमार, सहायक प्रोफेसर, आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज, दिल्ली
डॉ. सीमा श्रीवास्तव, सहायक प्रोफेसर, डाइट आर. के. पुरम, नई दिल्ली
सुश्री रमन अरोड़ा, सहायक प्रोफेसर, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली

प्रकाशन अधिकारी

डॉ. मुकेश यादव, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली

प्रकाशन दल

श्री दिनेश कुमार शर्मा, एएसओ, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली
श्रीमति राधा, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली
सुश्री फ़ौजिया, (बी.आर.पी.), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली

प्रकाशित : राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली
डिजाईन : राज प्रिंटर्स, ए-9, सेक्टर बी-2, ट्रोनिका सिटी, लोनी, गाज़ियाबाद (यू.पी.)

SCERT DELHI

Dr. Rita Sharma
Director SCERT

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

STATE COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH and TRAINING
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024
Tel.: +91-11-24331356
E-mail : dir12scert@gmail.com

Date : 18/7/2024

D.O. No. : F1 0(1)/[illegible]/DPR/23-24/60

संदेश

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020" व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा के साथ जोड़ने की ओर एक सकारात्मक कदम है। विद्यार्थियों के लिए भाषा, कला और संस्कृति के साथ व्यावसायिक कौशल सीखना भी अनिवार्य है जो उनके समग्र विकास में सहयोगी होगा।

इसी दिशा में राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली (SCERT Delhi) ने राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (NSQF) पर आधारित विषयों में से दस व्यावसायिक विषयों एवं रोजगार कौशल में शिक्षकों के लिए सहायक सामग्री का निर्माण किया है इस सहायक सामग्री में विषय-वस्तु से संबंधित गतिविधियाँ, क्रियाकलाप, केस स्टडी तथा विभिन्न मूल्यांकन/ आकलन रणनीतियाँ सरल भाषा में प्रस्तुत की गई हैं।

आशा है कि ये सहायक पुस्तकें शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी तथा पठन - पाठन प्रक्रिया को रोचक एवं प्रभावी बनाने में दिशा प्रदान करेंगी। इसके अतिरिक्त ये विद्यार्थियो को 21 वीं सदी के व्यवसायिक कौशल और चुनौतियों से निपटने के लिये सक्षम बनाने में योगदान करेंगी।

डॉ. रीता शर्मा
निदेशक

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

Dr. Nahar Singh
Joint Director (Academic)

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)

Tel. : +91-11-24336818, 24331355, Fax : +91-11-24332426
Tel.: +91-11-24331355, Fax : +91-11-24332426
E-mail : jdscertdelhi@gmail.com

Date : 18/07/2024

D.O. No. : F.11(23)/JDB/MSC/SCERT/2024-25/469

संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में एक सार्थक पहल है। इसमें समग्रता की दृष्टि का परिचय देते हुए व्यावसायिक शिक्षा, कौशल शिक्षा, हस्तकला, लोक विद्या इत्यादि के पाठ्यक्रम में स्थानीय व्यावसायिक ज्ञान के समावेशन और विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास पर बल देने की बातें कही गई हैं,

इसी को ध्यान में रखते हुए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली (SCERT Delhi) ने कक्षा नवीं के दस व्यावसायिक विषयों एवं रोजगार कौशल में शिक्षकों के लिए सहायक सामग्री का निर्माण किया है – औटोमोटिव (Automotive), सूचना एवं प्रौद्योगिकी (Information Technology), वित्तीय बाजार का परिचय (Introduction to Financial Market), पर्यटन से परिचय (Introduction to Tourism), खुदरा (Retail), सौन्दर्य एवं कल्याण (Beauty and Wellness), खाद्य उत्पाद (Food Production), स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं (Healthcare Services), मल्टीस्किल फाउंडेशन कोर्स (Multi Skill Foundation Course) एवं शारीरिक गतिविधि प्रशिक्षक (Physical Activity Trainer)। इसके अतिरिक्त रोजगार कौशल (Employability Skills) पर एक पुस्तिका है जो सभी दस विषयों के लिए समान है इसमें संचार कौशल (Communication Skills), स्व-प्रबन्धन कौशल (Self Management), आई.सी.टी. कौशल (ICT Skills), उद्यमशीलता कौशल (Entrepreneurship Skills) and हरित कौशल (Green Skills) इत्यादि के बारे में जानकारी दी गई है।

आशा है ये सहायक पुस्तकें कहीं-न-कहीं आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करेंगी।

डॉ नाहर सिंह
संयुक्त निदेशक

प्रस्तावना

भारतीय अर्थव्यवस्था एक विकासशील अर्थव्यवस्था है। विभिन्न व्यावसायिक कौशल देश के भविष्य निर्माण में कुशल श्रम शक्ति प्रदान करने में योगदान करते है। राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (NSQF) एक योग्यता-आधारित ढांचा है जो 27 दिसंबर, 2013 को अधिसूचित किया गया था। NSQF (एन.एस.क्यू.एफ.) के तहत शिक्षार्थी औपचारिक गैर औपचारिक या अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से किसी भी स्तर पर आवश्यक योग्यता के लिए प्रमाणन प्राप्त कर सकता है।

व्यावसायिक शिक्षा कौशल प्रशिक्षण सामान्य शिक्षा, तकनीकी शिक्षा और व्यवसाय बाजार में प्रवेश करने और बाहर आने के अधिसख्य अवसर प्रदान करना एवं जीवन पर्यन्त प्रशिक्षण और कौशल के अवसरों को बढ़ावा देना इत्यादि एन.एस.क्यू.एफ. के मुख्य तत्वों में है।

वित्तीय साक्षरता व्यावसायिक कौशल के साथ साथ एक महत्त्वपूर्ण जीवन कौशल है। वित्तीय बाजार की गहरी समझ भविष्य में जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में भी प्रेरित करेगी। जीवन को सुचारु रुप से जीने के लिए जितना महत्त्वपूर्ण धन अर्जित करना है उससे भी अधिक आवशयक समझधारी से उसे खर्च करना, बचत करना एवं निवेश करना है।

व्यावसायिक कौशल वित्तीय बाज़ार का परिचय सहायक सामग्री कक्षा ९ के विद्यार्थियों की धन की अवधारणा , धन की अब तक की यात्रा , आय , व्यय ,बजट और बचत की समझ को विकसित करने हेतु सहायक सिद्ध होगी।

मैं सभी विषय-विशेषज्ञों, व्यावसायिक समन्वयक , व्यावसायिक प्रशिक्षकों, लेखक मंडल एवं समीक्षक सदस्यों का आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने इस पुस्तिका के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सभी सहायक-सामग्री पर आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

SCERT DELHI

विषय सूची

इकाई	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	धन – यह क्या है?	01
2.	धन-विनिमय प्रणालियाँ	08
3.	मुद्रा की महत्वपूर्ण विशेषताएँ	16
4.	वित्तीय नियोजन क्या है?	25
5.	आय क्या है?	41
6.	व्यय क्या होते है ?	48
7.	बैंक क्या होता है?	54
8.	बचत क्यों करें?	70
9.	लक्ष्य निर्धारित करना	80
10.	व्यवस्थित बचत और निवेश	86
11.	बजट बनाना	98
APPENDIX (उत्तर कुंजी)		110

इकाई - 1
धन – यह क्या है?

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के उपरांत विद्यार्थी:

- धन का अर्थ बता पाएंगे।
- धन की विशेषताओं का वर्णन कर पाएंगे।
- धन के इतिहास पर चर्चा कर पाएंगे।
- धन के क्रमिक विकास की विवेचना कर पाएंगे।

मुख्य शब्दावली

धन/मुद्रा Money		धन वह है जिससे जीवन-निर्वाह में सहायता मिलती हो और जिसे अर्जित या प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना तथा समय लगाना पड़ता हो। आम बोलचाल की भाषा में इसे रुपया-पैसा भी बोला जाता है ।
वस्तु - विनिमय प्रणाली Barter System		जब किसी एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु का लेन-देन होता है वह वस्तु विनिमय (Bartering) कहलाती हैं।
नोटबंदी (विमुद्रीकरण) Demonetization		यह एक आर्थिक गतिविधि है जिसके अंतर्गत सरकार पुरानी मुद्रा को चलन में बंद करके नई मुद्रा को प्रचलन में लाती है।

कागज़ी मुद्रा Paper Money		भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी करेंसी नोट जिसका सोने और चाँदी के सिक्कों की तरह कोई आंतरिक मूल्य नहीं होता। यह सरकार के आदेश पर अर्थव्यवस्था में प्रचलित होती है

परिचय

कभी आपने सोचा, आपने जो कपड़े पहने हैं, वह आपको कैसे मिले? आपने जो जूते पहने हैं, वह आपको कैसे मिले? धन की मदद से ! धन आखिर है क्या? धन का उपयोग वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान के माध्यम के रूप में किया जाता है।

आपको अपने दैनिक जीवन में जो कुछ भी चाहिए, चाहे वह कोई वस्तु हो या कोई सेवा, उसके लिए आपको धन की आवश्यकता होती है।

हां, आप कह सकते हैं कि हवा, समुद्र का पानी, बारिश का पानी नि:शुल्क है और हम इसके लिए कोई शुल्क नहीं दे रहे हैं?

इन्हें प्राकृतिक संसाधनों के रूप में वर्गीकृत किया गया है और ये हमारी वित्तीय स्थिति के बावजूद हम सभी के लिए ईश्वरीय उपहार हैं। लेकिन **धन एक ऐसा माध्यम है जिसका उपयोग हम अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करने के लिए करते हैं।**

जिस प्रकार कार को चलाने के लिए ईंधन की आवश्यकता होती है और ईंधन खरीदने के लिए धन की। उसी प्रकार हमें जीवन जीने के लिए रोटी, कपड़ा और मकान की ज़रुरत होती है। जिसको खरीदने के लिए धन की आवश्यकता होती है। क्या आप इस वाक्य से सहमत हैं?

गतिविधि:- उन वस्तुओं की एक सूची बनाएं जो एक छात्र के रूप में आपके लिए आवश्यक है और उसके लिए धन की आवश्यकता है।

धन का संक्षिप्त इतिहास

धन एक ऐसा माध्यम है जिसे एक निश्चित मानक प्रदान किया जाता है। धन का उपयोग वस्तुओं का व्यापार व सेवाओं की खरीद-बिक्री के लिए किया जाता है।

जीवन यापन के लिए धन अत्यंत महत्वपूर्ण है किन्तु समय के साथ इसके रूप में परिवर्तन आया है जैसे वस्तु विनिमय प्रणाली, धातु के सिक्के, कागज के नोट, बैंक में जमा धनराशि, प्लास्टिक करेंसी से होते हुए आज हम डिजिटल मुद्रा के साथ डिजिटल युग में प्रवेश कर चुके हैं।

आइये मुद्रा विकास की इस प्रक्रिया को संक्षिप्त में जानें।

मुद्रा विकास की प्रक्रिया

वस्तु विनिमय : प्राचीन काल में जब धन का आविष्कार नहीं हुआ था, तब व्यापार के लिए या अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए वस्तु के बदले वस्तु (Goods vs Goods), वस्तु के बदले सेवा (Goods vs Service) और सेवा के बदले सेवा (Service vs Service) का प्रचलन था, इसे वस्तु विनिमय कहा जाता है। जैसे कि एक किसान गेहूं की एक बोरी के बदले दूसरे किसान से एक बोरी चावल का आदान-प्रदान करता था। इसी क्रम में आगे चलकर मुद्रा का आविष्कार हुआ जो आज के समय में व्यापार व व्यवसाय की नींव है।

सांकेतिक धन: लोगों ने ऐसी वस्तुओं का आदान-प्रदान करना शुरू कर दिया जिनका कोई वास्तविक मूल्य नहीं था, बल्कि जिनका केवल सहमत या सांकेतिक मूल्य था। एक उदाहरण कौड़ी खोल भारत के तट से दूर एक द्वीप में पाए जाते थे। उनका व्यापक रूप से मुद्रा के रूप में प्रयोग चीन, भारत, थाइलैंड और पश्चिमी अफ्रीका में किया गया।

एक अन्य सांकेतिक मुद्रा जिसका अमेरिका में व्यापक रूप से प्रयोग किया गया- **वामपम** था। वामपम आयाताकार खोल होते थे। वामपम का प्रयोग अमेरिका के बहुत से राज्यों में किया गया। न्यू जर्सी में एक वामपम कारखाना वर्ष 1859 तक व्यवसाय में रहा।

धातु मुद्रा: धातुओं का प्रयोग पूरे इतिहास में धन के रूप में किया जाता रहा है। उदाहरण के लिए तांबा, चांदी और सोने के सिक्के इत्यादि। सिक्के धातु के टुकड़े हैं, जिन पर डिजाइन के साथ बिंदु बने होते थे जो कि धन होने का संकेत करते थे। सबसे पहले के सिक्के सातवीं शताब्दी बी.सी. में लायडिआ, जो अब तुर्की में है, बनाए गए थे। धातु का आकार महत्वपूर्ण नहीं था, उनके भार की पुष्टि के लिए तस्वीरों की स्टाम्प लगाई गई थी। धातु का मूल्य पहले वजन से मापा जाता था, लेकिन समय के साथ इसे तौलने की परेशानी से बचने के लिए और उनके मूल्य को दर्शाने के लिए इस पर मुहर लगा दी जाती थी जिसे स्टाम्पिंग कहा जाता था।

स्टाम्पिंग सिक्के पर मुहर लगाने कि एक प्रक्रिया थी जो उस व्यक्ति की पहचान बताती थी जिसने सिक्के के भार की गारंटी दी थी।

बाद में धातु के सिक्कों के भारी थैलों को ले जाना कठिन पाया गया जिसने पेपर धन के लिए रास्ता तैयार किया।

पेपर धन : पेपर धन की खोज 10वीं शताब्दी के दौरान चीन में की गई थी। शुरू में उन्होंने हिरण की चमड़ी के एक फुट वर्ग के टुकड़ों का प्रयोग किया और बाद में पेपर धन का प्रयोग शुरू किया। परंतु 1455 AD में चीन ने पेपर के मूल्यों में वृद्धि के कारण पेपर मुद्रा के प्रयोग को बंद कर दिया। दुर्भाग्यवश, इस पेपर धन के उदाहरण आज मौजूद नहीं हैं।

यूरोप में पहली पेपर मिल 1151 AD में स्थापित की गई थी जो अब स्पेन में है। एक बार पेपर उपलब्ध होने पर लोगों ने हाथ से लिखी रसीदों के लिए विनिमय में व्यापारियों के पास अपने भारी सिक्कों को छोड़ना शुरू कर दिया।

व्यवसाय के परिणाम में वृद्धि के कारण पेपर धन भी ले जाना काफी भारी हो गया। इस प्रकार, पेपर धन ने अमूर्त धन का रास्ता तैयार किया।

अमूर्त धन: जब सिक्के और करेंसी नोट बैंकों के पास जमा किए गए तो वे अमूर्त धन बन गए।

प्लास्टिक करेंसी: प्लास्टिक करेंसी अर्थात डेबिट कार्ड, हमें जब भी जरूरत होती है एटीएम से धन की निकासी में सहायता करता है।

डिजिटल मुद्रा : यह कंप्यूटर आधारित मुद्रा है। इनका लेनदेन में उपयोग केवल इंटरनेट या मोबाइल आधारित सॉफ्टवेयर द्वारा ही संभव है जैसे Bhim UPI आदि।

भारतीय रुपये का इतिहास

भारत की वर्तमान करेंसी 'रुपया' का नाम शेरशाह सूरी (1540-1545) द्वारा प्रचलित मुद्रा 'रुपिया' के आधार पर रखा गया है। रुपया शब्द संस्कृत भाषा के शब्द **'रुप्यकम्'** से लिया गया है जिसका अर्थ है 'चांदी का सिक्का'।

भारत में मुद्रा का प्रचलन लगभग 2000 वर्षों अर्थात् ईसापूर्व से भी पहले था। भारत में आज से लगभग 250 वर्ष पूर्व तक केवल सिक्के ही प्रचलन में थे। ये सिक्के सोने, चाँदी, ताँबा आदि धातुओं से बनाए जाते थे और ये उच्च, मध्यम एवं निम्न सभी मूल्यवगों में होते थे। आज विश्व भर में कागजी मुद्रा का प्रचलन हो गया है। कागजी मुद्रा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है।

SCERT DELHI

बाद के वर्षों में मुद्रास्फीति के साथ उच्च मूल्यवर्ग की मुद्राओं की आवश्यकता हुई और इस प्रकार इसका आविष्कार किया गया। एक समय था जब भारत के पास दस हजार रुपये (10,000 रुपये) के अपने स्वयं के कागजी मुद्रा नोट भी थे। बाद में ₹1, ₹ की कागजी मुद्रा के साथ-साथ ₹1, ₹2, ₹5 और ₹10 के सिक्के भी सबसे अधिक प्रचलित मुद्रा थे। ₹2, ₹5, ₹10, ₹20, ₹50, ₹100, ₹500 और ₹1,000.

साल 2016 में नोटबंदी की घोषणा के साथ ₹500 और ₹1,000 की करेंसी नोट पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था. फिर उस समय के नए करेंसी नोट ₹100, ₹200, ₹500 के साथ-साथ ₹2,000 का भी निर्गमन हुआ था। हाल ही में 30 सितंबर, 2023 को ₹2,000 के करेंसी नोट को चलन से बंद कर दिया गया ।

अपनी **'स्वच्छ नोट नीति'** के हिस्से के रूप में, भारतीय रिजर्व बैंक ने लेनदेन में उनके सीमित उपयोग के कारण 19 मई, 2023 को ₹2,000 के बैंक नोटों को प्रचलन से वापस लेने की घोषणा की थी।

गतिविधि: भारत को छोड़कर अन्य देशों की पाँच मुद्राओं के नाम लिखिए तथा उनके प्रतीक बनाइए।

10 हजार का नोट	
भारतीय करेंसी	
क्या आपने कभी इन सिक्कों को देखा है? यदि नहीं तो अपने घर के सदस्यो / मित्रों से इनकी जानकारी जरूर लें।	

धन का महत्व

धन का महत्व अर्थव्यवस्था में कुशल लेन-देन प्रदान करने की इसकी क्षमता से आता है। यह विनिमय का एक साधन है। मुद्रा अर्थव्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक है क्योंकि यह लेन-देन की अनुमति देता है। धन का एक मानक मूल्य है जिसका उपयोग हम किसी भी वस्तु या सेवा को खरीदने के लिए कर सकते हैं जिसकी हमें इच्छा या आवश्यकता है।

इसके अतिरिक्त मुद्रा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को संभव बनाती है। विभिन्न देशों के बीच वस्तुओं और अन्य सेवाओं का आदान-प्रदान मुद्रा द्वारा ही संभव होता है, जो विनिमय का एक साधन है।

सीखने का सुदृढ़ीकरण (LEARNING REINFORCEMENT)

वाद-विवाद 	1. धन की उपयोगिता मानव जीवन के लिए आवशक है। 2. वस्तु विनिमय और मुद्रा एक माध्यम 3. मुद्रा के आधुनिक रूप
क्या आप जानते है 	1. प्रत्येक देश अपने राष्ट्रीय नायकों या संस्कृति, या राष्ट्रीय स्मारकों को अपनी कागजी मुद्रा पर चित्रित करता है। हम भारत में अपने राष्ट्रपिता श्री महात्मा गाँधी की चित्र छापते हैं। सभी करेंसी नोटों के सामने की तरफ महात्मा गांधी और हमारे करेंसी नोट के पीछे सूर्य मंदिर (₹10 का नोट), एलोरा गुफाएं (₹20 का नोट), हम्पी (₹50 का नोट), रानी की वाव (₹50 का नोट), सांची स्तूप (₹200 का नोट) और लाल किला (₹500 का नोट की छवि होती है। 2. भारतीय रिजर्व बैंक के पास कागजी मुद्रा छापने और जारी करने का अधिकार है और उन्हें देश के मौद्रिक प्राधिकरण के रूप में जाना जाता है।
खोजें और जांच करें 	1. किसी भी देश में मुद्रा का मुख्य स्रोत क्या है ? 2. भारत में हर चीज़ के लिए पैसा ही एकमात्र मापदंड क्यों है? 3. पैसे से पैसा कैसे बनाया जा सकता है? 4. हम पैसे को किस प्रकार भविष्य के लिए जोड़ सकते हैं? 5. कागज़ के नोट यदि फट जायें, तो हमें क्या करना चाहिए? 6. कागज़ के नोट पर क्यों नहीं लिखना चाहिए?

SCERT DELHI

सारांश

प्राचीन समय में किसी मौद्रिक प्रणाली की अनुपस्थिति में नमक, पशुओं की खाल, फूटी कौड़ी, अमेरिका का वामपम, मिस्र की बहुमूल्य धातु इत्यादि का प्रयोग विनिमय के माध्यम के रूप में किया गया। 600 B.C. में सिक्को का प्रचलन लेन-देन के लिए किया जाने लगा। शुरुआती सिक्के औज़ार और खोल के आकार में कांसे के बने होते थे। सिक्कों के भार के कारण होने वाली कठिनाई ने पेपर से बनी मुद्रा यानि पेपर धन के प्रयोग का रास्ता बनाया। पेपर धन की खोज 10 वीं शताब्दी में चीन में की गई जबकि यूरोप ने पहली पेपर मिल 1151 A.D में स्थापित की और पेपर धन का प्रयोग काफ़ी बाद में अपनाया। यूरोप में 1661 में स्वीडिश स्टॉकहोम बैंक द्वारा मुद्रित धन जारी किया गया। भारत में 6 वीं शताब्दी B.C में सिक्कों का प्रयोग किया गया तथा 1236 A.D में पेपर धन का प्रयोग शुरू किया गया। व्यवसाय में वृद्धि ने पेपर धन से अमूर्त धन का रास्ता बनाया।

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. किसी वस्तु के बदले वस्तु के आदान प्रदान को _____ कहा जाता है।
2. 500, 1000, रूपये की नोटबंदी किस वर्ष में हुई?
3 कागज़ी करेंसी से पहले किस प्रकार की करेंसी प्रचलन में थी?
4. भारत में मुद्रा को छापने का अधिकार किसके पास है?
5. इस समय भारत में प्रचलन में सबसे अधिक मूल्य की करेंसी कौन से है?
6. धन के तीन उपयोग लिखकर उनकी व्याख्या अपने शब्दों में करें।
7. बैंक में जमा धनराशि_____ कहलाती है?
8. **"धन वह ईंधन हैं जो हमारे घरो और हमारी अर्थव्यवस्था को चलाता हैं।"** उदाहरण सहित दिए गए कथन की पुष्टि करें।
9. जब कोई मौद्रिक प्रणाली उपलब्ध नहीं थी, तब मनुष्य अपनी वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे करता था। उदाहरण सहित समझाइए।

❖❖❖

इकाई - 2
धन-विनिमय प्रणालियाँ

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के उपरांत विद्यार्थी :

- धन-विनिमय के माध्यम के रूप में धन को परिभाषित कर पाएंगे।
- वस्तु-विनिमय की अवधारणा को स्पष्ट कर पाएंगे।
- घन के रूप में मुद्रा का प्रयोग को बता पाएंगे।
- विभिन्न देशों की मुद्रा को पहचान पाएंगे।

परिचय

आरम्भ में व्यापार एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेकर (वस्तु-विनिमय) किया जाता था। बाद में वस्तुओं के बदले धातुएँ, सोने एवं चांदी के सिक्के अथवा पेपर धन के द्वारा किया जाने लगा। आजकल अधिकांश क्रय-विक्रय मुद्रा द्वारा किया जाता है। मुद्रा के आविष्कार के बाद प्लास्टिक मुद्रा, पेपर धन, अमूर्त धन आदि से व्यापार में बहुत सरलता और सुविधा आ गयी।

व्यापार-दो व्यक्तियों या समूहों द्वारा अपनी संबंधित भौतिक वस्तुओं और सेवाओं की अदला-बदली के माध्यम से इच्छाओं की पूर्ति करना है।

विनिमय का माध्यम

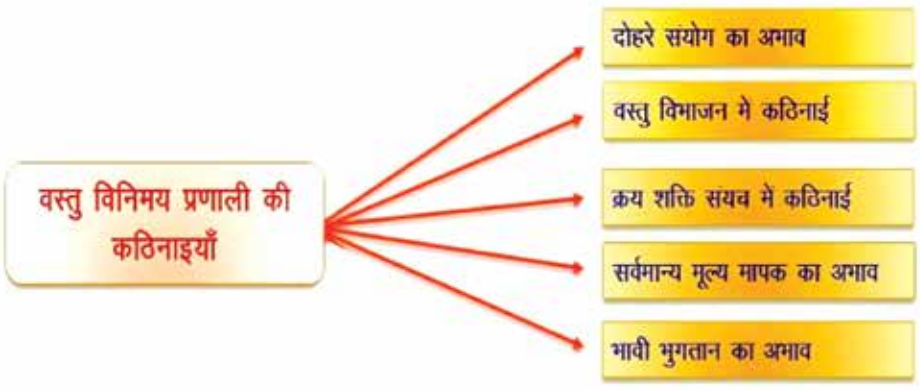

मुख्य शब्दावली

वस्तु-विनिमय प्रणाली : वस्तु विनिमय एक ऐसी प्रणाली है जिसमें धन के प्रयोग के बिना वस्तुओं का आदान-प्रदान किया जाता है।

आर्थिक प्रगति चक्र : आर्थिक प्रगति का चक्र खोज, सृजनात्मकता, कठोर कार्य और अभिनव परिवर्तन से है। विशेषज्ञता और व्यापार के माध्यम से अधिक उत्पादन होता है, बेहतर वस्तुएं और सेवाएं उत्पादित की जाती हैं और समाज में जीवन निर्वाह का स्तर बढ़ता है ।

श्रम विभाजन: किसी कार्य प्रक्रिया को कई कार्यों में विभाजित करना , जिसमें प्रत्येक कार्य एक अलग व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह द्वारा किया जाता है।

विशेषज्ञता : विशेषज्ञता का मतलब है कि बड़े कामों को छोटे-छोटे कामों में तोड़कर अलग-अलग कर्मचारियों को सौंप दिया जाता है। प्रत्येक कर्मचारी के पास अपने सौंपे गए काम को उम्मीद के मुताबिक करने का कौशल और ज्ञान होता है।

वस्तु विनिमय

वस्तु विनिमय से तात्पर्य लेन-देन के लिए धन के स्थान पर एक वस्तु का दूसरी वस्तु से क्रय-विक्रय करना है। उदाहरण के लिए रमा अनाज के बदले श्याम से फल खरीदती है। वस्तु विनिमय की पद्ति उस समय प्रचलित थी जब मुद्रा चलन में नहीं थी। इसके द्वारा लोग अपनी अपनी ज़रूरतों को पूरा कर पाते थे।

2. आर्थिक प्रगति चक्र

आर्थिक प्रगति चक्र : आर्थिक प्रगति का चक्र खोज, सृजनात्मकता, कठोर कार्य और अभिनव परिवर्तन में बदलता है। विशेषज्ञता और व्यापार के माध्यम से अधिक उत्पादन होता है, बेहतर वस्तुएं और सेवाएं उत्पादित की जाती हैं और सोसायटी का जीवन निर्वाह का स्तर बढ़ता है ।

- आविष्कार का मतलब है कुछ नया बनाना
- रचनात्मकता का मतलब है अलग तरीके से सोचना
- कड़ी मेहनत का मतलब है कुछ नया करने के लिए प्रयास करना!
- नवाचार/अभिनव परिवर्तन का मतलब है कुछ बेहतर बनाना

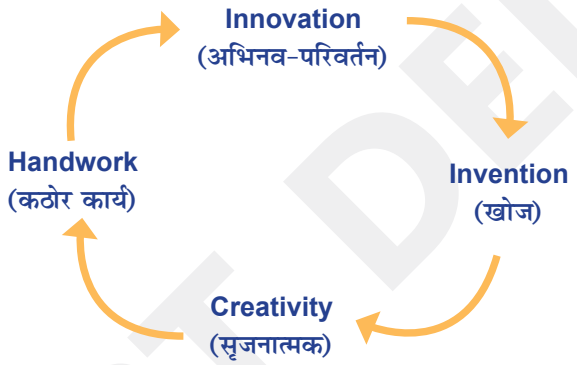

Wheel of Economic Progress

आये इसे एक उदहारण से समझे :थॉमस एडिसन ने पहली बार बल्ब का अविष्कार किया एडिसन ने कुछ बिल्कुल नया बनाया, जो पहले कभी किसी ने नहीं देखा था। उन्होंने अनगिनत प्रयोग किए, विभिन्न सामग्रियों का परीक्षण किया और कई असफलताओं पर काबू पाया। उनकी इस कड़ी मेहनत से बल्ब का आविष्कार हुआ ।उन्होंने बल्ब के फिलामेंट के लिए सही सामग्री ढूंढी (उन्होंने 6,000 से अधिक सामग्रियों का प्रयास किया!) और अपनी रचनात्मक समस्या-समाधान कौशल का प्रदर्शन किया।आगे चलकर CFLs, LEDs, स्मार्ट बल्ब (Smart Bulb) और LED bulbs की शुरुआत हुई। इन नवाचारों ने ऊर्जा खपत, पर्यावरणीय प्रभाव और रखरखाव की आवश्यकताओं को काफी हद तक कम कर दिया है।

3. श्रम-विभाजन (DIVISION OF LABOUR)

किसी कार्य प्रक्रिया को कई कार्यों में विभाजित करना, जिसमें प्रत्येक कार्य एक अलग व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह द्वारा किया जाता है। सरल शब्दों में कहें तो श्रम विभाजन का मतलब है काम का

सरलीकरण। कार्यों का विभाजन व्यक्तिगत कार्यभार को कम करने का एक तरीका है। श्रम विभाजन का प्राथमिक कारण विशेषज्ञता है ।

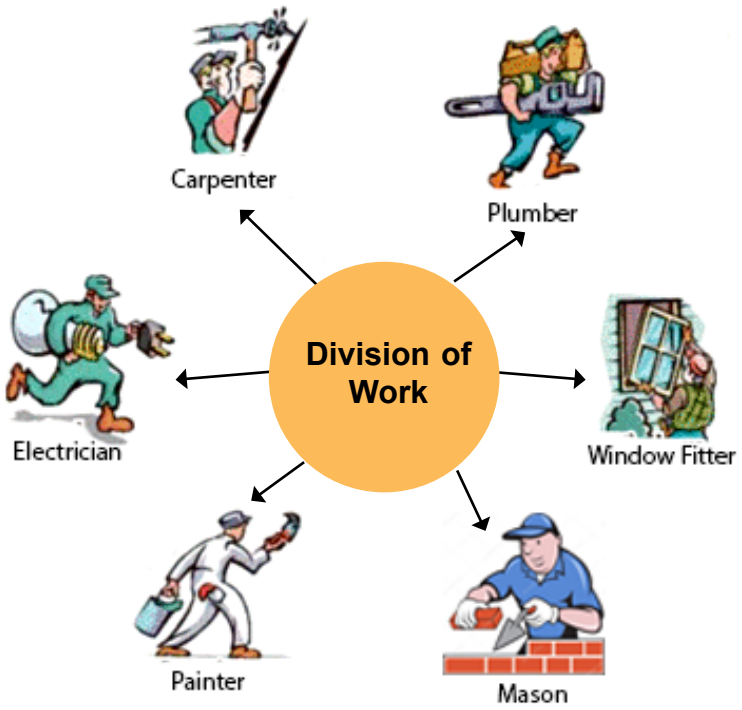

चित्र: श्रम विभाजन

निर्माण उद्योग श्रम विभाजन का एक उदाहरण प्रस्तुत करता है। जब कोई घर बनाया जाता है, तो निर्माण प्रक्रिया से जुड़े विशेषज्ञ कर्मचारी होते हैं। ईंट बनाने वाले कर्मचारी, वास्तविक निर्माण करने वाले कर्मचारी, प्लास्टर करने वाले कर्मचारी और प्लंबिंग करने वाले कर्मचारी आदि कुछ उदाहरण हैं। इन सभी कर्मचारियों के अलग-अलग प्रयास एक पूरी इमारत बनाने में सहायक होते हैं।

4. सिक्के और पेपर (COINS & PAPER)

पूर्व की सभ्यताओं में वस्तु तथा सेवाओं की खरीद बिक्री के लिए प्रत्येक देश में अलग-अलग सिक्के तथा पेपर मनी का प्रचलन था। जैसे प्राचीन मिस्र में बहुमूल्य धातु सोना, चाँदी, तांबा और ऐलुमिनियम का प्रयोग सिक्के के रूप में किया जाता था। ग्रीस में सिक्के पर डिजाइन स्टाम्पिंग के प्रोसेंस से ढाला जाता था/बनाया जाता था। पेपर मनी की शुरुआत 10 वीं शताब्दी में चीन में हुई थी।

5. आधुनिक मुद्राएँ (MODERN CURRENCY)

वर्तमान में सिक्के और पेपर धन का उपयोग एक माध्यम के रूप में किया जाता है। हमारे देश में जिस मुद्रा का प्रचलन है , उसे रुपया (₹) कहा जाता है। जिससे किसी वस्तु तथा सेवाओं के क्रय विक्रय में उपयोग किया जाता है।

क्रियाकलाप :
निम्न तालिका में विभिन्न देशों की मुद्रा का नाम और चिह्न बनाएं।

देश	मुद्रा का नाम	चिन्ह
अर्जेंटीना	अर्जेंटीनी पीसो	$
आस्ट्रेलिया		
ब्राजील		
कनाडा		
चीन		
पाकिस्तान		

फ़्रांस		
जर्मनी		
भारत		
यूनाइटेड किंगडम		
संयुक्त राज्य अमेरिका		

सीखने का सुदृढ़ीकरण (LEARNING REINFORCEMENTS)

वाद-विवाद	1. वस्तु विनिमय दो या दो से अधिक के बीच हो सकता है। 2. वस्तु विनिमय वर्त्तमान में प्रचलन में है।
क्या आप जानते है	1. असम में वार्षिक वस्तु विनिमय व्यापार होता है। इस मेले को जून बील मेला के नाम से जाना जाता है। इस 3 दिवसीय वार्षिक मेले में असम, अरुणाचल प्रदेश और मेघालय के लोग भाग लेते हैं, जहाँ वस्तु विनिमय प्रणाली के माध्यम से वस्तुओं का आदान-प्रदान किया जाता है।
खोजे और जांच करें	1. क्या वस्तु विनमय प्रणाली आज के वर्तमान समय के लिए उपयुक्त माध्यम है?

सारांश (SUMMARY)

इस इकाई में हमने वस्तु-विनिमय प्रणाली में दोहरे संयोग को समझा एवं आर्थिक प्रगति चक्र के बारे में समझा। श्रम विभाजन और आर्थिक प्रगति का चक्र मूलभूत अवधारणाएँ हैं जिन्होंने मानव प्रगति और आर्थिक विकास को प्रेरित किया है।

विशेषज्ञता और व्यापार ने उत्पादकता और दक्षता में वृद्धि की है।श्रम विभाजन ने नए उद्योगों, नौकरियों और अवसरों के सृजन को भी बढ़ावा दिया है।

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

I. सही उत्तर का चयन कीजिए-

1. व्यक्ति में विशेषज्ञता का अर्थ _____ से है?

   (क) अधिक कुशलता (ख) कठोर काम करने वाले

   (ग) अधिक चालकी (घ) अधिक बुद्धिमानी

2. वस्तु - विनिमय प्रणाली _____कहलाता है-

   (क) वस्तु से वस्तु का लेन-देन (ख) धन से धन का लेन-देन

   (ग) वस्तु से धन का लेन-देन (घ) इनमें से कोई

3. आधुनिक करेंसी के रूप में _____प्रयोग किया जाता है-

   (क) सिक्के (ख) सांकेतिक मनी का

   (ग) रुपये (घ) ये सभी

II. रिक्त स्थान भरें-

1. पेपर मनी की शुरुआत _____ देश में हुई थी।
2. भारतीय मुद्रा का नाम _____ है।
3. श्रम का विभाजन _____ से हैं।
4. पौंड (मुद्रा) का प्रयोग _____ देश में किया जाता है।

SCERT DELHI

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. व्यापार से आप क्या समझते है?
2. वस्तु विनिमय से आप क्या समझते है?

❖❖❖

SCERT DELHI

इकाई - 3
मुद्रा की महत्वपूर्ण विशेषताएँ

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के उपरांत विद्यार्थी:

- मुद्रा के कार्यों को सूचीबद्ध कर पाएंगे।
- मुद्रा के कार्यों और विशेषताओं की व्याख्या कर पाएंगे।
- मुद्रा के कार्यों और विशेषताओं को स्वरचित उदाहरण द्वारा स्पष्ट कर पाएंगे।

परिचय

मनुष्य की इच्छाएं असीमित हैं लेकिन उसके पास मुद्रा सीमित हैं। ऐसी स्थिति में वह कैसे अपनी इच्छाओं को पूरा करेगा? इन इच्छाओं की पूर्ति के लिए उसे परस्पर एक दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। उदाहरण के लिए एक किसान किसी पेंटर से अपने घर की पुताई करवाना चाहता है लेकिन मुद्रा के अभाव में यह कार्य कैसे संभव है? इस समस्या का समाधान वस्तु विनिमय प्रणाली द्वारा किया गया जो लेन-देन का सबसे पुराना रूप है।

किसान पुताई के बदले में पेंटर को गेहूं, चावल या कोई और खेती की फसल दे सकता है परंतु सोचिए, पेंटर को इन चीजों की आवश्यकता न हो तो?

यही है वस्तु विनिमय में दोहरे संयोग की जटिलता! इस जटिलता को दूर करने के लिए मुद्रा का आविष्कार हुआ जिससे मुद्रा के बदले में अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा किया जा सके। आइए देखते हैं मुद्रा के कार्य और उसकी विशेषताएं।

मुख्य शब्दावली

- विनिमय का माध्यम
- मूल्य का मानक या खाते की इकाई (लेखा का यूनिट)
- मूल्य का भंडार

- मुद्रा की कुछ सामान्य विशेषताएं: टिकाऊपन, अपेक्षाकृत दुर्लभ, पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता, परिवहन में आसानी, विभाज्यता

मुद्रा के कार्य

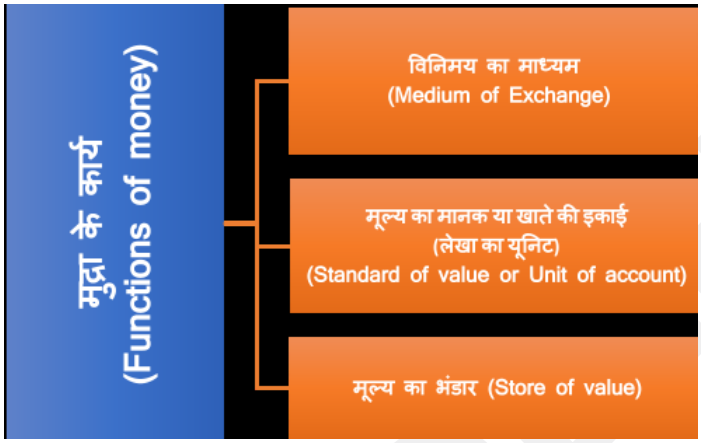

1. विनिमय का माध्यम (MEDIUM OF EXCHANGE)

मुद्रा विनिमय के माध्यम के रूप में काम करती है क्योंकि इसे लोगों द्वारा वस्तुओं और सेवाओं के भुगतान के लिए सहर्ष स्वीकार किया जाता है। विनिमय का माध्यम एक मध्यस्थ साधन या प्रणाली है जो खरीदारों और विक्रेताओं के बीच वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है।

विनिमय के माध्यम के उदाहरण :

1. नकद (सिक्के और बैंक नोट)
2. डिजिटल मनी (मोबाइल भुगतान, क्रेडिट कार्ड)
3. वस्तु विनिमय प्रणाली (नकदी का उपयोग किए बिना वस्तुओं या सेवाओं का आदान-प्रदान)
4. वस्तु-आधारित मुद्राएँ (जैसे, सोना, चाँदी)

विनिमय का माध्यम व्यापार और वाणिज्य को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे वस्तुओं और सेवाओं को खरीदना और बेचना आसान हो जाता है।

SCERT DELHI

समस्यात्मक प्रश्न

अमोल एक चॉकलेट खरीदना चाहता है और चॉकलेट के बदले चावल में भुगतान करना चाहता है, लेकिन वह ऐसा विक्रेता ढूंढने में असमर्थ है जो चॉकलेट के बदले चावल स्वीकार करें।

ज़रा सोचिए! अमोल ऐसी परिस्थिति में क्या करें?

संकेत

ऐसा विक्रेता अक्सर ढूंढना मुश्किल होता है जो खरीददार की आवश्यकता के अनुसार वस्तुएं बेचे और भुगतान भी उसी की इच्छा अनुसार ले। इसी असुविधा को दूर करने के लिए मुद्रा का प्रयोग होना शुरू हुआ। मुद्रा विनिमय के माध्यम का कार्य करता है। ऊपर दिए गए उदाहरण में अमोल मुद्रा का प्रयोग करके किसी खरीददार को चावल बेच सकता है तथा उससे प्राप्त धन से चॉकलेट खरीद सकता है।

2. मूल्य का मानक या खाते की इकाई (लेखा का यूनिट) (STANDARD OF VALUE OR UNIT OF ACCOUNT)

मुद्रा, मूल्य का मानक या खाते की इकाई के रूप में कार्य करता है इसका अर्थ है कि मुद्रा ऐसा सामान्य मद (common Unit) है जिसमें वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य तय किया जाता है।

*मुद्रा एक सामान्य इकाई है जिसमें वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें निर्धारित की जाती हैं

प्रश्न

उदाहरण के लिए, यदि एक शर्ट की कीमत 200 रुपये है, तो मूल्य का मानक (200 रुपये) उसके मूल्य को मानकीकृत तरीके से व्यक्त करती है, जिससे मूल्यों की तुलना करना और लेनदेन करना आसान हो जाता है।

3. मूल्य का भंडार (STORE OF VALUE)

मुद्रा का तीसरा कार्य है-मूल्य का भंडार। मूल्य के भंडार का अर्थ है कि जिस वस्तु को मुद्रा के रूप में प्रयोग करते हैं वह समय के साथ अपना मूल्य बनाए रखें ताकि भविष्य के लिए इसका भंडार (बचत) किया जा सके। मुद्रा के इस विशेषता से हमें आज अपनी सारी आय को खर्च करने की जरूरत नहीं है। हम इसे अपनी आवश्यकता के अनुसार खर्च करके बाकी भविष्य के लिए बचा सकते हैं।

Source: https://pixabay.com/photos/money-back-up-save-money-save-up-4518407/

प्रश्न

अमोल को अपनी आय में 10 संतरे मिलते है। उसने आज 2 संतरों का प्रयोग किया और बाकी संतरों को अलमारी में रख दिया। एक हफ्ते बाद उसने देखा कि सारे संतरे सड़ गए है।

सोचिये, कि संतरों को मुद्रा के रूप में प्रयोग करने पर वे मुद्रा की कौन-सी भूमिका को निभाने में असमर्थ है?

कक्षा में चर्चा करें

संतरे समय के साथ सड़ जाते हैं। ऐसा होने पर वह अपना भंडार मूल्य और अपनी स्वीकार्यता को खो देते हैं। इस प्रकार संतरे मुद्रा की भूमिका-मूल्य का भंडार निभाने में असमर्थ है।

मुद्रा की कुछ सामान्य विशेषताएँ

1. टिकाऊपन

विनिमय के माध्यम में कार्य करने के लिए मुद्रा को टिकाऊ या लंबे समय तक बने रहना चाहिए।

2. अपेक्षाकृत दुर्लभ

मुद्रा के रूप में उपयोग किए जाने वाली वस्तु या मद लोगों द्वारा आसानी से प्रचुर मात्रा में ना बनाई जा सके और वह अपेक्षाकृत दुर्लभ हो।

3. पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता

मुद्रा अपेक्षाकृत दुर्लभ हो पर अर्थव्यवस्था में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो ताकि विनिमय को संभव बनाया जा सके। यह कथन आर्थिक दृष्टिकोण से है, किसी भी अर्थव्यवस्था में मुद्रा का प्रवाह (Money in Circulation) पर्याप्त होना चाहिए ताकि वित्तीय लेनदेन संभव हो सके।

कक्षा में चर्चा करें:

उदाहरण के लिए हमारे देश में भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI), मुद्रा जारी करता है और केंद्रीय सरकार के परामर्श से मुद्रा के प्रवाह की मात्रा का निर्धारण करता है।

4. परिवहन में आसानी

मुद्रा को एक जगह से दूसरी जगह आसानी से ले जाया जा सके।

5. विभाज्यता

मुद्रा को प्रयोग करने योग्य मात्रा या अंश में विभाजित किया जा सके।

उदाहरण: अगर आप दुकानदार से 75 रुपए की वस्तु खरीदते है और उसे 100 रुपए का नोट देते हैं, तो वह आपको 25 रुपए वापस करेगा जो वस्तु विनिमय में संभव नहीं है।

गतिविधि: नीचे दी गई तालिका में दिए गए सांकेतिक धन व मुद्रा क्या धन के निम्न कार्यों को पूर्ण करते हैं। सही (✓)और गलत (✗) का चि लगाकर दर्शायें, और कक्षा में इस पर चर्चा करें।

धन के कार्य	वामपम	कौड़ी	गेहूं	चांदी और सोने के सिक्के	कोई भी फल (सेब)	100 रुपये
विनिमय का माध्यम						
मूल्य का मानक						
मूल्य का भंडार						

सारांश

इस अध्ययन के आधार पर स्पष्ट है कि मुद्रा अर्थव्यवस्था में लेनदेन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके द्वारा तीन कार्य किए जाते हैं- विनिमय का माध्यम, मूल्य का मानक या लेखा का यूनिट और मूल्य का भंडार। इसके अतिरिक्त इस इकाई में मुद्रा कि विशेषताओं जैसे- टिकाऊपन, अपेक्षाकृत दुर्लभ, पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता, परिवहन में आसानी और विभाज्यता को समझा।

सीखने का सुदृढ़ीकरण (LEARNING REINFORCEMENTS)

चर्चा करें

इस रेस्तरां बिल को देखिए। सभी खाद्य पदार्थों की कीमतें रुपये में हैं।

यह मुद्रा के किस कार्य को दर्शाता है? अपने उत्तर को समझाए।

(संकेत: मूल्य का मानक या लेखा का यूनिट)

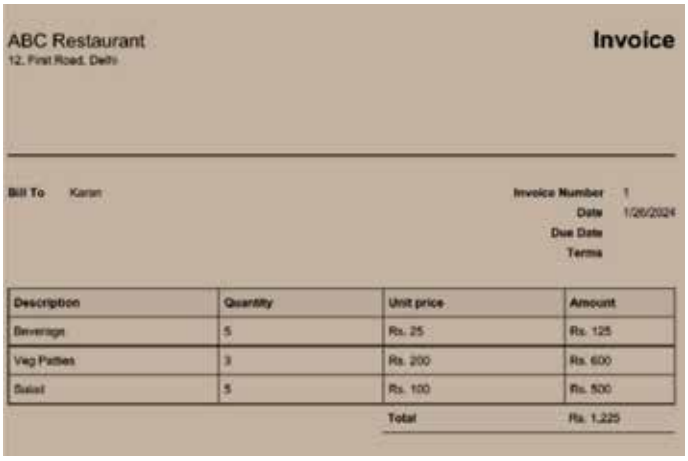
ABC Restaurant
12, First Road, Delhi

Invoice

Bill To Karan

Invoice Number 1
Date 1/26/2024
Due Date
Terms

Description	Quantity	Unit price	Amount
Beverage	5	Rs. 25	Rs. 125
Veg Patties	3	Rs. 200	Rs. 600
Salad	5	Rs. 100	Rs. 500
		Total	Rs. 1,225

Source:https://pixabay.com/photos/carrot-vegetables-market-produce-6789773/

क्या आप जानते है? 	1. भारत में अब तक सबसे अधिक मूल्य का नोट ₹10000 का नोट था जिसे 1938 में छापा गया था और जनवरी 1946 में बंद कर दिया गया था। ₹10000 के नोट को 1954 में फिर से जारी किया गया था। इन नोटों को 1978 में बंद कर दिया गया था। 2. भारत में बैंक नोटों की छपाई के लिए उपयोग किया जा रहा कागज 100% कपास से बना हुआ है।
खोजे और जांच करें 	1. क्या वस्तु विनिमय आज भी आप अपने आसपास देखते हैं? (संकेत: घर-घर घूमकर पुराने कपड़ो के बदले बर्तन देने वाले।) 2. 8 नवम्बर 2016 को भारत सरकार ने रु 500 और रु1000 नोट का विमुद्रीकरण (Demonetization) कर दिया। • क्या इन विमुद्रीकृत नोटों से आप कोई सामान खरीद सकते है? (चर्चा कीजिये) • क्या इन विमुद्रीकृत नोटों को इकठ्ठा करके के रखने से कोई लाभ होगा? (चर्चा कीजिये)

Newspaper Links

1. https://www.livehindustan.com/national/story-changing-business-of-utensils-instead-of-old-clothes-7513052.html
2. https://economictimes.indiatimes.com/news/politics-and-nation/in-an-attempt-to-curb-black-money-pm-narendra-modi-declares-rs-500-1000-notes-to-be-void-from-midnight/articleshow/55315932.cms?from=mdr

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

I. सही विकल्प चुनें

1. किसी भी वस्तु को मुद्रा के रूप में उपयोग करने का सबसे महत्वपूर्ण मापदंड है:

(क) वह आसानी से उपलब्ध होना चाहिए। (ख) वह सहर्ष स्वीकार्य होना चाहिए।

(ग) एक सिक्का होना चाहिए। (घ) वह लोगों द्वारा आसानी से बनाया जा सकता है।

SCERT DELHI

2. निम्नलिखित में से कौन सा मुद्रा की विशेषताओं में से एक है:

(क) लोगों द्वारा आसानी से प्रतिलिपि प्रस्तुत करने योग्य (ख) असीमित मूल्य

(ग) प्रयोग करने योग्य मात्राओं में विभाज्य (घ) स्वीकार्य नहीं

II. रिक्त स्थान भरें-

1. मुद्रा का लंबे समय तक बने रहना _____ कहलाता है।
2. मुद्रा का मूल्य का भंडार कार्य, भविष्य के लिए _____ को आसान बनाता है।

III. सही (✓) अथवा गलत (×) पर चिन्ह लगाएँ -

1. मुद्रा की विशेषता है कि वह लोगों द्वारा आसानी से बनाया जा सके। (सही/गलत)
2. मुद्रा विनिमय की प्रक्रिया को सरल बनाता है। (सही/गलत)

IV. कथन और कारण (ASSERTION/REASON)

निर्देश: नीचे दिए गए प्रश्नों में, दो कथनों को अभिकथन (ए) और कारण (आर) के रूप में चिह्नित किया गया है। कथनों को पढ़ें और सही विकल्प चुनें।

a) अभिकथन (ए): मुद्रा मूल्य का मानक या लेखा का यूनिट है।

कारण (आर): मुद्रा को अंशो में विभाजित किया जा सकता है।

(क) ए और आर दोनों सत्य हैं और आर, ए का सही स्पष्टीकरण है।

(ख) ए और आर दोनों सत्य हैं लेकिन आर, ए का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(ग) ए सत्य है लेकिन आर असत्य है।

(घ) ए असत्य है लेकिन आर सत्य है

SCERT DELHI

b) अभिकथन (ए): मुद्रा विनिमय के माध्यम का कार्य करता है।

कारण (आर): मुद्रा सभी के द्वारा सहर्ष स्वीकार्य है।

(क) ए और आर दोनों सत्य हैं और आर, ए का सही स्पष्टीकरण है।

(ख) ए और आर दोनों सत्य हैं लेकिन आर, ए का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(ग) ए सत्य है लेकिन आर असत्य है।

(घ) ए असत्य है लेकिन आर सत्य है

V. निम्नलिखित का उत्तर संक्षेप में दें (30-50 शब्दों में)

1. वस्तु विनिमय और मुद्रा विनिमय में अंतर लिखिए।
2. 'मुद्रा विभाज्यता को संभव बनता है।' इस कथन को उदाहरण सहित लिखिए।

❖❖❖

SCERT DELHI

इकाई - 4
वित्तीय नियोजन क्या है?

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के उपरांत, विद्यार्थी:

- वित्तीय नियोजन का अर्थ स्पष्ट कर पाएँगे
- वित्तीय नियोजन में चरणों की व्याख्या कर पाएँगे।
- आय, व्यय और बचत के बारे में जानकारी का विश्लेषण कर सकेंगे।
- योजना बनाना एवं क्रियान्वयन करना सीख सकेंगे।
- योजना की निगरानी एवं संशोधन कर सकेंगे।
- 'स्मार्ट' लक्ष्य का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे।
- वित्तीय नियोजन के लाभ की व्याख्या कर सकेंगे।

परिचय

"वित्तीय योजना वित्तीय सुरक्षा के लिए आपके दीर्घकालिक और अल्पकालिक लक्ष्यों की एक पूरी योजना है। इसमें वित्त के कई क्षेत्र शामिल हैं जैसे कर, बचत, बीमा, आदि। वित्तीय नियोजन का पूर्ण मूल्यांकन भविष्य की अपेक्षाओं और वर्तमान वित्तीय स्थिति पर निर्भर करता है।"

आपने पिछले इकाई में मुद्रा और उसके कार्य के बारे में सीखा। इस इकाई में वित्तीय योजना, व्यक्ति या परिवार के वित्तीय लक्ष्यों और आवश्यकताओं को पहचानने, विश्लेषण करने, और निर्धारित करने की प्रक्रिया के बारे में जानेंगे। इसका मुख्य उद्देश्य सुरक्षित भविष्य और वित्तीय स्थिति की सुरक्षा करना होता है। वित्तीय योजना के माध्यम से व्यक्ति अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने और समृद्धि की दिशा में काम करने के लिए योजना बना सकता है।

वित्तीय योजना के द्वारा व्यक्ति अपनी आय, व्यय, निवेश, और ऋण की विविधता को मूल्यांकन करता है ताकि वह अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सही निर्णय ले सके। वित्तीय योजना व्यक्ति को विभिन्न वित्तीय संबंध, निवेश विकल्पों और आय स्रोतों के माध्यम से उचित रूप से संचय करने और व्यय करने में मदद करती है। व्यक्ति अपने वित्तीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए स्थिर योजना बना सकता है।

मुख्य शब्दावली

वित्तीय नियोजन (FINANCIAL PLANNING)

वित्तीय नियोजन लक्ष्यों को परिभाषित करने, उन्हें प्राप्त करने के लिए एक योजना विकसित करने और योजना को क्रियान्वित करने की प्रक्रिया है। यह खर्च, बचत निवेश सहित आपके धन सम्बंधित सभी पहलुओं को संभालने की एक योजना है।

आवश्यकताएँ (NEEDS)

निम्न दी गई छवियों को देखें। ये छवियाँ क्या सन्देश देती है?

आवश्यकताएं वह सब कुछ है जो मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक है जैसे- भोजन, कपड़ा और रहने के लिए स्थान आदि।

इच्छाएँ (WANTS)

निम्न दी गई छवियों को देखें। ये आपको क्या सन्देश देती है?

इच्छाएँ अनंत हैं, अर्थात् एक इच्छा के पूरा होते ही नई इच्छा जागृत हो जाती है- जैसे नई कार, नया घर, नया लैपटॉप, खिलौने, नये वस्त्र इत्यादि।

मूल्य (VALUES)

हम अपने मूल्यों के आधार पर अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं को भिन्न रुप से परिभाषित करते हैं जैसे- अनुशासन, सच बोलना एवं दयालुता आदि।

लक्ष्य (Goals)

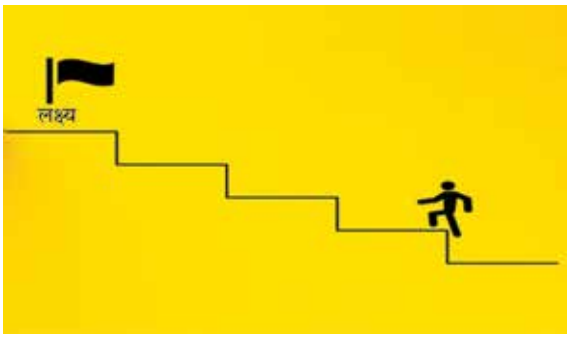

लक्ष्य वह वांछित परिणाम या उद्देश्य हैं जिन्हें कोई व्यक्ति या संगठन प्राप्त करने का प्रयास करता है। दूसरे शब्दों में, लक्ष्य एक ऐसा गंतव्य है जहां कोई व्यक्ति कुछ कदम उठा कर पहुंचना चाहता है।

वित्तीय उत्तरदायित्व (FINANCIAL RESPONSIBILITY)

वित्तीय जिम्मेदारी का मतलब है कि आपको वांछित और अनावश्यक कार्यों पर संसाधनों को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। आपको पैसे को खुद पर नियंत्रण करने देने के बजाय अपने पैसे पर नियंत्रण रखना चाहिए। **आप पैसे के नियंत्रण में न हो बल्कि पैसा आपके नियंत्रण में हो।**

स्मार्ट लक्ष्य (SMART)

स्मार्ट लक्ष्य वित्तीय सफलता के लिए एक रोडमैप प्रदान करते हैं और प्रगति की निगरानी के आधार के रूप में कार्य करते हैं। **लक्ष्य विशिष्ट**, **मापने योग्य**, **प्राप्त करने योग्य**, **प्रासंगिक** और **समयबद्ध** (स्मार्ट) होने चाहिए।

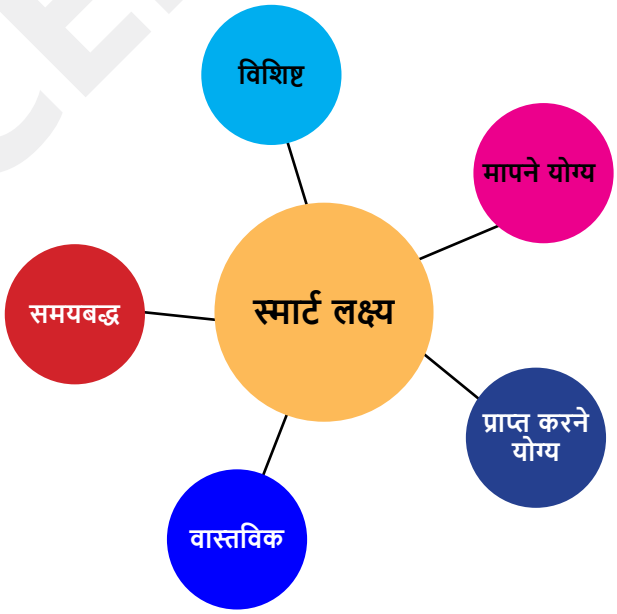

SCERT DELHI

वित्तीय नियोजन के चरण (STEPS IN THE FINANCIAL PLANNING)

वित्तीय नियोजन में निम्नलिखित चरण शामिल होते हैं:

1. लक्ष्य तय करना
2. सूचना का विश्लेषण करना
3. योजना बनाना
4. योजना को क्रियान्वित करना
5. योजना की मानीटरिंग एवं संशोधन करना

वित्तीय नियोजन के चरण

1. लक्ष्य तय करना (SETTING THE GOAL)

लक्ष्य हमारे जीवन में दिशा, प्रेरणा तथा उदेश्य की भावना प्रदान करते हैं। ये हमें आगे बढ़नें और वांछित परिणाम प्राप्त करने में हमारी मदद करते हैं परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना, किसी प्रतियोगिता में सफल होना, हमारे उद्देश्य हो सकते हैं। लक्ष्य का स्पष्ट होना अत्यंत आवश्यक हैं। लक्ष्य तय करते समय ध्यान रखना चाहिए कि वे विशेष तथा सार्थक होने चाहिए। लक्ष्य प्राप्ति के लिए धन/वित्त की आवश्यकता होती है। प्रतियोगिता की तैयारी में किस तरह कि कोचिंग चाहिए तथा कितना धन आपको जोड़ना होगा, यह योजना बनाना 'वित्तीय योजना' कहलाता है।

2. सूचनाओं का विश्लेषण करना (Analyse the information):

वित्तीय नियोजन में दूसरा कदम अपने बारे में जानकारी का आकलन करना है। आप कितना खर्च करते हैं? आप आम तौर पर अपना पैसा किस पर खर्च करते हैं? यह आपको अपने वित्तीय संसाधनों को समझने में मदद करता है ताकि आप योजना बना सकें।

3. योजना बनाना (PREPARE A PLAN)

किसी भी वित्तीय योजना को बनाने में अपने लक्ष्यों को समझना पहला कदम है। अपने संसाधनों और अपने लक्ष्यों के संबंध में जानकारी आपको यह बताती है कि आप अपने वित्त के मामले में कहां खड़े हैं। क्या आपके पास अपना लक्ष्य पूरा करने के लिए पर्याप्त धन/वित्त है? यह वित्तीय निर्णय लेने और योजना बनाने का समय है। उदाहरण के लिए, यदि आपको एक घड़ी खरीदनी है जिसकी कीमत वर्तमान में 2000 रुपये है, इस स्थिति में आप यदि हर महीने 500 रुपये की बचत कर लेते हो तो कम से कम चार महीने के उपरांत आप घड़ी खरीदने कि स्थिति में होंगे।

4. योजना का क्रियान्वयन (IMPLEMENT THE PLAN)

योजना बनाने के उपरांत उसे क्रियान्वित करने के लिए अनुशासन और इच्छा की आवश्यकता होती है। लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए केन्द्रित रहना आवश्यक है। अपने संसाधनों को वांछित और अनावश्यक कार्यों में व्यर्थ नहीं करना चाहिए। आप अपने धन/संसाधनों का उपयोग बुद्धिमानी से करें ताकि आप अपनी योजना के अनुसार अपना इच्छित लक्ष्य प्राप्त कर सकें। योजना के क्रियान्वयन में धन एवं संसाधनों का उचित एवं इष्टतम प्रयोग आवश्यक है।

5. योजना की निगरानी एवं संशोधन करना (MONITOR AND MODIFY THE PLAN)

Source: https://www.linkedin.com

सही वित्तीय योजना बनाना और उसे समय-समय पर संशोधित करना आपकी आर्थिक सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। निवेश योजना बनाने के बाद आपको विभिन्न लक्ष्यों की ओर उनकी प्रगति पर निगरानी रखनी होगी। संसाधनों में बदलाव के कारण लक्ष्य बदल सकते हैं। अप्रत्याशित खर्चे हो सकते हैं या आपकी आय में वृद्धि हो सकती है। समय के साथ आपका लक्ष्य बदल सकता है, अतः समयानुसार/आवश्यकतानुसार अपनी वित्तीय योजना में बदलाव के लिए तैयार रहें।

आवश्यकता और इच्छा में अंतर (DIFFERENCE BETWEEN NEEDS AND WANTS)

तुलना का आधार	आवश्यकता	इच्छाएँ
अर्थ (Meaning)	किसी व्यक्ति की बुनियादी आवश्यकता से है जो जीवित रहने के लिए अनिवार्य है ।	वस्तुओं और सेवाओं से है, जिन्हें एक व्यक्ति अपने आमोद-प्रमोद के लिए प्राप्त करना चाहता है।
प्रकृति (Nature)	संसाधन सीमित होते हैं।	इच्छाएँ असीमित होती हैं।
	जीवित रहने के आवश्यक होती हैं।	इच्छाएँ जीवन कि गुणवत्ता को बढाती है
उदाहरण (Examples)	भोजन, कपड़ा, आश्रय और शिक्षा इत्यादि।	नई कार, यात्रा, बड़ा घर, लैपटॉप, टीवी एवं विडिओ गेम इत्यादि।

स्मार्ट लक्ष्य (SMART GOAL)

स्मार्ट लक्ष्य जीवन के विभिन्न पहलुओं में सफलता प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण हैं, व्यक्तिगत विकास से लेकर व्यावसायिक विकास तक। स्मार्ट एक संक्षिप्त नाम है जिसका अर्थ है विशिष्ट, मापने योग्य, प्राप्त करने योग्य, वास्तविक और समयबद्ध। यह ढांचा व्यक्तियों को स्पष्ट, कार्रवाई योग्य और प्राप्त करने योग्य उद्देश्य निर्धारित करने में मदद करता है, जिससे प्रयासों पर ध्यान केंद्रित करना, प्रगति को ट्रैक (Monitor) करना और उपलब्धियों को प्राप्त करना आसान हो जाता है।

स्मार्ट लक्ष्य निर्धारित करने के लाभ (ADVANTAGES OF SMART GOALS)

- आकांक्षाओं और प्राथमिकताओं को स्पष्ट करता है।
- कार्य करने के लिए प्रेरित और केन्द्रित होने में सहायक है।
- जवाबदेही और आत्म-अनुशासन को बढ़ाता है।
- प्रगति को ट्रैक करने और सफलताओं का जश्न मनाने में मदद करता है।
- विकास की मानसिकता और निरंतर सुधार को प्रोत्साहित करता है।

1. **विशेष लक्ष्य:** जो लक्ष्य तय किए गए है वह विशेष होने चहिए। आप क्या प्राप्त करना चाहते वह विशेष होने चाहिए और उनके प्राप्त करने के लिए योजना तैयार करनी चाहिए।

विशेष लक्ष्य	सामान्य लक्ष्य
मै एक साल के अंदर लैपटॉप खरीदना चाहता हूँ।	मै कुछ खरीदना चाहता हूँ।

2. **मापने योग्य:** निर्धारित लक्ष्य मापने योग्य होना चाहिए। मापने योग्य का मतलब है कि आपको पता होना चाहिए कि निर्धारित लक्ष्य को कैसे प्राप्त करना है।

मापने योग्य	अमापने योग्य
मुझे लैपटॉप खरीदना है जिसका मूल्य 72,000 रूपये है।	मुझे लैपटॉप खरीदने के लिए कुछ धन की आवश्यकता है।

3. **प्राप्त करने योग्य:** निर्धारित लक्ष्य आप की पहुंच में होना चाहिए। अगर लक्ष्य आपकी पहुँच में नहीं हैं, तो आप आपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

प्राप्त करने योग्य	अप्राप्त करने योग्य
मेरा मासिक वेतन 30,000 रुपए है। लैपटॉप जिसकी कीमत 72,000 रुपए है, उसे खरीदने के लिए मै हर महीने 6,000 रुपए की बचत करता हूँ ताकि एक साल बाद मै इस लैपटॉप को खरीद सकूँ। 30,000 रुपए के वेतन में से 6,000 की बचत संभव है।	मेरा मासिक वेतन 15,000 रुपए है। लैपटॉप जिसकी कीमत 72,000 रुपए है, उसे खरीदने के लिए मै 18,000 रुपए की बचत करता हूँ ताकि चार महीने मै लैपटॉप खरीद सकूँ । 15,000 रुपए के वेतन में से 18,000 की बचत संभव नहीं है।

4. **वास्तविक:** निर्धारित लक्ष्य यथार्थवादी होना चाहिए। यथार्थवादी लक्ष्य/(Realistic Goals) का अर्थ है कि जो लक्ष्य निर्धारित किया गया है उसे प्राप्त करने की संभावना होनी चाहिए। यदि उस लक्ष्य को प्राप्त करना संभव नहीं है, तो सारा प्रयास व्यर्थ हो जाएगा।

वास्तविक लक्ष्य	अवास्तविक लक्ष्य
मैं दो साल की अवधि के बाद प्रति माह 3000 रुपये बचाकर 72,000 रुपये का लैपटॉप खरीदूंगा।	मैं अपने दोस्त से कर्ज लूंगा फिर अगले दो साल में लैपटॉप खरीदूंगा।

5. **समयबद्ध:** आपके द्वारा निर्धारित लक्ष्य समयबद्ध होने चाहिए। इसका मतलब है कि निर्धारित लक्ष्य को विशेष समय अवधि में हासिल कर लेने चाहिए।

समयबद्ध लक्ष्य	लक्ष्य समयबद्धता पर आधारित नहीं
मैं अगले दो साल में कार खरीदना चाहता हूं।	मैं कुछ समय बाद कार खरीदना चाहता हूं।

स्मार्ट लक्ष्य समयरेखा: स्मार्ट लक्ष्य का अर्थ है कि वे प्राप्य और यथार्थवादी हैं। नियोजन उद्देश्यों के लिए इन लक्ष्यों को समय अवधि में विभाजित करना उपयोगी होता है।

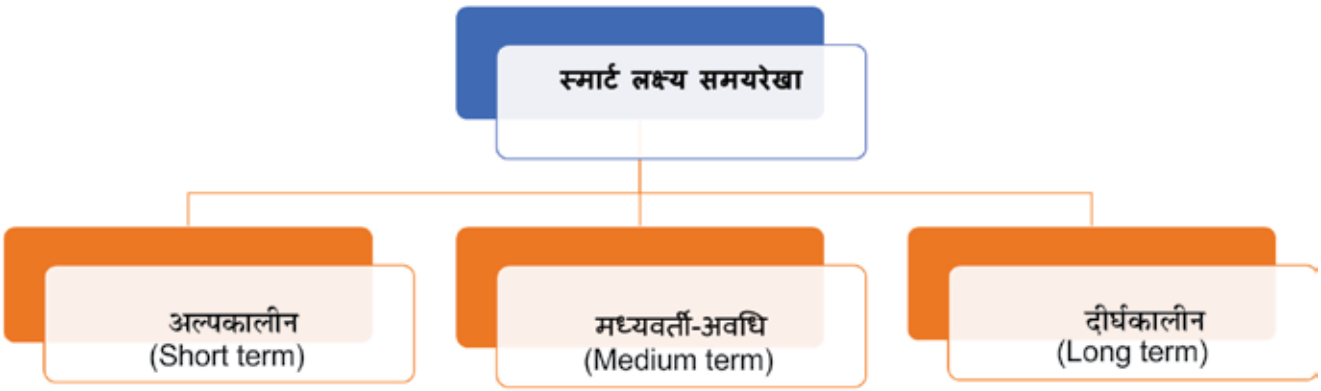

1. **अल्पाकालीन :** यदि लक्ष्यों की समय सीमा तीन महीने तक होती है, इसे अल्पावधि कहा जाता है। निर्धारित लक्ष्यों को एक दिन या सप्ताह या तीन महीने के भीतर हासिल करना है। उदाहरण के तौर पर मुझे अगले महीने अपने दोस्त के जन्मदिन पर एक उपहार खरीदने के लिए 500 रुपये बचाने होंगे।
2. **मध्यवर्ती-अवधि:** मध्यवर्ती लक्ष्यों की समय सीमा कुछ महीनों से एक वर्ष तक होती है। उदाहरण के लिए, मैंने अगले छह महीने में 3000 रुपये की घड़ी खरीदने की योजना बनाई। इसलिए मैं छह महीने के लिए 500 रुपये बचाऊंगा।
3. **दीर्घकालीन:** दीर्घकालिक लक्ष्य एक वर्ष से अधिक के होते हैं। यह एक वर्ष के बाद लक्ष्य प्राप्त करने की योजना है। उदाहरण के लिए लैपटॉप खरीदने के लिए अगले चार साल के लिए 10,000 रुपये बचाने के लिए।

वित्तीय नियोजन के लाभ (BENEFITS OF FINANCIAL PLANNING)

Source: https://www.istockphoto.com/

"पानी की छोटी-छोटी बूंदें विशाल महासागर बनाती हैं।" इसका मतलब यह है कि जैसे पानी की छोटी-छोटी बूंदें एक अथाह महासागर बनाती हैं, वैसे ही आज के छोटे निवेश भविष्य में एक महत्वपूर्ण धनराशि बन जाती है। वित्तीय नियोजन हम सभी के लिए उपयोगी है। यह आपको अपनी आय, व्यय और निवेश को इस तरह से प्रबंधित करने में मदद करता है कि आप अपने वित्त का प्रबंधन कर सकें और अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। अपने लक्ष्यों और इच्छाओं को प्राप्त करने के लिए आपके पास पर्याप्त धन होना चाहिए। उच्च वेतन पाने वाले कर्मचारियों के ऐसे कई उदाहरण हैं जो केवल इसलिए वित्तीय संकट में पड़ गए क्योंकि उन्होंने अपने करियर के बाद के वर्षों के लिए योजना नहीं बनाई थी।

सारांश (SUMMARY)

वित्तीय योजना, व्यक्ति या परिवार के वित्तीय लक्ष्यों और आवश्यकताओं को पहचानने, विश्लेषण करने, और निर्धारित करने की प्रक्रिया है। आवश्यकताएँ जीवन की मूल बातें हैं जैसे भोजन, कपड़ा, घर और शिक्षा। मानक स्तर में वृद्धि के कारण जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि करना चाहता है। लक्ष्य वह मंजिल है जिसे जीवन में हासिल करना है। वित्तीय नियोजन में लक्ष्य निर्धारित करना पहला कदम है। व्यक्ति को लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखना चाहिए और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए चुनौतियों का सामना करना चाहिए। जीवन गतिशील है, इसलिए यदि आवश्यक हो तो योजनाओं में बदलाव करने के लिए परिवर्तन करते समय यथार्थवादी बनें। वित्तीय योजना हर किसी के लिए बहुत उपयोगी होती है।

सीखने का सुदृढ़ीकरण (LEARNING REINFORCEMENTS)

वाद-विवाद 	1. इच्छाओ के पूर्ण होने से जीवन की गुणवत्ता बढ़ती है। 2. वित्तीय प्रबंधन एवं योजना एक वरदान (वाद-विवाद/समूह चर्चा)
 क्या आप जानते है?	**वित्तीय नियोजन के अनेक फ़ायदे हैं:** 1. बचत में वृद्धि 2. अच्छा रहन-सहन का स्तर 3. आपात स्थिति के लिए तैयारी 4. मन की शक्ति 5. सेवा निवृति की योजना 6. बच्चो की शिक्षा 7. टैक्स में बचत
खोजे और जांच करें 	1. छात्र अपनी रुचि के अनुसार,अपने अल्पकालिक, मध्यवर्ती और दीर्घकालीन वित्तीय लक्ष्य तैयार करें। 2. स्थापित लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए वे जो कदम उठा सकते हैं, उन पर एक नोट तैयार करें।

SCERT DELHI

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

1 यह कार या स्कूटर के लिए पेट्रोल की तरह है। इसके बिना कोई परिवार बहुत दूर नहीं जा सकता, जैसे पेट्रोल के बिना कार बहुत दूर नहीं जा सकती? यह क्या है?

(क) पैसा (ख) योजना

(ग) व्यय (घ) कार

2 लोग अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए _____ का उपयोग करते हैं।

(क) योजना (ख) कमोडिटी

(ग) सिक्का (घ) चाल

3 आपके किसी भी व्यक्तिगत खर्च के लिए आवश्यक सामान्य कारक _____ है।

(क) माता-पिता (ख) दोस्त

(ग) पैसा (घ) परिवार

4 वित्तीय नियोजन _____ है/हैं।

(क) एक स्थिर प्रक्रिया (ख) एक चालू प्रक्रिया

(ग) एक सतत प्रक्रिया (घ) दोनों (बी) और (सी)

5 यह खर्च, बचत और निवेश सहित आपके पैसे के सभी पहलूओं को संभालने के लिए _____ है।

(क) योजना (ख) आय

(ग) ब्लूप्रिंट (घ) दोनों (क) और (ग)

6 वित्तीय योजना जरूरतों और ____ के बीच अंतर करती है।

(क) इच्छा (ख) चाहत

(ग) दोनों (क) और (ख) (घ) पैसा

SCERT DELHI

7 **दावा (ASSERTION) : वित्तीय नियोजन लक्ष्यों को परिभाषित करने, उन्हें प्राप्त करने के लिए एक योजना विकसित करने, योजनाओं को क्रियान्वित करने की प्रक्रिया है।**

कारण: (REASON) यह खर्च, बचत और निवेश सहित आपके पैसे के सभी पहलुओं को संभालने की एक योजना है।

(क) ए और आर दोनों सत्य हैं और आर, ए का सही स्पष्टीकरण है।

(ख) ए और आर दोनों सत्य हैं लेकिन आर, ए का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(ग) ए सत्य है लेकिन आर गलत है।

(घ) ए गलत है लेकिन आर सच है।

8 **कथन 1: वित्तीय नियोजन एक सतत, प्रक्रिया है।**

कथन 2: वित्तीय नियोजन समय के साथ नहीं बदलना चाहिए क्योंकि आपके जीवन की परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं।

(क) दोनों कथन सत्य हैं।

(ख) दोनों कथन गलत हैं।

(ग) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सत्य है।

(घ) कथन 1 सत्य है, लेकिन कथन 2 गलत है।

9 निम्नलिखित में से कौन जीवन का आवश्यक या बुनियादी है?

(क) ज़रूरतें (ख) चाहत

(ग) सोना (घ) लैपटॉप

10 निम्नलिखित को छोड़कर चाहत के उदाहरण हैं:

(क) सिनेमा देखने जाना (ख) बाहर खाना खाना

(ग) छुट्टी पर जाना (घ) कपड़े

11 **दावा:** आवश्यकताएं और संसाधन सीमित हैं लेकिन मानव इच्छाएं असीमित हैं।

कारण: सीमित मात्रा में धन वाले लोगों के लिए इच्छाएँ सर्वोपरि प्राथमिकता हैं।

SCERT DELHI

(क) ए और आर दोनों सत्य हैं और आर, ए का सही स्पष्टीकरण है।

(ख) ए और आर दोनों सत्य हैं लेकिन आर, ए का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(ग) ए सत्य है लेकिन आर गलत है।

(घ) ए गलत है लेकिन आर सच है।

12 यह जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है। यह क्या है?

(क) आवश्यकताएं (ख) चाहत

(ग) मूल्य (घ) कीमत

13 वास्तव में प्रभावी होने के लिए, लक्ष्य हमेशा लिखित रूप में होने चाहिए और आपके लिए सार्थक होने चाहिए। आपके मित्र का लक्ष्य वास्तव में बहुत अच्छा हो सकता है, लेकिन वे आपके लिए उतना मायने नहीं रखेंगे जितना कि आपके अपने लक्ष्य, जो आपके मूल्यों पर आधारित हैं। अपने लक्ष्यों को _____ तरीकों से परिभाषित करना सहायक होता है।

(क) स्मार्ट (ख) निश्चित

(ग) सही (घ) विशिष्ट

14. आप नियोजन के बारे में क्या जानते हैं? 100 शब्दों में लिखें।

15. आप किसी भी कार्य क्षेत्र में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए योजना कैसे तैयार करेंगे?

16. एक सफल वित्तीय नियोजन कैसे करें?

संकेत

i अपनी वर्तमान वित्तीय स्थिति का आंकलन

ii अपनी वित्तीय लक्ष्य लिखें,

iii निवेश एवं बचत के विभिन्न विकल्पों को ढूँढे।

iv. सही विकल्पों का चुनाव एवं अपने वित्तीय लक्ष्यों की समय-समय पर निगरानी एवं पुर्नअवलोकन

SCERT DELHI

रिक्त स्थान भरें

1. _____ उन्हें घर के खर्चों को पूरा करने की अनुमति देता है। (पैसा/पेट्रोल/योजना)
2. _____ लक्ष्यों को परिभाषित करने, उन्हें प्राप्त करने के लिए एक योजना विकसित करने और योजना को क्रियान्वित करने की प्रक्रिया है। (पैसा कमाना/वित्तीय योजना)
3. _____ जीवन में आपकी सफलता के लिए आवश्यक है। (पैसा/योजना)
4. हम जो कुछ भी चाहते हैं उसे करने के लिए _____ और _____ सीमित संसाधन हैं।
5. _____ केवल आपके जीवन में विश्वास और प्रथाएं हैं जो आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।
6. लक्ष्य आपके _____ को दिशा देता है। (कार्य योजना/सफलता)
7. स्वयं के बारे में जानकारी का मूल्यांकन करने की प्रक्रिया को _____ के रूप में जाना जाता है।

व्यष्टि अध्ययन 1 (CASE STUDY 1)

वित्तीय नियोजन लक्ष्यों को परिभाषित करने, उन्हें प्राप्त करने के लिए एक योजना विकसित करने और योजना को कार्य में लगाने की प्रक्रिया है। वित्तीय योजना आपके पैसे के सभी पहलुओं को संभालने का खाका है, जिसमें बचत और निवेश भी शामिल है। कुछ लोग अच्छी योजना बनाते हैं और इसके साथ उन्हें प्रतिफल भी मिलता है—अच्छी कार, आरामदायक घर, बचत, मज़ेदार छुट्टियाँ यात्राएँ। अन्य लोग कभी योजना बनाना नहीं सीखते, और उनके पास कभी पर्याप्त धन नहीं होता।

प्रश्न.1 वित्तीय नियोजन क्या है?

प्रश्न.2 वित्तीय नियोजन किसका खाका है?

प्रश्न.3 अच्छी योजना बनाने वाले लोगों के लिए प्रतिफल क्या हो सकते है?

प्रश्न.4 योजना बनाना न सीखने के क्या परिणाम हो सकते है?

व्यष्टि अध्ययन 2 (Case Study 2)

ज़रूरतें वे चीज़ें हैं जो हमारे अस्तित्व और कल्याण के लिए आवश्यक हैं। भोजन, सिर पर छत, पानी, कपड़े और स्वास्थ्य देखभाल आवश्यकताओं के कुछ उदाहरण हैं। इनके बिना रहना संभव नहीं है, और इसलिए जब कोई अपने खर्च के बजट की योजना बनाता है तो आधारभूत आवश्यकताओं को

प्राथमिकता दी जाती है। एक बार जरूरतें पूरी हो जाने के बाद, हम उन चीजों से परे चीजों के लिए प्रयास करते हैं, उन चीजों के लिए जो हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक नहीं हैं लेकिन जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती हैं। मनोरंजन, यात्रा, और विलासिता की वस्तुएँ, जैसे अच्छी कार और आलीशान घर चाहतों के कुछ उदाहरण हैं। आदर्श रूप से, किसी को बुनियादी ज़रूरतें पूरी होने के बाद ही इन वस्तुओं की योजना बनानी चाहिए।

प्रश्न.1 हमारे अस्तित्व और कल्याण के लिए क्या आवश्यक हैं?

प्रश्न.2 जब कोई अपने खर्च के बजट की योजना बनाता है तो आप किसे प्राथमिकता देते हैं?

प्रश्न.3 हम अपनी इच्छाएँ कब पूरी कर सकते हैं?

प्रश्न.4 कौन सी वस्तुएँ/सुविधाएँ हमारे जीवन की गुणवत्ता बढ़ाती हैं?

❖❖❖

SCERT DELHI

इकाई - 5
आय क्या है?

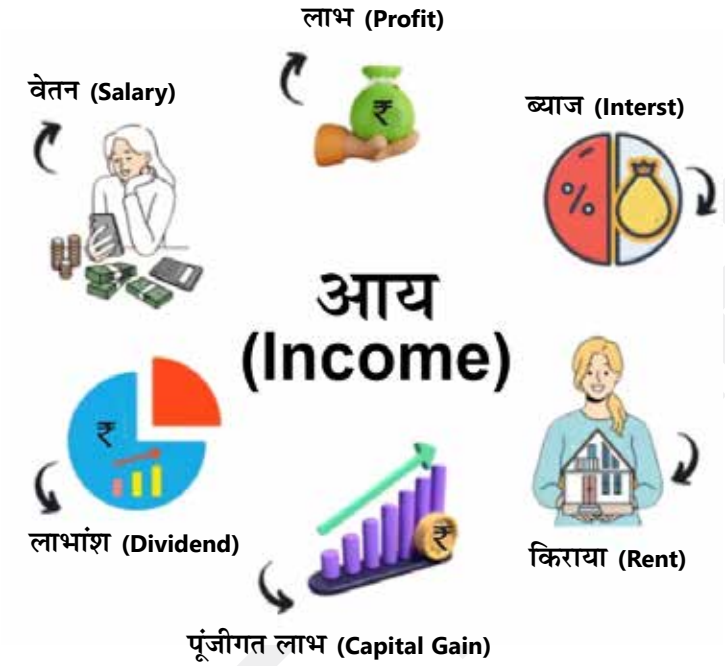

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी:

- आय का अर्थ बता पाएंगे।
- आय के विभिन्न स्रोतों के बारे में विस्तार से बता पाएंगे।
- प्रयोज्य आय और सकल आय में अंतर कर पाएंगे।
- निवल आय और सकल आय में अंतर कर पाएंगे।

परिचय

आय से तात्पर्य किसी व्यक्ति या व्यवसाय द्वारा विभिन्न स्रोतों, जैसे कि वेतन, लाभ, ब्याज और निवेश के माध्यम से अर्जित धन से है। यह वित्तीय कल्याण का एक प्रमुख संकेत है और व्यक्तिगत और व्यावसायिक वित्तीय स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है। आय की परिभाषा अलग-अलग व्यक्तियों के लिए अलग-अलग है। 5 वर्ष के बच्चे के लिए पॉकेट मनी ही आय का एकमात्र स्रोत है। इसी प्रकार, सेवानिवृत्त व्यक्तियों के लिए पेंशन आय, आय का प्राथमिक स्रोत हो सकती है।

मुख्य शब्दावली

1. **आय:** वह धनराशि जो किसी व्यवसाय या व्यक्ति को वस्तुओं या सेवाओं की बिक्री के बदले में या पूंजी निवेश के माध्यम से प्राप्त होती है, आय कहलाती है।

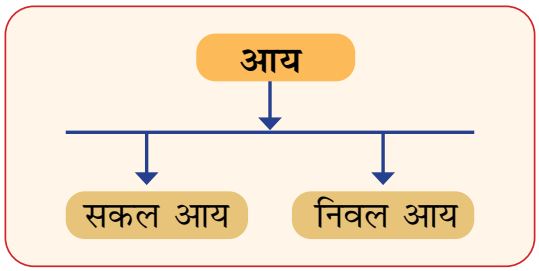

2. **सकल आय (GROSS INCOME) :** सकल आय कटौतियों से पहले किसी व्यक्ति की कुल आय होती है। इसमें केवल रोजगार ही नहीं, बल्कि सभी स्रोतों से प्राप्त आय सम्मिलित है।

3. **शुद्ध आय/निवल आय (NET INCOME) :** वह राशि है जो टैक्स और कटौतियों की गणना के बाद वेतन या वेतन के रूप में प्राप्त होती है.

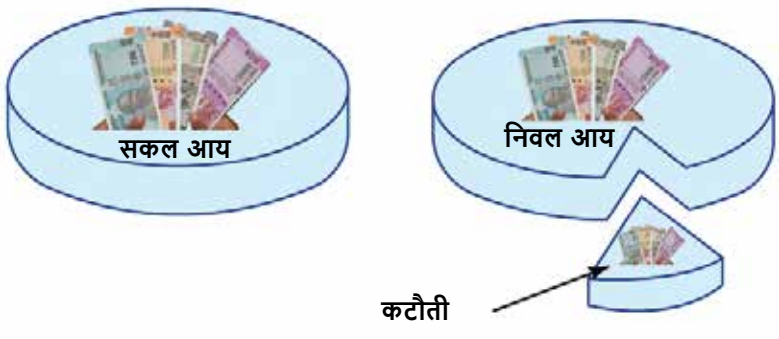

Source: https://www.picpedia.org

4. **कर:** कर सरकार द्वारा आय, संपत्ति या वस्तुओं पर लगाया गया शुल्क हैं।

5. **वेतन:** वेतन आय वह राशि है जो आप निश्चित अवधि के लिए कार्यालय में कार्य करने के लिए अर्जित करते हैं।

Source: https://images.app.goo.gl/YuGV1prRhr86jK53A

6. **कटौतियां:** वह राशियां हैं जो सकल आय से घटाई जाती हैं जिससे निवल वेतन बनता है।

7. **आयकर (Income Tax):** किसी व्यक्ति द्वारा अर्जित आय पर सरकार द्वारा लगाया गया शुल्क या प्रभार होता है।

8. **पारिश्रमिक:** किसी व्यक्ति द्वारा कुछ परिश्रम करने के बदले, काम कराने वाला व्यक्ति उसे जो कुछ (रुपया-पैसा, अनाज, या श्रम) देता है, उसे मजदूरी कहते हैं।

9. **पेंशन:** पेंशन एक "निर्धारित लाभ योजना" हो सकती है, जहां एक व्यक्ति को नियमित रूप से एक निश्चित राशि का भुगतान किया जाता है, यह एक "निर्धारित योगदान योजना", जिसके तहत एक निश्चित राशि का निवेश किया जाता है जो सेवानिवृत्ति के पश्चात उसे उपलब्ध हो जाता है।

https://www.probusinsurance.com/life-insurance/pension-plans/

10. **ब्याज (Interest):** उधार लिए गए पैसे के लिए अदा की गयी कीमत है, या जमा धन से अर्जित की गयी आय है।

https://learning.treasurers.org/resources/how-to-apply-tiered-interest-rates

11. **किराया (Rent):** किराया वह भुगतान है जो किराये पर ली गयी सम्पति के बदले में दिया जाता है।

सकल आय (Gross Income)

किसी व्यक्ति के लिए सकल आय - करों या अन्य कटौतियों से पहले किसी व्यक्ति की कुल कमाई होती है। इसमें केवल रोजगार ही नहीं, बल्कि निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त आय शामिल हैं।

- कार्य करने से वेतन।
- व्यवसाय से लाभ और सेवाओं के लिए फीस।
- परिसंपत्तियों को किराए पर देने से किराया।
- अन्य आस्तियों की बिक्री पर लाभ।
- कोई अन्य आय।

व्यक्तिगत निवल/प्रयोज्य आय (Net/Disposable Income)

व्यक्तिगत प्रयोज्य आय वह राशि है जो टैक्स और कटौतियों की गणना के बाद वेतन या वेतन के रूप में प्राप्त होती है. यह आंकड़ा लाभ, क्रेडिट, छूट आदि जैसे कारकों के आधार पर एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में महत्वपूर्ण रूप से अलग-अलग हो सकता है. निवल आय टैक्स फाइल करते समय भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति की टैक्स देयता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती है।

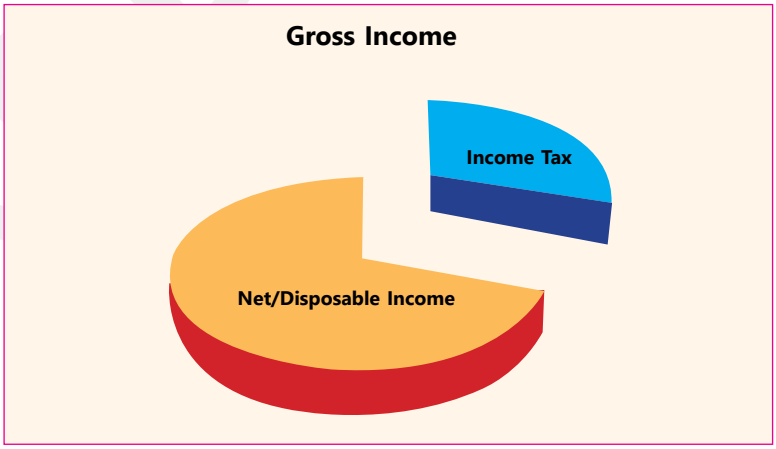

निवल आय = सकल आय - कर - अनिवार्य कटौतियाँ

कर (Tax): कर सरकार द्वारा आय, संपत्ति या वस्तुओं पर लगाया गया शुल्क हैं। करों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है नामतः प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष कर।

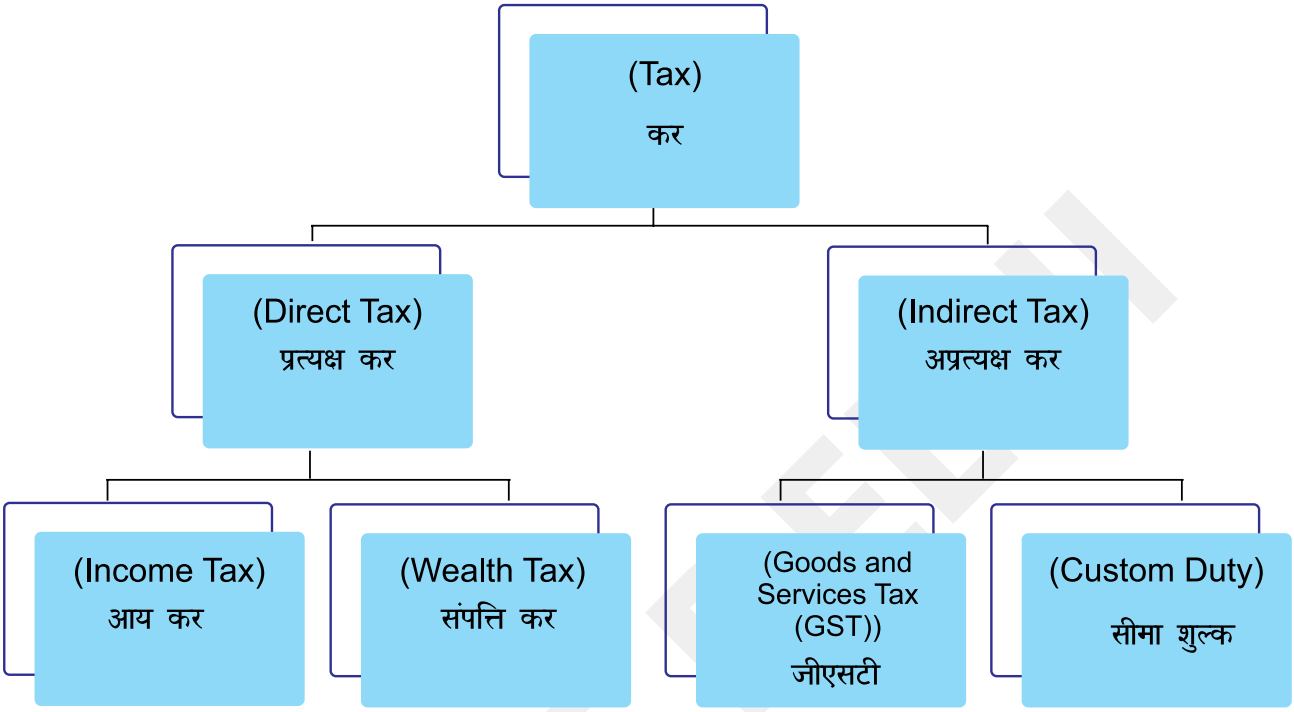

प्रत्यक्ष कर: सरकार द्वारा किसी व्यक्ति पर लगाया गया कर है, जिसे उसी व्यक्ति द्वारा अदा किया जाता है। उदाहरण: किसी व्यक्ति द्वारा अर्जित वेतन के लिए आयकर।

अप्रत्यक्ष कर: वह कर है जो सरकार द्वारा एक व्यक्ति पर लगाया जाता है और वास्तव में किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा अदा किया जाता है। उदाहरण: सर्विस टैक्स और जीएसटी (GST) आदि।

कर सरकार के लिए आय का साधन हैं और इनका प्रयोग सार्वजनिक खर्च जैसे कल्याण योजना, शिक्षा, अवसंरचना विकास, रोजगार आदि के लिए प्रयोग जाता है। यह भी याद रखें कि कर अपवंचन एक अपराध है और अच्छे नागरिक कर अदा करते हैं।

आय तथा सकल आय में अंतर

दोनों में महत्वपूर्ण अंतर होता है. सकल आय, टैक्स देने से पहले वेतन, निवेश या इनकम के किसी अन्य स्रोत से अर्जित सभी पैसे का एक माप है। दूसरी ओर, निवल आय उस पैसे को निर्दिष्ट करती है जो टैक्स और कटौतियों को हटाने के बाद अर्जित किया गया है। आमतौर पर बोलते हुए, व्यक्तिगत प्रयोज्य आय हमेशा सकल आय से कम होगी क्योंकि यह टैक्स और कटौतियों जैसे अतिरिक्त लागतों को ध्यान में रखती है।

सारांश (SUMMARY)

आय एक ऐसा साधन जो हमें विभिन्न साधनों के बदले प्राप्त होता जैसे वेतन, मजदूरी, किराया, ब्याज आदि। सभी साधनों की अपनी-अपनी परिभाषा है। आय को विभिन्न भागो में बांटा जा सकता है, जैसे- सकल आय, अर्जित की गई कुल आय है। आयकर अधिनियम के तहत कटौतियां घटाने के बाद निवल आय प्राप्त होती है जिसे प्रयोज्य आय भी कहा जाता है।

सीखने का सुदृढ़ीकरण (LEARNING REINFORCEMENT)

वाद-विवाद	1. प्रयोज्य आय बढ़ाने के लिए हमें खर्च कम करना चाहिए। 2. कर अपवंचन (Tax Evasion) पर चर्चा करें।
क्या आप जानते है?	भारत में सभी राष्ट्रीयकृत व्यापारिक बैंकों में ब्याज दर का निर्धारण भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के द्वारा किया जाता है। RBI को बैंकों का बैंक कहा जाता है। उल्लेखनीय है कि अक्टूबर, 2011 से RBI ने बचत खाते पर दिए जाने वाले ब्याज से नियंत्रण कुछ शर्तों के साथ हटा लिया।
खोजे और जांच करें	1. उपरोक्त के लिए किसी बैंक से आप ये जानकारी एकत्रित करें 2. आप अपने परिवार के सभी साधनों से प्राप्त होने वाली आय की एक सूची बनाइए। आय स्त्रोत क्या है, और उनकी व्यक्तिगत प्रयोज्य आय क्या है।

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

I. सही विकल्प का चयन करें:

1. आय का अर्थ धन के _____ से है?

(क) जाने (ख) आने

(ग) स्थिर रहने (घ) खर्च

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED

2. पेंशन _____ लोगों के लिए आय का साधन है?

   (क) कार्यरत (ख) जवान

   (ग) बुजुर्ग एवं सेवानिवृत (घ) इनमें से कोई ।

3. वह आय जो खर्च, बचत तथा करो को घटाने के बाद प्राप्त होती है, उसे _____ आय कहते हैं?

   (क) सकल आय (ख) बजट

   (ग) घरेलू आय (घ) प्रयोज्य आय

II. रिक्त स्थान भरें

1. व्यक्तिगत प्रयोज्य आय सकल आय में से _____ घटाने के बाद प्राप्त होती है।
2. बैंक में जमा धन पर हमें _____ प्राप्त होता है।
3. घर को किराये पर देने पर हमें _____ प्राप्त होता।
4. श्रम के बदले में प्राप्त होने वाली आय को _____ कहते हैं।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-100) शब्दों में दीजिए

1. 'आय' से आप क्या समझते है?
2. 'आय' के विभिन्न स्त्रोतों के बारे में लिखिए।
3. 'व्यक्तिगत प्रयोज्य' आय/शुद्ध आय से आप क्या समझते हैं?
4. 'व्यक्तिगत प्रयोज्य' आय/शुद्ध आय में अंतर कीजिये।
5. कर से आप क्या समझते हैं, और इसके कितने प्रकार हैं?

❖❖❖

SCERT DELHI

इकाई - 6
व्यय क्या होते हैं?

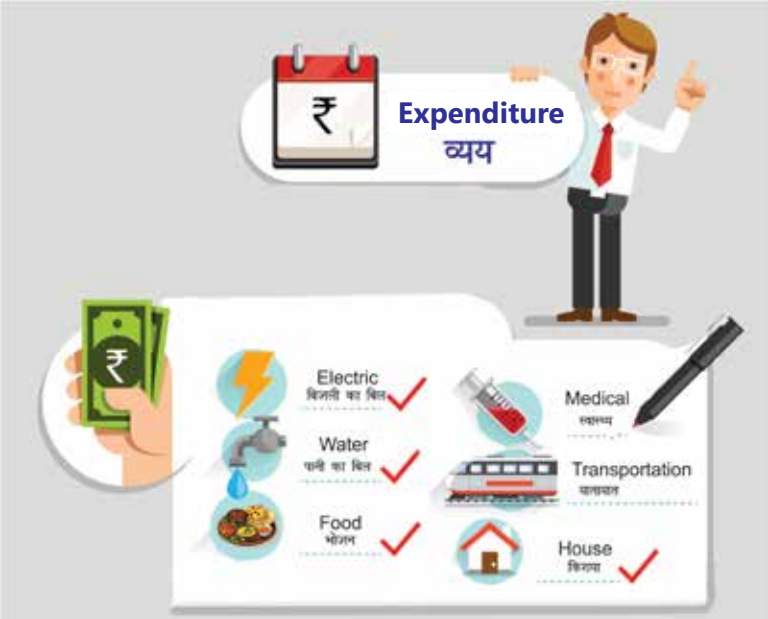

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी

- 'व्यय' का अर्थ परिभाषित कर पाएंगे।
- निश्चित व्यय स्पष्ट कर पाएंगे।
- अनिश्चित/परिवर्तनशील व्यय का अर्थ बता पाएंगे।
- 'नकदी प्रबंधन' की प्रक्रिया बता सकेंगे।

परिचय

क्या आपको पता है कि आपके पिता जी जो पैसे हर महीने कमाते हैं वह आखिर जाते कहां है। बिलकुल सही सोचा आपने ये पैसे आपकी ट्यूशन की फीस, आपके पिता जी के ऑफिस जाने के किराये में और घर पर पूरा महीने खाने-पीने की वस्तुओं पर जो पैसा खर्च किया जाता है, उसे ही व्यय कहते हैं।

मुख्य शब्दावली

1. **व्यय:** आय प्राप्त होने के बाद अपनी जरूरतों तथा इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए जो पैसा हम विभिन्न मदों पर खर्च करते हैं उसे व्यय कहते हैं।
2. **परिवर्तनशील व्यय:** वह व्यय जो उपभोग के अनुसार बदलते रहते हैं, उसे परिवर्तनशील व्यय कहते हैं।
3. **अपरिवर्तनशील व्यय:** वह व्यय जो उपभोग के अनुसार नहीं बदलते हैं, उसे अपरिवर्तनशील व्यय कहते हैं। यह लगभग अपरिवर्तित रहते हैं।
4. **नकदी प्रबंधन:** आय तथा व्यय को सही प्रकार से नियंत्रित तथा व्यवस्थित करना नकदी प्रबंधन कहलाता है। चाहे कोई व्यवसाय हो या घर हो नकदी प्रबंधन हर जगह जरुरी है।
5. **बजट:** भविष्य के लिए आय तथा व्यय का लेखा जोखा तैयार करना तथा उसका सही प्रकार से पालन करना बजट कहलाता है।
6. **पहले स्वयं को अदा करें (पी वाई एफ) :** अपनी आय में से कुछ धन बचाकर भविष्य की जरूरतों के लिए रखना बहुत ही महत्वपूर्ण होता है इसी अवधारणा को पहले स्वयं को अदा करें कहते हैं।

व्यय किसी चीज़ को प्राप्त करने के लिए खर्च किया गया धन है- व्यय में दैनिक लेनदेन शामिल होते हैं (जैसे फ़ोन बिल का भुगतान करना) और कंपनियों द्वारा की गई बड़ी खरीदारी (जैसे मशीनरी खरीदना)। व्यय घरेलू यानि व्यक्तिगत भी हो सकता है तथा यह व्यय किसी कंपनी का भी हो सकता है।

व्यय को दो भागों में बाँटा गया है-

1. परिवर्तनशील व्यय (Variable Expense)

वह व्यय जो हमारी खपत यानि उपभोग के अनुसार बदलते रहते हैं उन्हें परिवर्तनशील व्यय कहते है। उदाहरण के लिए आपका हर महीने का बिजली का बिल जो हर महीने आपकी खपत यानि उपभोग के अनुसार अलग-अलग आता है। परिवर्तनशील व्यय हमेशा बदलते रहते हैं।

2. निश्चित/अपरिवर्तनशील व्यय (Fixed Expense)

वह व्यय जो हमारी खपत यानि उपभोग के अनुसार नहीं बदलते हैं उन्हें अपरिवर्तनशील व्यय कहते है। उदाहरण के लिए आपका हर महीने का घर का किराया जो हर महीने एक जैसा ही रहता है। अपरिवर्तनशील व्यय हमेशा नहीं बदलते हैं।

नकदी प्रबंधन

आने तथा जाने वाले धन को सही प्रकार से नियंत्रण करना ही नकदी प्रबंधन कहलाता है। नकदी प्रबंधन बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है क्योंकि यह आने वाले तथा जाने वाले धन क्योंकि धन का उचित प्रबंधन न होने से धन का प्रवाह प्रभावित होता है, जिस से घर का बजट बिगड़ सकता है। इसलिए नकदी प्रबंधन महत्वपूर्ण वित्तीय नियोजन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

बजट

(Budget) बजट

किसी परिवार या एक व्यक्ति के संसाधनों (आय) और व्यय के समन्वय के लिए निर्मित योजना को पारिवारिक बजट या व्यक्तिगत बजट (एक व्यक्ति के बजट के लिए) कहते हैं।

बजट एक घर में आय तथा व्यय को व्यवस्थित करने में सहायता करता है। यह भविष्य में होने वाले खर्च तथा आने वाली आय का लेखा जोखा तैयार करने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

पहले स्वयं को अदा करें (पी वाई एफ)

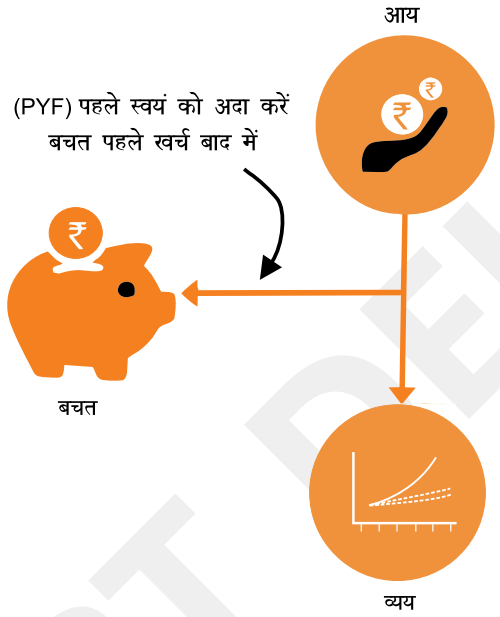

यह एक ऐसी अवधारणा है जो भविष्य में लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करती है। परन्तु यह तभी संभव है जब आप अपने व्यय पर नियंत्रण करके बचत करते है। यही एक ऐसा उपाय है जिसके द्वारा आप अपनी आय को सर्वोत्तम तरीके से उपयोग कर सकतें हैं।

पी वाई एफ (Pay Yourself First) यानि पहले स्वयं को अदा करें एक ऐसी अवधारणा है जो आपको एक अनुशासित बचतकर्ता बनने में सहायता प्रदान करती है।

आप जितना धन बचायेंगे उतना ही आपको आपके लक्ष्य प्राप्त करने में आसानी होगी।

सारांश (SUMMARY)

वह धन जो हम अपनी जरूरतों तथा इच्छाओं को पूरा करने के लिए खर्च करते हैं उसे व्यय कहते हैं। व्यय को दो भागो में बाँटा जा सकता है, परिवर्तनशील व्यय तथा अपरिवर्तनशील व्यय जिसे निश्चित व्यय भी कहते हैं। हम व्यय को अपनी जरूरतों तथा इच्छाओं के अनुसार बढ़ा तथा घटा भी सकते हैं। इस अध्याय में हमने नकदी प्रबंधन के बारे में भी सीखा है जो हमें आने वाले धन तथा जाने वाले धन को नियंत्रित करना सिखाता है। नकदी प्रबंधन के लिए जो लेखा जोखा भविष्य के लिए तैयार किया जाता है

उसे बजट कहते हैं। बजट हमारे घर को सुचारू रूप से चलाने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। इस अध्याय में हमने PYF यानि की पहले स्वयं को अदा करें अवधारणा के बारे में भी सीखा जो हमें भविष्य के लिए कुछ धन अलग से बचाने के लिए प्रेरित करती है ताकि हम अपने लिए बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें।

सीखने का सुदृढ़ीकरण (LEARNING REINFORCEMENTS)

वाद-विवाद 	1. व्यय हमारी जरूरतों की पूर्ति करने के लिए होते हैं, जबकि हम इच्छाओ पर नियंत्रण कर सकते हैं। 2. परिवर्तनशील व्यय एक समय के बाद बदल जाते हैं। 3. ज्यादातर बजट केवल कागज़ों तक ही सीमित रहते हैं।
क्या आप जानते है? 	1. देश की नागरिक वित्तीय सुरक्षा रैंकिंग ने **वित्तीय सुरक्षा सूचकांक'** जारी किया है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, 'देश में 4 सदस्यों वाले एक परिवार की औसत आय 23,000 रुपये प्रति माह है। वहीं 46 प्रतिशत से अधिक परिवारों की औसत आय 15,000 रुपये प्रति माह से भी कम है। इसका मतलब है कि ये परिवार निम्न आय समूह से सम्बन्ध रखते हैं। 2. क्या आपको पता है की केंद्रीय तथा राज्य सरकारें भी हर साल बजट जारी करती हैं। पिछले कुछ वित्त वर्षो में स्वीकृत बजट का आकार करीब 30 लाख करोड़ रुपये का था. आम आदमी के मन में सवाल रहता है कि सरकार जो बजट में बड़े-बड़े ऐलान करती हैं, उसके लिए पैसे कहां से आते हैं? सरकार के पास आमदनी का जरिया क्या है? टैक्स और राजस्व सरकार की आमदनी का सबसे बड़ा जरिया है सबसे ज्यादा उधार और अन्य देयतायों से फंड मिलता है, उसके बाद जी.एस.टी. और अन्य टैक्स से भी पैसा मिलता है।
खोजे और जांच करें 	1. आप अपने परिवार में विभिन्न साधनों पर होने वाले व्ययों की एक सूची बनाइए? 2. इस पाठ के आधार पर एक समीक्षात्मक टिप्पणी कीजिये। 3. आप अपने खर्चों की अपने सहपाठी के खर्चों से तुलना कीजिये।

SCERT DELHI

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

I. सही विकल्प का चयन करें-

1. वह धन जो हम अपनी जरूरतों तथा इच्छाओं पर खर्च करते हैं उसे _____ कहते हैं।

   (क) आय (ख) व्यय

   (ग) बजट (घ) लाभ

2. वह व्यय जो एक सीमित समय तक नहीं बदलते हैं उन्हें _____ कहते हैं।

   (क) अपरिवर्तनशील व्यय (ख) परिवर्तनशील व्यय

   (ग) घरेलु व्यय (घ) इनमें से कोई

3. _____ भविष्य के लिए आय तथा व्यय का लेखा-जोखा तैयार करना है।

   (क) व्यय (ख) नियोजन

   (ग) आय (घ) बजट

II. रिक्त स्थानों को भरें-

1. _____ व्यय नहीं बदलते हैं तथा निश्चित रहते हैं।
2. अपनी आवश्यकताओं तथा _____ पर खर्च किया गया धन व्यय कहलाता है।
3. बिजली के बिल पर किया गया व्यय _____ व्यय कहलाता है।
4. भविष्य के लिए आय तथा व्यय का पूर्वानुमान लगाकर उसका लेखा-जोखा तैयार करना _____ कहलाता है।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50-100 शब्दों में कीजिये

1. व्यय से आप क्या समझते है?
2. परिवर्तनशील व्यय क्या होते हैं?
3. बजट से आप क्या समझते है?
4. "पहले स्वयं को अदा करें" की अवधारणा स्पष्ट कीजिये।

❖❖❖

SCERT DELHI

इकाई - 7
बैंक क्या है?

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के उपरांत, विद्यार्थी:

- बैंक को परिभाषित कर पाएंगे।
- विश्व और भारत में बैंकिंग के क्रम-विकास की व्याख्या कर पाएंगे।
- बैंक खाता खोलने के दस्तावेजों को सूचीबद्ध कर पाएंगे।
- बैंक खाता खोलने के बाद मिलने वाले दस्तावेजों को सूचीबद्ध कर पाएँगे।
- विभिन्न खातों की विशेषताएँ वर्गीकृत कर पाएंगे।
- विभिन्न खातों की तुलना कर पाएंगे।
- बैंकिंग में हुए नवीन परिवर्तन जैसे इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग और एटीएम की व्याख्या कर पाएंगे और उनके प्रभाव का विश्लेषण कर पाएंगे।

परिचय

पिछली इकाई में हमने बचत के बारे में पढ़ा। यह क्या होती है और कैसे की जाती है। अब हम एक कहानी पढ़ते है:

राहुल को हर महीने अपने माता पिता से ₹500 जेब खर्च के लिए मिलते हैं और बचत का महत्व समझते हुए वह इसमें से ₹200 बचा लेता है। अपने बचाये हुए पैसो को वह पिग्गी बैंक में रख देता है। एक दिन राहुल को विचार आया कि क्या उसका पैसा सुरक्षित रहेगा और क्या पैसा उतना ही रहेगा जितना उसने पिग्गी बैंक में रखा है? उसने यह दोनों प्रश्न माँ से पूछे तो उन्होंने कहा कि पैसो की सुरक्षा और बढ़ोतरी पिग्गी बैंक सुनिश्चित नहीं कर सकता। यह दोनों लाभ तुम्हें बैंक से मिलेंगे इसलिए तुम अपनी बचत बैंक में जमा करो जैसे मैं और पापा करते है।

"राहुल ने पूछा बैंक क्या है"? आप अपना पैसा बैंक में क्यों रखेंगे?

आइये बैंक के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं...

मुख्य शब्दावली:

1.	बैंक **Bank**		बैंक एक ऐसी जगह है जहां लोग बचत को सुरक्षित रखने और बढ़ोतरी के लिए अपना पैसा जमा कर सकते हैं और आवश्यकता अनुसार निकाल सकते है।
2.	जमा पर्ची **Deposit Slip**		जमा पर्ची की मदद से बैंक खाते में नकद या चेक जमा किया जा सकता है।
3.	निकासी पर्ची **Withdrawal Slip**		निकासी पर्ची खाताधारक को अपने खाते से नकदी निकालने में सक्षम बनाती है।
4.	पासबुक **Passbook**		पासबुक बैंक खाते के सभी वित्तीय लेनदेन का रिकॉर्ड है।
5.	एटीएम और डेबिट कार्ड (प्लास्टिक मुद्रा) **(ATM & Debit Card Plastic Money)**		एटीएम कार्ड बैंक द्वारा जारी किया गया एक कार्ड है जिसका उपयोग एटीएम में नकद निकासी और अन्य प्रकार के लेनदेन के लिए किया जा सकता है। डेबिट कार्ड का उपयोग एटीएम से पैसे निकालने के अलावा, ऑनलाइन खरीदारी करने और किसी दुकान में मशीन में स्वाइप करके भुगतान करने के लिए भी किया जा सकता है।
6.	स्व- चालित टेलर मशीन (एटीएम) **(ATM) Automated Teller Machine**		स्व- चालित टेलर मशीन (एटीएम) एक कंप्यूटरीकृत मशीन है जो कि बैंक के ग्राहकों को बैंक शाखा जाए बिना ही नकदी निकालने एवं अन्य वित्तीय और गैर वित्तीय लेनदेन की सुविधा प्रदान करती है।

SCERT DELHI

7.	चेक **(Cheque)**		चेक खाताधारक द्वारा लिखित रूप में बैंक को चेक में नामित व्यक्ति या संस्था को भुगतान करने का निर्देश देने वाला एक साधन है।
8.	विभिन्न प्रकार के बैंक खाते: **(Different Types of Bank Accounts)**	 	**जमा बचत बैंक खाता** बचत की आदत को प्रोत्साहित करने के लिए खोला जाता है। **चालू खाता** आमतौर पर व्यापारियों, व्यवसायिकों और कंपनियों द्वारा खोला जाता है। **मियादी जमा** में, एक व्यक्ति बैंक में एक विशिष्ट अवधि के लिए एकमुश्त राशि का निवेश करता है। **आवर्ती जमा** में खाताधारक एक निश्चित अवधि के बाद जैसे हर माह एक निश्चित राशि को बैंक में तय निवेश अवधि के लिए जमा करता है।

बैंक एक ऐसी जगह है जहाँ आप:

- अपना पैसा सुरक्षित रख सकते हैं
- ज़रूरत पड़ने पर पैसे निकाल (Withdraw) सकते हैं
- बिलों का भुगतान कर सकते हैं या दूसरों को पैसे भेज सकते हैं
- घर या कार जैसी ज़रूरी चीज़ों के लिए उधार ले सकते हैं
- वित्तीय सलाह और सेवाओं के लिए मदद ले सकते हैं

पैसा जमा करने के लिए व्यक्ति को बैंक में एक खाता खोलना पड़ता है और उसे खाताधारक कहा जाता है। बैंक खाता धारक को उसके द्वारा की गई जमा राशि के बदले में ब्याज का भुगतान करते हैं।

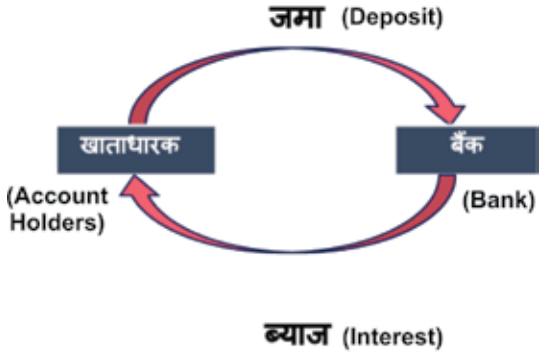

SCERT DELHI

बैंक बचतकर्ताओं और उधारकर्ताओं के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं, जो अर्थव्यवस्था में पैसे और ऋण के प्रवाह को सुविधाजनक बनाते हैं।

यदि खाताधारक को कार, घर, शिक्षा या किसी अन्य आवश्यकता के लिए अपनी बचत से अधिक धन की आवश्यकता है, तो वह बैंक से ऋण ले सकता है। कर्ज़दार (खाताधारक) को प्राप्त ऋण पर ब्याज का भुगतान करना होता है और इसे ईएमआई (समान मासिक किश्त) नामक किश्तों में वापस करना होता है।

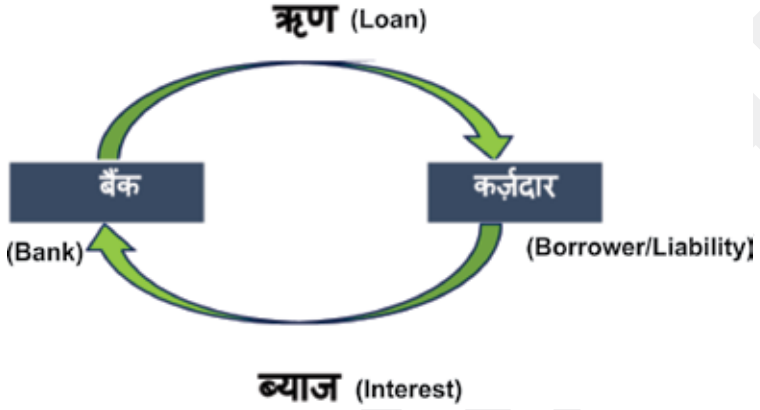

ऋण पर ब्याज

विश्व में बैंकिंग का क्रम-विकास

- बेबिलोनिया के मंदिरों और महलों में कीमती वस्तुओं को सुरक्षित रखने के लिए 2000 बीसी पूर्व से ही बैंकिंग शुरू हो गई थी।
- ग्रीक ने धन की वास्तविक अंतरण किए बिना खाता प्रविष्टि रखकर धन हस्तांतरित करने की प्रणाली विकसित की।
- रोमन साम्राज्य के पतन के बाद ज्यू और टेम्पलर बैंकर बन गए।
- बाद में इतालवी अग्रणी बैंकर बन गए।

भारत में बैंकिंग का क्रम-विकास

1770 : भारत का पहला बैंक '**बैंक ऑफ़ हिंदुस्तान**' की स्थापना हुई

ईस्ट इंडिया कम्पनी ने तीन बैंकों कि शुरुआत की

1809 : बैंक ऑफ़ बंगाल

1840 : बैंक ऑफ़ बॉम्बे

1843 : बैंक ऑफ़ मद्रास

1921 : उपरोक्त तीनों बैंकों का विलय इम्पीरियल बैंक ऑफ़ इंडिया में कर दिया गया

1935 : भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना हुई। यह भारत का केन्द्रीय बैंक हैं।

1955 : इम्पीरियल बैंक का नाम बदल कर स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया रख दिया।

1969 : भारत सरकार द्वारा 14 बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया।

1980 : भारत सरकार द्वारा 6 बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया।

1994 : भारत सरकार ने भारत में निजी बैंकों को स्थापित करने अनुमति देने का निर्णय लिया।

बैंक खाता कैसे खोलें?

निम्नलिखित दस्तावेज़ जमा करके बैंक खाता खोला जा सकता है:

- खाता खोलने का फॉर्म
- पहचान का प्रमाण
- पते का प्रमाण
- व्यक्ति (व्यक्तियों) की तस्वीरें

खाता एकल नाम से या परिवार या दोस्तों के साथ संयुक्त रूप से खोला जा सकता है। यहां कुछ दस्तावेज़ दिए गए हैं जिन्हें पहचान के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है:

- पासपोर्ट
- फोटोयुक्त ड्राइविंग लाइसेंस
- मतदाता पहचान पत्र
- पैन कार्ड, सरकारी आईडी कार्ड
- पहचान पत्र/नियोक्ता से पुष्टिकरण

SCERT DELHI

यहां कुछ दस्तावेज़ दिए गए हैं जिन्हें पते के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है:

क्या आप जानते हैं?

ऊपर दिए गए दस्तावेज़ों को केवाईसी दस्तावेज़ कहा जाता है। **KYC** यानी **Know Your Customer** अर्थात् ग्राहक को जानो जिसके माध्यम से बैंक को ग्राहक के बारे में पूरी जानकारी मिलती है।

- पासपोर्ट
- पते के साथ ड्राइविंग लाइसेंस, मतदाता पहचान पत्र
- टेलीफोन बिल, बिजली बिल, राशन कार्ड
- बैंक खाता विवरण (पते सहित)
- आय/संपत्ति कर निर्धारण आदेश (पते सहित)

उपरोक्त दस्तावेज़ जमा करने के बाद बैंक में खाता खुल जाता है और बैंक

- एक अद्वितीय खाता संख्या खाताधारक को आवंटित करता है।
- पासबुक देता है।
- चेकबुक देता है।
- ए.टी.एम. सह डेबिट कार्ड देता है
- खाता धारक के आवेदन पर इंटरनेट बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग की सुविधा भी देता है।

जमा और निकासी

1. जमा पर्ची (DEPOSIT SLIP/PAY IN SLIP)

जमा पर्ची की मदद से बैंक खाते में नकद या चेक जमा किया जा सकता है।

SCERT DELHI

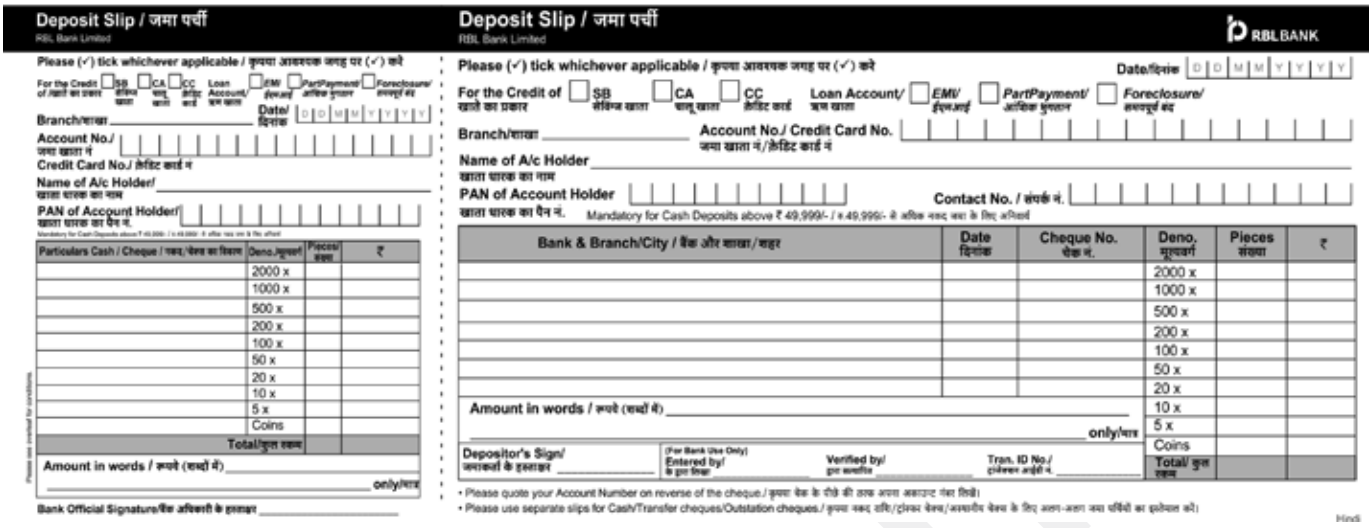

जमा पर्ची में निम्नलिखित विवरण शामिल हैं

- खाताधारक का नाम
- बैंक खाता संख्या
- बैंक की शाखा का नाम
- जमा करने की तारीख
- जमा की राशि शब्दों एवं अंकों में
- जमाकर्ता के हस्ताक्षर
- मुद्रा का मूल्यवर्ग
- जमा किए जाने वाले चेक का विवरण अगर चेक जमा किया जा रहा है।

2. निकासी पर्ची (Withdrawal Slip)

निकासी पर्ची खाताधारक को अपने खाते से नकदी निकालने में सक्षम बनाती है।

SCERT DELHI

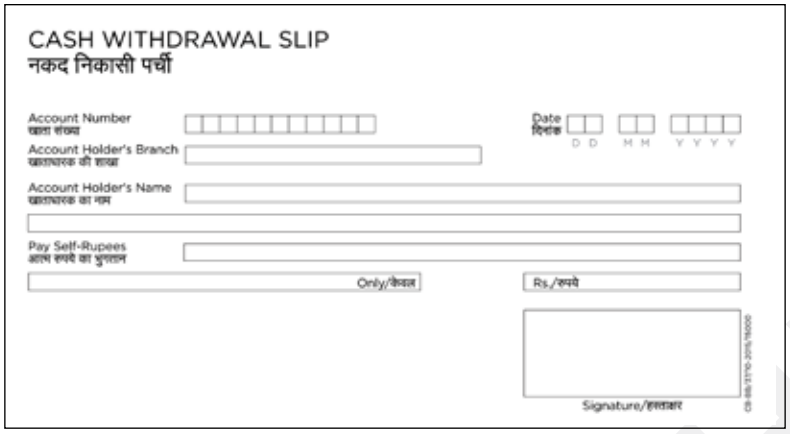
CASH WITHDRAWAL SLIP
नकद निकासी पर्ची

Account Number
खाता संख्या

Date
दिनांक D D M M Y Y Y Y

Account Holder's Branch
खाताधारक की शाखा

Account Holder's Name
खाताधारक का नाम

Pay Self-Rupees
आप रुपये का भुगतान

Only/केवल

Rs./रुपये

Signature/हस्ताक्षर

निकासी पर्ची में निम्नलिखित विवरण शामिल हैं:

- खाताधारक का नाम
- बैंक खाता संख्या
- बैंक की शाखा का नाम
- निकासी की तारीख
- निकासी की राशि शब्दों एवं अंकों में
- खाता धारक के हस्ताक्षर
- निकाली जाने वाली राशि शब्दों और अंको में
- खाता धारक का पता और फ़ोन नंबर

क्या आप जानते हैं?

इन दिनों आप कैश रिसाइक्लर (Cash Recycler) नामक मशीन के माध्यम से अपने बैंक खाते में नकदी जमा और निकाल सकते हैं! इस मशीन का का प्रयोग 24x7 किया जा सकता है।

बैंक खाताधारक के दस्तावेज़

1. पासबुक (PASSBOOK)

पासबुक बैंक खाते के सभी वित्तीय लेनदेन का रिकॉर्ड है। इस प्रकार, खाताधारक द्वारा किए गए और प्राप्त किए गए सभी भुगतान इसमें दर्ज किए जाते हैं।

© NCERT DELHI

DATE	DESCRIPTION	WITHDRAWALS	DEPOSITS	BALANCE
03-10-16	ATMW	**21.25		**474.11
03-10-16	ATMF	**1.50		**472.61
03-10-20	DEBP	**2.99		**469.62
03-10-21	WEBP	**300.00		**169.62
03-10-22	ATMW	**100.00		**69.62
03-10-23	DEBP	**29.08		**40.54
03-10-24	DEBR		**2.99	**43.53
03-10-27	TELP	**6.77		**36.76
03-10-28	PYRL		**694.81	**731.57
03-10-30	WEBT		**50.00	**781.57

Please refer to the back cover for the list of common transaction codes.

Please verify your account activity regularly. If there is an error, notify the bank within 45 days.

क्या आप जानते हैं?

सेल्फ सर्विस पासबुक प्रिंटर (एसएसपीबीपी) एक स्वचालित मशीन है, जिसके माध्यम से ग्राहक अपनी पासबुक स्वयं प्रिंट कर सकते हैं बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के।

2. एटीएम और डेबिट कार्ड (प्लास्टिक मुद्रा) (ATM/DEBIT CARD)

एटीएम कार्ड बैंक द्वारा जारी किया गया एक कार्ड है जिसका उपयोग एटीएम में नकद निकासी और अन्य प्रकार के लेनदेन के लिए किया जा सकता है। एटीएम कार्ड की मदद से खाताधारक अपने खाते की शेष राशि की जांच कर सकते हैं और मिनी स्टेटमेंट के रूप में अपने खाते की जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं।

'डेबिट कार्ड' भी बैंक द्वारा जारी किया जाने वाला एक प्रकार का कार्ड है। डेबिट कार्ड का उपयोग एटीएम से पैसे निकालने के अलावा, ऑनलाइन खरीदारी करने और किसी दुकान में पी.ओ.एस (POS) मशीन में स्वाइप करके भुगतान करने के लिए भी किया जा सकता है। खरीदारी का मूल्य स्वचालित रूप से बैंक खाते से डेबिट कर दिया जाता है।

आजकल बैंक एटीएम सह डेबिट कार्ड (ATM-cum-debit card) जारी करते हैं जो एटीएम और डेबिट कार्ड दोनों के लाभ प्रदान करते हैं और खाताधारक के खाते से जुड़ा हुआ है।

3. चेक बुक (CHEQUE BOOK)

चेक खाताधारक द्वारा लिखित रूप में बैंक को चेक में नामित व्यक्ति या संस्था को भुगतान करने का निर्देश देने वाला साधन है। इसका उपयोग खाताधारक अपने खाते से नकदी निकालने के लिए भी कर सकता है। चेक बुक बैंकों द्वारा प्रदान की गई एक पुस्तिका है जिसमें खाली चेक पन्नों की एक श्रृंखला होती है। इसे सुरक्षित रखा जाना चाहिए।

चेक में निम्नलिखित विवरण का उल्लेख किया जाना चाहिए

- वह तारीख जिस पर या उसके बाद भुगतान किया जा सकता है
- उस पार्टी का नाम जिसे भुगतान किया जाना है
- भुगतान की जाने वाली राशि (शब्दों और अंकों में)
- खाताधारक का हस्ताक्षर
- खाताधारक का खाता नंबर।

(इन दिनों खाताधारक का नाम और खाता नंबर चेक में पहले से छपा होता है।)

महत्वपूर्ण बिंदु

- अगर आप अपने लिए पैसे निकालना चाहते हैं तो पे या अदा करें में स्वयं (self) लिखें।

- खाली चेक पर हस्ताक्षर न करें अन्यथा कोई भी कितनी भी राशि भरकर आपके खाते से पैसे निकाल सकता है।
- चेक को क्रॉस करना- अगर आप चाहते हैं कि चेक की रकम किसी खास व्यक्ति के खाते में जमा हो तो आपको चेक के ऊपरी बाएं कोने पर दो समानांतर अनुप्रस्थ रेखाएं खींचनी चाहिए और लाइनों के बीच में 'खाते में जमा' (A/c Payee) लिखना चाहिए। इससे आप यह सुनिश्चित करते है कि राशि सीधे उस व्यक्ति के खाते में जाये, किसी और के पास नहीं।

क्या आप जानते हैं?

अब चेक को बिना किसी मानवीय सहायता या हस्तक्षेप के चेक डिपॉजिट मशीन (Cheque Deposit Machine) में जमा किया जा सकता है। यह मशीन चेक की तारीख, समय और छवि जैसे विवरण के साथ एक अभिस्वीकृति (acknowledgement) उपलब्ध कराती है।

बैंक खातों के प्रकार

1. बचत बैंक खाता (SAVING BANK ACCOUNTS)

- यह खाता बचत की आदत को प्रोत्साहित करने के लिए खोला जाता है।
- इसे छोटी राशि से भी खोला जा सकता है।
- आमतौर पर वेतन पाने वाले व्यक्ति, विद्यार्थी, गृहणियां, सेवा निवृत व्यक्ति आदि इस खाते को खोलते हैं।

- इस खाते में जमा की गई राशि पर बैंक के द्वारा ब्याज दिया जाता है।
- इस खाते में किसी विशेष अवधि के दौरान जमा और निकासी की सीमित संख्या जैसे प्रतिबन्ध हो सकते हैं।

2. चालू खाता (CURRENT ACCOUNT)

- चालू खाता आमतौर पर व्यापारियों, व्यवसायिकों और कंपनियों द्वारा खोला जाता है।
- सामान्यतः इस खाते में रखी गई राशि पर बैंक के द्वारा ब्याज नहीं दिया जाता अर्थात इस खाते में रखी गई राशि पर ब्याज अर्जित नहीं होता।
- खाता धारकों को अपने खाते में रखी गई राशि से अधिक राशि निकालने की सुविधा दी जाती है जिससे ओवर ड्राफ्ट कहते हैं। रखी गई राशि से अधिक निकासी पर निकाले गए धन को बाद में बैंक को ब्याज सहित लौटना पड़ता है।
- चालू खाता धारकों को जमा और निकासी की संख्या पर प्रतिबंध नहीं होता।

3. मियादी जमा खाता (FIXED DEPOSIT/TERM DEPOSIT)

- मियादी जमा खाता, निवेश के लिए एक प्रकार का खाता है।
- इस खाते में, एक व्यक्ति एक बैंक में एक निर्धारित अवधि के लिए एक मुश्त राशि का निवेश करता है।
- जमा की गई राशि पर एक निश्चित दर से ब्याज मिलता है जो खाता खोलने के समय निर्धारित किया जाता है। इस खाते में दी जाने वाली ब्याज दर बचत बैंक खाते की तुलना में अधिक होती है।
- जमा की गई राशि को निर्धारित अवधि से पहले नहीं निकाला जाता है. अगर किसी वजह से निवेशक को अपनी धनराशि निर्धारित अवधि से पहले निकालना है तो उसे बैंक को सूचित करना होगा, जिसके बाद बैंक कुछ जुर्माना काटकर धनराशि वापस कर देता है।

4. आवर्ती जमा खाता (RECURRING DEPOSIT ACCOUNT)

- आवर्ती जमा खाता लोगों में नियमित बचत करने की आदत को प्रोत्साहित करता है।
- आवर्ती जमा खाता एक तय निवेश अवधि तक आवधिक रूप से जैसे हर महीने एक निश्चित राशि जमा रखने के लिए होता है इसका उपयोग नियमित बचत को जमा करने के लिए किया जाता है
- समय अवधि पूरा होने के बाद उसे अपनी निवेश की गई राशि और ब्याज की राशि दोनों प्राप्त होती हैं।

SCERT DELHI

- उदाहरण के लिए-रमेश बैंक में 1 वर्ष के लिए आवर्ती खाता खोलता है और हर महीने ₹1000 बैंक में जमा करता है तो 1 वर्ष के पश्चात उसे अपनी निवेश की गई राशि ₹12000 और ब्याज की राशि दोनों वापस मिल जाएंगे।

बैंकिंग क्षेत्र में कुछ नवीन परिवर्तन

1. स्व-चालित टेलर मशीन (एटीएम) (ATM)

स्व-चालित टेलर मशीन (एटीएम) एक कंप्यूटरीकृत मशीन है जो कि बैंक के ग्राहकों को बैंक शाखा जाए बिना ही नकदी निकालने एवं अन्य वित्तीय और गैर वित्तीय लेनदेन की सुविधा प्रदान करती है। एटीएम द्वारा खाताधारक को निम्नलिखित सुविधाएं प्राप्त होती है:

- खाता संबंधी जानकारी
- नियमित बिल भुगतान
- छोटा/लघु विवरण (mini statement)
- पिन परिवर्तन
- चेक बुक के लिए अनुरोध आदि।

एटीएम को बैंक स्टाफ के हस्तक्षेप के बिना 24*7 संचालित किया जा सकता है। एटीएम को बैंक द्वारा प्रदान किए गए एटीएम/एटीएम सह डेबिट कार्ड और पिन (व्यक्तिगत पहचान संख्या) की सहायता से संचालित किया जाता है।

2. इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग (E-BANKING)

इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग या ऑनलाइन बैंकिंग, खाता धारकों को बैंक की वेबसाइट के माध्यम से कई प्रकार के वित्तीय लेनदेन करने में सक्षम बनाता है। इंटरनेट बैंकिंग द्वारा निम्नलिखित लाभ प्रदान किए जाते हैं:

- बैंक शेष की जाँच करना
- बैंकिंग लेन-देनों की जांच करना
- बिल भुगतान सुविधा जैसे बिजली का बिल टेलीफोन का बिल का भुगतान
- अपने बैंक खाते से दूसरे खाते में धन का अंतरण
- चेक बुक भेजने का अनुरोध के लिए आदि।

SCERT DELHI

क्या आप जानते हैं?

इन दिनों बैंकिंग में कई बदलाव हो रहे हैं। पुराने दिनों की तरह ग्राहक को नियमित लेनदेन के लिए बैंक जाने की जरूरत नहीं है। आज भारत में फिनटेक का महत्व बढ़ रहा है। फिनटेक का अर्थ है उपभोक्ताओं तक वित्तीय सेवाएं और उत्पाद पहुंचाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग। चाहे वह कागज रहित ऋण हो, मोबाइल बैंकिंग हो, डिजिटल भुगतान हो, मोबाइल वॉलेट हो, बीमा हो, ऋण देना आदि हो। फिनटेक ने पारंपरिक बैंकिंग प्रणाली के हर क्षेत्र में क्रांति ला दी है।

इस प्रकार के नवीनतम बदलाव बैंकिंग क्षेत्र में किए जा रहे हैं। इसलिए आप अखबार, मैगजीन और जर्नल को पढ़ते रहिए और उनकी जानकारी को एक स्क्रैप फाइल में संग्रहित करिये।

सारांश

बैंक वह स्थान है जहां बचत सुरक्षित रखने के लिए धन को जमा किया जा सकता है और आवश्यकता पड़ने पर निकाला भी जा सकता है। इस इकाई में हमने भारत में बैंक के इतिहास के बारे में जाना तथा बैंक खाता खोलने के लिए आवश्यक दस्तावेजों के बारे में जाना जिसे केवाईसी दस्तावेज़ कहा जाता है। जमा पर्ची का प्रयोग करके बैंक में धन को जमा किया जा सकता है और निकासी पर्ची के द्वारा बैंक से धन निकाला जा सकता है। पासबुक किसी खाते में किए गए सभी लेनदेन का रिकॉर्ड होती है। चेक बैंकिंग लेनदेन का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसके अतिरिक्त हमने समझा कि बैंक में विभिन्न प्रकार के खाते खोले जा सकते हैं जैसे बचत खाता, चालू खाता, मियादी जमा खाता और आवर्ती खाता। नवीन बैंकिंग के उदाहरण है एटीएम और इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग इत्यादि जिससे खाताधारक हर समय (24x7) बैंकिंग सेवाएं प्राप्त कर सकता है

सीखने का सुदृढ़ीकरण (LEARNING REINFORCEMENTS)

वाद विवाद	पक्ष या विपक्ष में अपने तर्क दीजिए: 1 इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग धीरे-धीरे पारंपरिक बैंकिंग की जगह ले रही है।

क्या आप जानते है	1. भारतीय रिज़र्व बैंक (Reserve Bank of India), भारत का केंद्रीय बैंक है। 2. भारतीय रिज़र्व बैंक भारत में सभी बैंकों को नियंत्रित करता है। 3. यह भारत में मुद्रा जारीकर्ता है-उसके पास एक रूपए के नोट (केवल वित्त मंत्रालय द्वारा जारी किया जाता है) को छोड़कर सभी प्रकार के नोट जारी करने का अधिकार है। 4. भारतीय रिजर्व बैंक का महत्वपूर्ण कार्य है की यह भारत सरकार और राज्यों का बैंक है। 5. भारतीय रिजर्व बैंक भारत में मौद्रिक नीति (Monetary Policy) भी बनाता है, जिसका मकसद देश के विकास और महंगाई को ध्यान में रखते हुए मूल्य स्थिरता को बनाए रखना है।
खोजे और जांच करें	पता लगाइये कि बैंक और कौन-सी सेवाएं देता है? (संकेत: क्रेडिट कार्ड जारी करना, लॉकर सेवा, पी.पी.एफ. अकाउंट, सुकन्या समृद्धि योजना अकाउंट, फोरेक्स, इत्यादि।) 2018 के बाद से अब तक कौन से बैंक विलय हो चुके हैं और क्यों? एक संक्षिप्त रिपोर्ट बनाएँ।
गतिविधियां	**अपने पास की किसी बैंक शाखा में जाएं और निम्न गतिविधियों को देखें और उस अनुभव को लिखें:** 1. जमा पर्ची भरना। 2. चेक भरना। 3. निकासी फार्म को भरकर मुद्रा निकालना। 4. पासबुक प्रिंटर से पासबुक प्रिंट करें। 5. आवर्ती खाता खोलें और एक निश्चित राशि निश्चित अवधि पर बैंक में जमा करें। 6. एटीएम से पैसो की निकासी करे और लघु विवरण निकाले।

SCERT DELHI

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

I. सही विकल्प चुनें

1. निम्न में से कौन सा दस्तावेज खाते में किए गए सभी लेनदेन का विवरण होता है:

   (क) जमा पर्ची (ख) निकासी पर्ची

   (ग) पासबुक (घ) चेक बुक

2. यह खाता सामान्यतः व्यापारियों, व्यवसायों और कंपनियों द्वारा खोला जाता है:

   (क) बचत बैंक खाता (ख) चालू खाता

   (ग) आवर्ती जमा खाता (घ) मियादी जमा खाता

II. रिक्त स्थान भरें

1. _____ एक कंप्यूटरीकृत युक्ति है जो बैंक के कार्ड धारकों को वित्तीय लेन-देनों के लिए हर समय लेने देन की पहुँच प्रदान करती है।
2. डेबिट कार्ड को _____ मुद्रा भी कहा जाता है।

III. सही (✓) अथवा गलत (×) बताएँ

1. बैंक खाता केवल व्यवसायियों के द्वारा खोला जाता है। (सही/गलत)
2. मियादी खाता में राशि एक मुश्त जमा की जाती है। (सही/गलत)

IV. निम्नलिखित का उत्तर संक्षेप में दें (30-50 शब्दों में)

1. मियादी खाता और आवर्ती खाते में दो अंतर लिखिए।
2. बचत बैंक खाते और मियादी खाता को खोलने के उद्देश्य लिखिए।

V. विस्तार से उत्तर लिखिए

1. भारत में बैंकिंग की उत्पत्ति की व्याख्या कीजिए।
2. बैंक खाता खोलने की प्रक्रिया लिखिए और उसके लिए आवश्यक दस्तावेजों को सूचीबद्ध कीजिए।

SCERT DELHI

इकाई - 8
बचत क्यों करें?

इच्छाएं/अभिलाषाएं अनेक, उच्च शिक्षा, गाड़ी, घर, परिवार संग छुट्टियों में सैर! साधन सिर्फ एक - "बचत"

उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत विद्यार्थी

- बचत की अवधारणा के अर्थ का वर्णन कर पाएंगे।
- प्रयोज्य आय का अर्थ उदाहरण सहित बता पाएंगे।
- साधारण ब्याज का परिकलन (calculation) कर पाएंगे।
- चक्रवृद्धि ब्याज का परिकलन (calculation) कर पाएंगे।
- साधारण ब्याज और चक्रवृद्धि ब्याज में अंतर्भेद कर पाएंगे।
- '72 का नियम' का उदाहरण सहित वर्णन कर पाएंगे।

परिचय

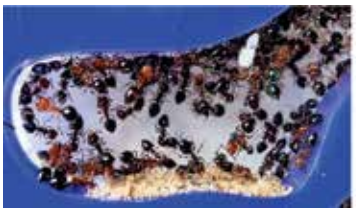

हम सबने चींटियों को भोजन का भंडारण करते हुए देखा है, जैसा ऊपर दिये गए चित्र में दिखाया गया है। ये चित्र चींटियों की अपने भोजन संबंधी आवश्यकताओं के लिए बचत की प्रवृति को दर्शाता है। इसी प्रकार चाहे जीव जन्तु हो या मनुष्य, सभी अपने भविष्य के लिए किसी न किसी रूप में बचत करते है। बचत तभी हो सकती है , जब आय का स्त्रोत उपलब्ध हो। जिस प्रकार चींटियाँ प्रकृति या किसी भी स्त्रोत से अपना आहार और भोजन की बचत को ढूंढ लेती है, मनुष्य भी बचत कर सकने में सक्षम है। इस अध्याय में धन की बचत से संबन्धित विभिन अवधारणाओं का वर्णन किया गया है। प्रयोज्य आय, साधारण ब्याज और चक्रवृद्धि ब्याज किस प्रकार बचत की प्रवृति की वृद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है, उदाहरण सहित समझाया गया है। इस अध्याय का उदेश्य बचत से संबन्धित व्यावहारिक समझ को विकसित करना है।

मुख्य शब्दावली

1. **प्रयोज्य आय (PERSONAL DISPOSABLE INCOME)**

   प्रयोज्य आय विभिन्न स्रोतों से आयकर कटौती के बाद से होने वाली आय, धन के रूप में मिले उपहारों तथा सब्सिडी (आर्थिक सहायता) का योग है।

2. **बचत (SAVING)**

   भविष्य की जरूरतों के लिए रखा गया अर्जित आय का एक भाग/अंश है 'बचत', आय का वह अंश है जो विभिन्न व्ययों पर खर्च करने के बाद शेष बच जाता है।

3. **साधारण ब्याज (SIMPLE INTEREST)**

   यदि ब्याज की गणना केवल मूलधन पर की जाती है, अर्थात पिछली अवधि में जमा राशि पर मिले ब्याज पर ब्याज नहीं निकाला जाता तो उसे साधारण ब्याज कहते हैं।

4. **चक्रवृद्धि ब्याज (COMPUND INTEREST)**

   यदि ब्याज की गणना मूलधन एवं संचित ब्याज दोनों पर की जाती है तो उसे चक्रवृद्धि ब्याज कहते हैं।

5. **'72 का नियम' (RULE OF '72')**

   '72 का नियम' कहता है की 72 को 'ब्याज की दर' से भाग करके आप एक अनुमान लगा सकते हैं कि प्रारंभिक बचत के दुगुना होने में कितना समय लगेगा।

बचत क्या है?

'बचत', आय का वह अंश है जो विभिन्न व्ययों पर खर्च करने के बाद शेष बच जाता है। बचतें भविष्य की जरूरतों के लिए अपने अर्जित धन के एक भाग को अलग से रखना है।

प्रयोज्य आय और बचतें

प्रयोज्य आय विभिन्न स्रोतों से कर कटौती के बाद होने वाली आय, धन के रूप में मिले उपहारों तथा सब्सिडी (आर्थिक सहायता) का योग है।

प्रयोज्य आय = अर्जित आय + भेंट अर्थात धन रूपी उपहार + सब्सिडी (आर्थिक सहायता) - आय कर

प्रयोज्य आय को हम अपने जीवन में विभिन्न जरूरतों पर खर्च करते हैं और जो शेष बचे वो हमारी बचत है।

SCERT DELHI

"स्वयं को पहले अदा करें", अर्थात खर्च करने से पहले बचत करें।

बचत के लिए प्रेरणा या प्रोत्साहन निम्नलिखित से मिल सकता है

- अपने या किसी अन्य के लिए कुछ खरीदने के लिए
- कोई महंगी वस्तु जैसे कार, घर इत्यादि खरीदने के लिए
- किसी आपात स्थिति से निपटने के लिए

चीजों का समय पर और अधिकाधिक आनंद लेने के लिए जल्दी से जल्दी बचत करना शुरू करें। हमारी बचतों पर ब्याज मिलता है जो हमारे धन को बढ़ाता है। यदि हम नियमित बचत करें तो उनपर कुल ब्याज मूलधन से भी ज्यादा हो जाता है।

बचत = प्रयोज्य आय – कुल खर्च

प्रयोज्य आय = कुल खर्च + बचत

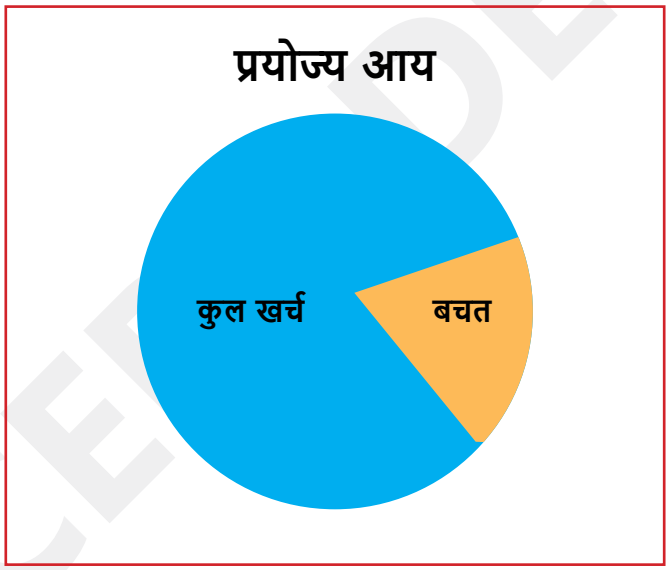

बचत = प्रयोज्य आय – खर्चा

Saving = Disposable Income – Expenditure

ब्याज

1. हमें ब्याज कौन देता है?

ब्याज सामान्यतः किसी बैंक या कंपनी द्वारा अदा किया जाता है जहां आपने अपने बचाए हुए धन को जमा किया है।

SCERT DELHI

2. ब्याज कितने प्रकार का होता है?

सामान्यतः आप दो किस्म के ब्याज अर्जित करते हैं। साधारण ब्याज और चक्रवर्ती ब्याज।

3. साधारण ब्याज (SIMPLE INTEREST)

यदि ब्याज की गणना केवल मूलधन पर की जाती है, अर्थात पिछली अवधि में जमा राशि पर मिले ब्याज पर ब्याज नहीं निकाला जाता तो उसे साधारण ब्याज कहते हैं।

साधारण ब्याज की राशि निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करती है:

- मूलधन (Principal)
- ब्याज की दर (Rate of Interest)
- समयावधि (Length of Time)

जमा की अवधि पूरी होने पर एक जमाकर्ता के पास निम्नलिखित विकल्प होते हैं:

- मूलधन एवं ब्याज वापिस ले लेना
- मूलधन एवं ब्याज दोनों को पुनः जमा कर देना
- मूलधन फिर से जमा कर देना और ब्याज ले लेना

साधारण ब्याज निकालने के लिए सूत्र या फार्मूला निम्नलिखित है:

$$\textbf{ब्याज} = \frac{\text{मूलधन} \times \text{ब्याज की दर} \times \text{समय (वर्षों में)}}{100}$$

$$\textbf{Interest} = \frac{\text{Principal} \times \text{Rate of Interest} \times \text{Time (in years)}}{100}$$

यदि तीन वर्ष पहले ₹1,000, 8 प्रतिशत ब्याज दर पर जमा किए गए थे तो ब्याज एवं कुल राशि निम्न प्रकार होगी

$$\textbf{ब्याज} = \frac{₹1{,}000 \times 8 \times 3}{100} = ₹240$$

कुल राशि = मूलधन + ब्याज = ₹1,000 + ₹240 = ₹1,240

Amount = Principal + Amount Interest = ₹1,000+ ₹240 = ₹1,240

SCERT DELHI

ii चक्रवृद्धि ब्याज (COMPOUND INTEREST)

यदि ब्याज की गणना मूलधन एवं संचित ब्याज दोनों पर की जाती है तो उसे चकवृद्धि ब्याज कहते हैं। चकवृद्धि ब्याज निकालने के लिए सूत्र या फार्मूला निम्नलिखित है:

$$\text{राशि } (A) = P\,(1 + r/n)^{nt}$$

यहाँ, 'P' = मूलधन; r = वार्षिक ब्याज दर; t = समय (वर्षों में); n = प्रति वर्ष ब्याज चक्रवृद्धि की संख्या (एक वर्ष में कितनी बार चक्रवृद्धि होगी)

Compound Interest = Amount - Principal

यदि तीन वर्ष पहले 8% ब्याज दर पर 1,000 रुपये जमा किए गए थे तो अब यानि तीन वर्ष उपरांत ब्याज एवं कुल राशि निम्न होगी: (यदि चक्रवृद्धि वार्षिक है)

चक्रवृद्धि ब्याज	$P\,(1 + r/100)^{n} - P$
राशि	$1,000\,(1 + 8/100)^{3}$
	$1,000\,(1 + .08)^{3}$ or $1,000\,(1.08)^{3}$
	1,000 x 1.08 x 1.08 x 1.08
	1,000 x 1.2597
राशि (Amount)	₹ 1,259.7 (approx.)

चक्रवृद्धि ब्याज =	राशि - मूलधन	= 1,259.7 – 1,000 = ₹259.7

यदि तीन वर्ष पहले 8% ब्याज दर पर 1,000 रुपये जमा किए गए थे तो अब यानि तीन वर्ष उपरांत ब्याज एवं कुल राशि निम्न होगी: (यदि चक्रवृद्धि अर्द्धवार्षिक है, वर्ष में दो बार, अतः n=2) (Compounded Half Yearly means twice a year. So, n=2) & दर= 4%

राशि	$P\,(1 + r/100)^{nt}$
राशि	$= 1,000\,(1 + 4/100)^{2 \times 3}$
	= 1,000 (1 + .04)6 or 1,000(1.04)6
	= 1,000 x 1.04 x 1.04 x 1.04 x 1.04 x 1.04 x 1.04
	= 1,000 x 1.2653
राशि (Amount)	= ₹ 1,265.3 (approx.)

चक्रवृद्धि ब्याज =	राशि - मूलधन	= 1,265.3 – 1,000 = ₹265.3

SCERT DELHI

चक्रवृद्धि ब्याज लंबे समय में बचतों को अधिक प्रभावशाली ढंग से बढ़ाने में मदद करता है। साधारण ब्याज के मुकाबले में चक्रवृद्धि ब्याज में कभी-कभी हमे विस्मित कर देने या आश्चर्य में डाल देने वाला अंतर नज़र आता है। क्योंकि उसी मूलधन पर, उसी ब्याज दर, से चक्रवृद्धि ब्याज विधि से लंबे समय में काफी अधिक ब्याज मिलता है विशेषतया यदि चक्रवृद्धि दर (compounding frequency/rate) अधिक हो।

मूलधन = 10,000; ब्याज दर = 8% प्रतिवर्ष;

जमा अवधि (वर्ष)	साधारण ब्याज विधि (₹)	चक्रवृद्धि ब्याज विधि (₹)	चक्रवृद्धि ब्याज विधि (₹)	चक्रवृद्धि ब्याज विधि (₹)
		वार्षिक चक्रवृद्धि	अर्द्धवार्षिक चक्रवृद्धि	त्रैमासिक चक्रवृद्धि
1	800	800	816	824
2	1,600	1,664	1,699	1,717
3	2,400	2,597	2,653	2,682
4	3,200	3,604	3,686	3,728
5	4,000	4,693	4,802	4,859
10	8,000	11,583	11,911	12,080
20	16,000	36,610	38,010	38,754

स्वयं सीखे

उपरोक्त तालिका में दर्शाया गए ब्याज की गणना, प्ले स्टोर पर उपलब्ध निम्नलिखित ऐप के द्वारा भी की जा सकती है जिसका लिंक नीचे दिया गया है:

https://play.google.com/store/apps/details?id=com.roja.easyinterestcalculator

इस ऐप को खोलने के बाद आपको निम्न स्क्रीन मिलेगी:

इस स्क्रीन पर इन चरणों का पालन करें

2. Amount कॉलम में राशि (रुपया) भरें। उदाहरण के लिए 10,000 रुपया।
3. "Interest category (ब्याज श्रेणी)" कॉलम में "Simple Interest (साधारण ब्याज)" या "Compound Interest (चक्रवृद्धि ब्याज)" का चयन करें।
4. "Interest Type(ब्याज प्रकार)" कॉलम में percentage (प्रतिशत) का चयन करें।
5. "Interest Rate" कॉलम में percentage का चयन करने के बाद पर्सेंटेज भरें। उदाहरण के लिए 8%।
6. Dates (तिथि) या Duration(अवधि) पे क्लिक करें।
7. Dates (तिथि) या Duration(अवधि) को भरें।
8. Calculate पर क्लिक करें।
9. अब आप स्क्रीन पर मूलधन और ब्याज की राशि पाएंगे।
10. ऊपर दी गई तालिका के अनुसार तुलना करें।

क्या आप इससे "मिश्रित धन" की गणना कर सकते है?

संकेत: मूलधन + ब्याज

प्रयोज्य आय = कुल आय – आयकर
Disposable Income = Total Income – Income Tax

"72 का नियम" अर्थात दुगुना होने की अवधि

हम सभी बचतकर्ता यह जानने के इच्छुक होते हैं कि यदि कुछ धनराशि बैंक या किसी अन्य संस्थान में जमा करें तो कितने समय में वह धन दुगुना हो जाएगा।

यदि आज आप 1,000 रुपए बचाते तो यह राशि कितने समय में 2,000 रुपए हो जाएंगे। यह चक्रवृद्धि ब्याज और 72 का नियम कहे जाने वाले कारक पर निर्भर करता है।

'72 का नियम' कहता है की 'ब्याज की दर' को 72 से भाग करके आप एक अनुमान लगा सकते हैं कि प्रारंभिक बचत के दुगुना होने में कितना समय लगेगा।

उदाहरण: चक्रवृद्धि ब्याज दर 9% है; प्रारंभिक बचत 100 रुपए है।

9% की चक्रवृद्धि ब्याज दर से 100 रुपए के 200 रुपए होने में 72/9 = 8 वर्ष लगेंगे।

"आपने क्या सीखा"?

यदि हम बचत करने लायक है और धन को बैंक में रखा जाए तो हमें ब्याज मिलेगा। इस तरह समय के साथ धन बढ़ता है। इस धन का 'निवेश' भी कहा जा सकता है जो हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होगा।

यहाँ यह भी ध्यान रखें की सभी निवेश को किसी बैंक में ही रखना जरूरी नहीं। यह मूल्यवान धातु जैसे सोना, चांदी एवं बीमा आदि में भी हो सकता हैं।

सीखने का सुदृढ़ीकरण (Learning Reinforcements)

वाद-विवाद	1. सिर्फ खाने,कपड़े, शिक्षा खर्चो में कमी से ही धन की बचत संभव है ।
क्या आप जानते है	1. महिलाओं के लिए केंद्र सरकार के द्वारा 31 मार्च, 2023 को एक विशेष बचत-योजना "महिला सम्मान बचत प्रमाण पत्र, 2023" लागू की गयी है । 2. अपने नजदीकी क्षेत्र में किसी भी बैंक में जाएँ और पता लगाए कि ऐसी कोई भी जमा राशि कितने समय में दुगुनी हो जाती है । (संकेत: " 72 का नियम")
खोजे और जांच करें	1. अपने नजदीकी क्षेत्र में किसी भी डाक घर में जाएँ और पता लगाएँ कि ऐसी कोई भी जमा राशि कितने समय में दुगुनी हो जाती है । 2. प्रश्न संख्या 1 और 2 के आधार पर तुलनात्मक तालिका बनाये।

SCERT DELHI

सारांश (SUMMARY)

'बचत', आय का वह अंश है जो विभिन्न व्ययों पर खर्च करने के बाद शेष बच जाता है ।

प्रयोज्य आय = कुल खर्च + बचत

यदि ब्याज की गणना केवल मूलधन पर की जाती है, अर्थात पिछली अवधि में जमा राशि पर मिले ब्याज पर ब्याज नहीं निकाला जाता तो उसे साधारण ब्याज कहते हैं।

यदि ब्याज की गणना मूलधन एवं संचित ब्याज दोनों पर की जाती है तो उसे चकवृद्धि ब्याज कहते हैं।

'72 का नियम' कहता है की 'ब्याज की दर' को 72 से भाग करके आप एक अनुमान लगा सकते हैं कि प्रारंभिक बचत के दुगना होने में कितना समय लगेगा।

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

सही विकल्प चुनें-

1. यदि एक बैंक द्वारा 8 प्रतिशत की दर से चक्रवृद्धि ब्याज दिया जाता है तो "72 के नियम" के अनुसार धन दुगुना होने में कितने वर्ष लगेंगे?

   (क) 9 वर्ष (ख) 8 वर्ष

   (ग) 6 वर्ष (घ) 12 वर्ष

2. मोहन, एक निवेशक है। अपने धन संबंधी निवेश लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मोहन को निम्नलिखित में से किन कारकों को ध्यान में रखना होगा।

   (क) निवेश की मूलधन राशि (ख) निवेश पर मिलने वाला ब्याज

   (ग) (क) और (ख) दोनों (घ) (क) और (ख) में से कोई नहीं

3. चक्रवृद्धि ब्याज का अर्थ है?

   (क) केवल मूलधन राशि

   (ख) प्रारंभिक मूलधन राशि पर अर्जित ब्याज

   (ग) मूलधन राशि पर अर्जित ब्याज और पहले से अर्जित ब्याज पर ब्याज

   (घ) इनमें से कोई नहीं

4. रमन ने केनरा बैंक में 10,000 रुपये का निवेश किया था। इस निवेश पर बैंक ने 8 प्रतिशत चक्रवृद्धि (वार्षिक) ब्याज का प्रस्ताव दिया था। 2 वर्ष बाद इस निवेश पर संभावित प्रतिफल की राशि होगी।

(क) 10,800 रुपये (ख) 11,664 रुपये

(ग) 11,600 रुपये (घ) 10,864 रुपये

5. तुषार की मासिक बचत 50,000 रुपये है। वह हर महीने 27,000 रुपये अपने उपभोग संबंधी विभिन्न आवश्यकताओं पर व्यय करता है। तुषार की मासिक प्रयोजय आय _____ है।

(क) 50,000 रुपये (ख) 27,000 रुपये

(ग) 23,000 रुपये (घ) 77,000 रुपये

6. दिए गए चित्र में किस अवधारणा को दर्शाया गया है?

(क) बचत (ख) आय

(ग) उपभोग (घ) प्रयोज्य आय

7. दिए गए चित्र में किस अवधारणा की गणना को दर्शाया गया है?

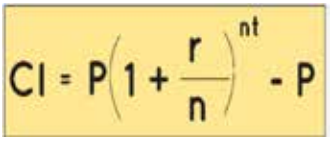

(क) चक्रवृद्धि ब्याज (ख) साधारण ब्याज

(ग) मूलधन (घ) परिपक्वता मूल्य

8. "72 का नियम" एक ऐसा तरीका है जिससे ये निर्धारित किया जा सकता है कि एक निश्चित ब्याज की दर पर बचत को _____ होना में कितना समय लगेगा।

(क) तिगुना (ख) दुगुना

(ग) चोगुना (घ) सात गुना

9. निम्नलिखित चित्र में किस अवधारणा की गणना को दर्शाया गया है?

(क) बचत (ख) आय

(ग) उपभोग (घ) प्रयोजय आय

10. ब्याज कितने प्रकार का होता है? उदाहरण सहित समझाएँ।

11. साधारण ब्याज एवं चक्रवृद्धि ब्याज में अंतर स्पष्ट करें। उदाहरण सहित समझाएँ।

❖❖❖

SCERT DELHI

इकाई - 9
लक्ष्य निर्धारित करना

उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत विद्यार्थी:

- लक्ष्य का अर्थ बता पाएंगे।
- लक्ष्य को निर्धारित कर चरणबद्ध तरीके से पहुँचने की प्रक्रिया बता पाएंगे।
- प्रभावशाली अथवा स्मार्ट लक्ष्य की अवधारणा स्पष्ट कर पाएंगे।

परिचय

लक्ष्य वह वांछित परिणाम या उद्देश्य हैं जिन्हें कोई व्यक्ति या संगठन प्राप्त करने का प्रयास करता है। लक्ष्य निर्धारित करने से दिशा, ध्यान और प्रेरणा मिलती है, और इसे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि करियर, शिक्षा, व्यक्तिगत विकास, स्वास्थ्य और रिश्तों पर लागू किया जा सकता है। अच्छी तरह से परिभाषित लक्ष्य विशिष्ट, मापने योग्य, प्राप्त करने योग्य, वास्तविक और समयबद्ध (SMART) होते हैं, जो स्पष्ट प्रगति ट्रैकिंग और प्राप्त होने पर उपलब्धि की भावना की अनुमति देते हैं।

लक्ष्य कैसे निर्धारित करें?

- लक्ष्य स्पष्ट होना चाहिए।
- लक्ष्य मापने योग्य होना चाहिए।
- लक्ष्य प्राप्त करने योग्य होना चाहिए।
- लक्ष्य वास्तविक होना चाहिए।
- लक्ष्य समयबद्ध होना चाहिए।

मुख्य शब्दावली

1. **लक्ष्य -** लक्ष्य भविष्य में वांछित परिणाम का एक विचार है जिसे एक निश्चित समय-सीमा में प्राप्त करने के लिए योजना बनाना और प्रयासरत होना है।

   लक्ष्य एक ऐसा साधन है जो हमारे जीवन में हमारी ज़रूरतों तथा इच्छाओं की पूर्ति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2. **अल्पकालीन लक्ष्य**

   अल्पकालिक लक्ष्य वह लक्ष्य है जिसे आप 12 महीने या उससे कम समय में प्राप्त कर सकते हैं। अर्थात जिन्हें आप निकट भविष्य में पाना चाहते हैं। निकट भविष्य का अर्थ एक दिन, एक सप्ताह, एक महीने या एक वर्ष भी हो सकता है।

   उदाहरण :

   - अगली तिमाही में टेस्ट स्कोर में 10% सुधार करना।
   - अगले 2 महीनों के लिए हर सप्ताह एक किताब के 5 अध्याय पढना।
   - अगले 2 सप्ताह के भीतर एक नई रेसिपी बनाना सीखना।

3. **दीर्घ-कालीन लक्ष्य**

   दीर्घकालीन लक्ष्य लंबी अवधि के लिए होता है और हम सब कभी न कभी दीर्घकालीन लक्ष्य बनाते हैं जो हमारे जीवन भर की आकांक्षा को दर्शाता है। दीर्घकालीन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समय और उचित योजना बनाना आवश्यक है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कई अल्पकालीन लक्ष्य निर्धारित किए जा सकते हैं ताकि छोटे-छोटे कदम चलकर मंजिल तक पहुँच जा सके।

   उदाहरण :

   - अगले 10 वर्ष में अपना घर खरीदना और वित्तीय स्वतंत्रता हासिल करने के लिए पर्याप्त बचत करना।
   - एक किताब लिखना और अगले 5 वर्ष में उसे प्रकाशित करवाना ।
   - 10 साल के अंदर खुद का व्यवसाय शुरू करना।

SCERT DELHI

स्मार्ट लक्ष्य (SMART GOAL)

SMART एक संक्षिप्त नाम है जिसका अर्थ है विशिष्ट, मापने योग्य, प्राप्त करने योग्य, प्रासंगिक और समयबद्ध। यह एक ढांचा है जिसका उपयोग विशिष्ट लक्ष्यों को अधिक ठोस, कार्रवाई योग्य और ट्रैक करने योग्य बनाकर उन्हें निर्धारित करने और प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

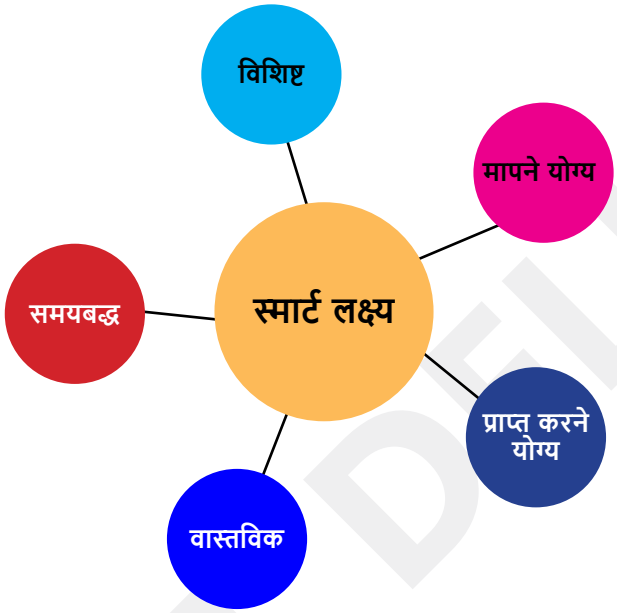

विशिष्ट (Specific): स्पष्ट रूप से परिभाषित करें कि आप क्या प्राप्त करना चाहते हैं जैसे **:** मैं गणित में अपने ग्रेड में सुधार करना चाहता हूँ।

मापने योग्य (Measurable): अपने लक्ष्य को निर्धारित करें ताकि प्रगति को मापा जा सके। मैं अगले सेमेस्टर के अंत तक गणित में अपने औसत स्कोर को 70% से बढ़ाकर 85% करूँगा।

प्राप्त करने योग्य (Attainable): सुनिश्चित करें कि लक्ष्य प्राप्त करने योग्य है जैसे : मैं सप्ताह में दो बार अतिरिक्त गणित कक्षाओं में भाग लेकर, सभी दिए गए होमवर्क को पूरा करके और हर दिन 30 मिनट के लिए गणित की समस्याओं का अभ्यास करके इसे प्राप्त करूँगा।

वास्तविक (Realistic) : निर्धारित लक्ष्य यथार्थवादी होना चाहिए इसे प्राप्त करने कि सम्भावना होनी चाहिए जैसे: मेरे लिए अपने गणित ग्रेड में सुधार करना महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे मुझे एक अच्छे कॉलेज में प्रवेश पाने और विज्ञान में अपने सपनों का करियर बनाने में मदद मिलेगी।

समयबद्ध (Time Bound): लक्ष्य को पूरा करने के लिए एक विशिष्ट समय सीमा या समय-सीमा निर्धारित करें जैसे: मैं अगले 4 महीनों के भीतर गणित में अपने औसत स्कोर को 85% प्राप्त करूँगा।

© NCERT DELHI

लक्ष्यों का महत्व

1. **स्पष्टता और दिशा:** लक्ष्य स्पष्ट दिशा और उद्देश्य देते हैं।
2. **प्रेरणा:** लक्ष्य कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
3. **केन्द्रित रहना** : लक्ष्य प्रयासों और संसाधनों को प्राथमिकता देने में मदद करते हैं।
4. **मापन:** लक्ष्य प्रगति और उपलब्धि के लिए एक बेंचमार्क प्रदान करते हैं।
5. **व्यक्तिगत विकास:** लक्ष्य प्राप्त करने से आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान बढ़ता है।

लक्ष्य प्राप्ति के चरण-

- लक्ष्य मूल्यों के अनुरूप हो।
- लक्ष्य को सकारात्मक सोच के साथ प्राप्त करने की कोशिश की जाए।
- अल्पकालीन लक्ष्य दीर्घकालीन लक्ष्यों को प्राप्त करने में कारगर साबित हो-जैसे प्रतिमाह की गयी छोटी बचत ही वर्ष के अंत में आपकी लक्ष्य प्राप्ति में मदद करेंगी
- दो संबन्धित लक्ष्यों में विरोधाभास नहीं होना चाहिए। जैसे बड़ी बचत के लिए छोटी बचतें अति आवश्यक हैं। जैसे स्वस्थ्य रहने के लिए पौष्टिक आहार आवश्यक हैं।
- अपनी प्राथमिकताएं निर्धारित कर उन पर काम करें।
- बाधाओं का सामना कर आगे बढ़ते रहे।

सारांश (SUMMARY)

स्मार्ट लक्ष्य निर्धारित करके, व्यक्ति सफलता के लिए एक स्पष्ट रोडमैप बना सकते हैं, प्रगति को ट्रैक कर सकते हैं और अपने इच्छित परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रेरित रह सकते हैं। व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के लिए लक्ष्य आवश्यक हैं, जो व्यक्तियों को उद्देश्य की भावना विकसित करने, आत्मविश्वास बनाने और अपनी पूरी क्षमता से काम करने में मदद करते हैं। शिक्षा, करियर, निजी जीवन या खेल में, लक्ष्य निर्धारित करने से व्यक्तियों को केंद्रित रहने, चुनौतियों पर काबू पाने और उपलब्धियों को प्राप्त करने में मदद मिलती है। लक्ष्य निर्धारित करने से व्यक्ति अपने भविष्य को नियंत्रित कर सकते हैं, सार्थक प्रगति कर सकते हैं और सफलता की नई ऊंचाइयों को छू सकते हैं।

© NCERT DELHI

सीखने का सुदृढ़ीकरण (LEARNING REINFORCEMENTS)

वाद-विवाद	1. स्मार्ट लक्ष्य जरूरी है किसी भी लक्ष्य तक पहुंचने के लिए। 2. स्मार्ट लक्ष्य के लिए समय-सीमा निर्धारित होनी चाहिए। 3. अल्पकालीन लक्ष्य से दीर्घ कालीन लक्ष्य तक पहुंच सकते है।
क्या आप जानते है	1. स्मार्ट लक्ष्य (SMART GOAL) किसी भी लक्ष्य तक पहुंचने में मदद करते है। 2. हमें अपना लक्ष्य का निर्धारण सदैव अपने क्षमता के अनुसार रखना चाहिए।
खोजे और जांच करें	1. किसी भी निर्धारित लक्ष्य के मापने के क्या-क्या तंत्र (Measurable tools) होना चाहिए? 2. वित्तीय लक्ष्यो में जोखिमों का कम करने के लिए क्या-क्या सावधानी होना चाहिए?

कार्यपत्रक (WORKSHEET-1)

I. सही विकल्प चुनें-

1. लक्ष्य -प्राप्ति के लिए _____ द्वारा समर्थित होना चाहिए।

   (क) मार्गदर्शन (ख) योजना

   (ग) समय (घ) विशेष्य

2. लक्ष्य सदैव _____ होना चाहिए ताकि प्राप्त करने के लिए योजना बनाने में मदद करते है।

   (क) सकेंद्रित (ख) सुस्त

   (ग) सक्रिय (घ) तेजी

3. लक्ष्य आपके _____ से आते है।

   (क) विचारों से (ख) मूल्यों से

   (ग) तथ्यों से (घ) बजट से

SCERT DELHI

II. सही(✓) या गलत(×) बताएँ

1. अल्पकालीन लक्ष्य, दीर्घकालीन लक्ष्यों पर निर्भर करता है।
2. लक्ष्य, आपके मूल्यों से आते है।
3. लक्ष्य का सदैव निर्धारण समयबद्ध होना चाहिए।

III. निम्नलिखित का एक शब्द या एक वाक्य में उत्तर दें

1. अल्पकालीन लक्ष्य तथा दीर्घकालीन लक्ष्य में अंतर बताये। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करें?
2. किसी लक्ष्य के प्राप्ति के लिए समयबद्ध क्यों होना चाहिए?
3. लक्ष्य प्राप्ति के चरणबद्ध तरीके को बताएं?
4. लक्षय निर्धारण के तीन महत्वपूर्ण कारक लिखिए?

IV. निम्नलिखित का संक्षेप में उत्तर दीजिए

1. लक्ष्य किस तरह से प्राप्त किए जाते हैं?
2. स्मार्ट लक्ष्य (Smart goal) की क्या-क्या विशेषताएँ होती है?
3. वित्तीय लक्ष्य को एक तालिका के माध्यम से समझाएँ।

❖❖❖

SCERT DELHI

इकाई - 10
व्यवस्थित बचत एवं निवेश

उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत विद्यार्थी:

- बचत का अर्थ बता पाएंगे।
- बचत और निवेश के बीच अंतर बता पाएंगे।
- धन के सामयिक मूल्य की व्याख्या कर पाएंगे।
- ब्याज की अवधारणा स्पष्ट कर पाएंगे।
- व्यवस्थित निवेश योजना परिभाषित कर पाएंगे।
- एसआईपी की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कर पाएंगे।

परिचय

"खर्च करने के बाद जो बचता है उसे बचाएं नहीं, बल्कि बचत के बाद जो बचे उसे खर्च करें।" - वारेन बफेट

बचत आय का वह हिस्सा है जो वर्तमान व्यय पर खर्च नहीं किया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह भविष्य में उपयोग के लिए अलग रखा गया धन है और जो तुरंत खर्च नहीं किया जाता है। पैसा बचाना एक स्वस्थ आदत है जो दिन-ब-दिन विकसित होती है। जब तक यह एक आदत न बन जाए तब तक आपको बचत का भरपूर अभ्यास आज से ही शुरू कर देना चाहिए।

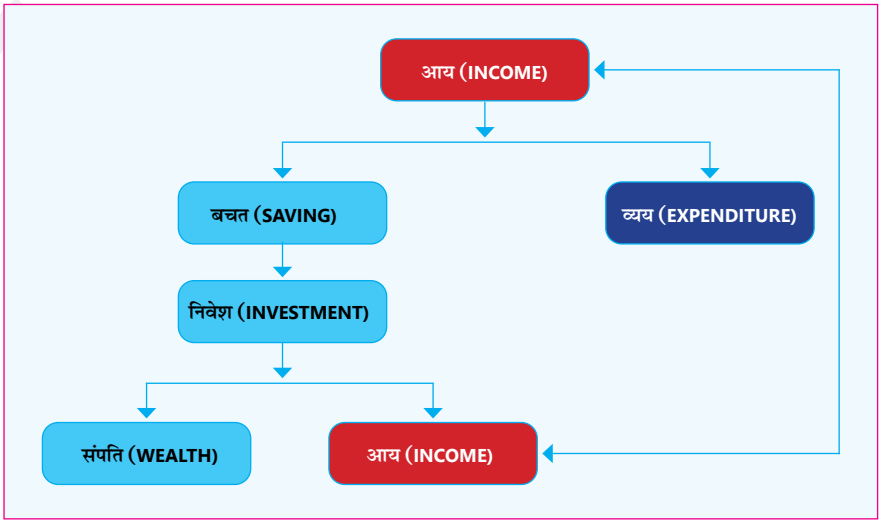

"बचत" यह शब्द अरबी शब्द "हुर्र" से आया है और इसका अर्थ है **"स्वतंत्र स्थिति"**। यह एक गुलाम या कैदी को संदर्भित करता है जो अपनी स्वतंत्रता को पुनः प्राप्त करने के लिए बचत करता था। शुरू से ही, बचत एक बेहतर भविष्य निर्माण करने की स्वतंत्रता के विचार से जुड़ती है।

"धन का समय मूल्य" इस अवधारणा को संदर्भित करता है कि आज किसी धनराशि का मूल्य भविष्य की तारीख में उसी धनराशि के मूल्य से अधिक है।

निवेश का तात्पर्य भविष्य के लाभों के लिए संपत्ति खरीदने के लिए आपकी बचत के आवंटन से है।

संपत्तियाँ दो प्रकार की होती हैं: वास्तविक या भौतिक संपत्तियाँ और वित्तीय संपत्तियाँ

मुख्य शब्दावली

1. बचत (SAVING)

भविष्य में उपयोग के लिए अलग रखा गया धन है और जो तुरंत खर्च नहीं किया जाता है।

2. निवेश (INVESTMENT)

निवेश का अर्थ है "भविष्य में लाभ प्राप्त करने की आशा के साथ अपनी बचत को ऐसी परिसंपति में लगाना जिसका मूल्य बढ़ सकता है या आय उत्पन्न हो सकती है या दोनों हो सकते है निवेश कहलाता है" निवेश का उदाहरण- आप एक घर खरीदते है और उसे किराये पर देने पर आपको किराये के रूप में आय प्राप्त होगी तथा घर का मूल्य भी बढ़ता रहेगा।

3. **सट्टेबाजी (SPECULATION)**

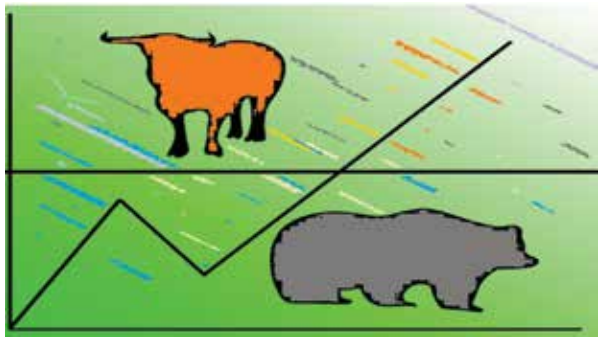

सट्टेबाजी का अर्थ है बहुत कम अवधि के लिए निवेश करना। सट्टेबाजी में महत्वपूर्ण रिटर्न की उम्मीद में उच्च जोखिम वाले वित्तीय उपकरण का व्यापार करना शामिल है। इसका मकसद बाजार में उतार-चढ़ाव से अधिकतम लाभ उठाना है। सट्टेबाज उन बाजारों में प्रचलित हैं जहां प्रतिभूतियों की कीमत में उतार-चढ़ाव अत्यधिक बार-बार और अस्थिर होता है। सट्टेबाजी में दो प्रकार के निवेशक होते हैं: तेजी वाले (Bulls) और मंदी वाले (Bears)।

4. धन का समय मूल्य (TIME VALUE OF MONEY)

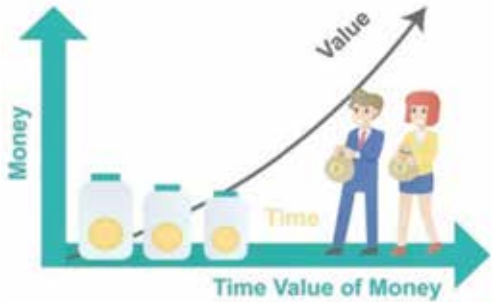

Source: https://www.freepik.com/

धन का समय मूल्य इस अवधारणा को संदर्भित करता है कि आज किसी धनराशि का मूल्य भविष्य की तारीख में उसी धनराशि के मूल्य से अधिक है। पैसे का वास्तव में एक समय मूल्य होता है और जितना अधिक आप इसे खर्च करने के लिए इंतजार करेंगे, यह उतना ही अधिक मूल्यवान हो जाएगा।

5. ब्याज (INTEREST)

https://learning.treasurers.org/resources/how-to-apply-tiered-interest-rates

ब्याज दर वह राशि है जो ऋणदाता द्वारा उधारकर्ता से मूल राशि से अधिक ली जाती है। ब्याज उसे धारण करने वाले व्यक्ति द्वारा उपयोग की गई धनराशि पर अर्जित आय है।

6. व्यवस्थित निवेश योजना (SYSTEMATIC INVESTMENT PLAN)

Source: https://www.freepik.com/

व्यवस्थित निवेश योजना को उन योजनाओं में निवेश करने की एक विधि के रूप में परिभाषित किया गया है जहां एक निवेशक एक बार निवेश करने के बजाय नियमित अंतराल पर आमतौर पर मासिक या त्रैमासिक पर एक निश्चित राशि का निवेश करता है।

7. नेट एसेट वैल्यू (NET ASSET VALUE)

NAV का मतलब नेट एसेट वैल्यू है। म्यूचुअल फंड योजना का प्रदर्शन उसकी प्रति यूनिट एनएवी द्वारा दर्शाया जाता है। प्रति यूनिट एनएवी किसी योजना की प्रतिभूतियों के बाजार मूल्य को किसी निश्चित तिथि पर योजना की इकाइयों की कुल संख्या से विभाजित किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी म्यूचुअल फंड योजना की प्रतिभूतियों का बाजार मूल्य ₹200 लाख है और म्यूचुअल फंड ने निवेशकों को ₹10 प्रत्येक की 10 लाख इकाइयां जारी की हैं, तो फंड की प्रति यूनिट एनएवी ₹20 (यानी, ₹) है 200 लाख/10 लाख).

बचत क्यों? (WHY SAVE?)

बचत का मतलब भविष्य की वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आय का एक निश्चित हिस्सा अलग रखना है। बचत वह है जो खर्चों के बाद आय से बचती है, जिसकी गणना आय घटा खर्चों के रूप में की जा सकती है।

बचत = आय – व्यय

किसी व्यक्ति की वित्तीय भलाई, दीर्घकालिक लक्ष्य और वित्तीय सुरक्षा हासिल करने के लिए बचत महत्वपूर्ण है। इससे मन की शांति का एहसास भी होता है। यह अक्सर कहा जाता है कि **"खर्च करने के बाद जो बचता है उसे मत बचाओ, बचत के बाद जो बचता है उसे खर्च करो।"**

source: https://investor.sebi.gov.in/moneymatters-whysave.html

बचत शुरू करने का कोई सही समय नहीं है, जितनी जल्दी हम शुरुआत करेंगे उतना बेहतर होगा।

बचत क्यों महत्वपूर्ण है इसके कुछ प्रमुख कारण

बचत हमें अप्रत्याशित खर्चों, जैसे चिकित्सा आपात स्थिति, व्यावसायिक हानि आदि जोखिम उठाने के लिए एक **'आपातकालीन निधि'** बनाने में सक्षम बनाती है।

वित्तीय लक्ष्यों को पूरा करने के लिए जैसे नया घर खरीदना, बच्चों की उच्च शिक्षा की लागत को पूरा करना, सेवानिवृत्ति की योजना बनाना इत्यादि।

बचत और निवेश के बीच अंतर (DIFFERENCE BETWEEN SAVING AND INVESTMENT)

बचत निवेश का पहला कदम है। बचत के बिना निवेश संभव नहीं है। कभी-कभी बचत और निवेश का प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है। लेकिन फिर भी इनमें अंतर है:

आधार	बचत	निवेश
अर्थ	बचत का अर्थ है खर्चों पर आय की अधिकता।	निवेश का अर्थ है भविष्य के लाभ के लिए संपत्ति खरीदना।
उद्देश्य	बचत भविष्य के खर्चों या निवेश को पूरा करने के लिए की जाती है।	निवेश धन पैदा करने और भविष्य में आय बढ़ाने के लिए किया जाता है।
समय सीमा	बचत कम अवधि के लिए होती है।	निवेश हमेशा लंबी अवधि के लिए होता है|
प्रतिफल	बचत का प्रतिफल निश्चित रहता है	निवेश पर रिटर्न मांग और बाजार की स्थितियों जैसे कारणों से परिवर्तनशील है।
जोखिम	बचत में कोई जोखिम नहीं या शून्य है।	निवेश के मूल्य में उतार-चढ़ाव के कारण निवेश में जोखिम होता है।

निवेश (INVESTMENT)

निवेश का तात्पर्य भविष्य के लाभों के लिए संपत्ति खरीदने के लिए आपकी बचत के आवंटन से है। संपत्तियाँ दो प्रकार की होती हैं: वास्तविक या भौतिक संपत्तियाँ और वित्तीय संपत्तियाँ। निम्नलिखित परिसंपत्तियों में निवेश किया जा सकता है:

वित्तीय संपत्तियाँ (FINANCIAL ASSETS) वास्तविक या भौतिक संपत्तियाँ (REAL OR PHYSICAL ASSETS)

वित्तीय संपत्तियाँ	वास्तविक या भौतिक संपत्तियाँ
• बैंकों और कंपनियों के पास जमा	• रियल एस्टेट
• सामान्य शेयर	• सोना
• प्राथमिकता शेयर	• चाँदी
• एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ)	• हीरे
• वैश्विक/अमेरिकी डिपॉजिटरी रसीदें	• कलाकृतियाँ/कलाकृतियाँ
• म्यूचुअल फंड्स	• टिकटों
• ऋण प्रतिभूतियाँ - डिबेंचर, बांड, वाणिज्यिक पत्र	• सिक्के
• डाकघर बचत प्रमाणपत्र	• प्राचीन वस्तुएँ

• सार्वजनिक भविष्य निधि	
• बीमा पॉलिसियां	

i निवेश क्यों? (WHY INVESTMENT?)

व्यक्ति निम्नलिखित उद्देश्य से निवेश करता है

- निवेश करने से समय के साथ आपकी संपत्ति में वृद्धि होती है, जिससे आप दीर्घकालिक वित्तीय लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।
- निवेश भविष्य के लिए सुरक्षा प्रदान कर सकता है, जिससे आप अप्रत्याशित खर्चों या वित्तीय चुनौतियों के लिए तैयार रहते हैं।
- निवेश करने से आपको सेवानिवृत्ति निधि बनाने में मदद मिलती है।
- निवेश करने से आपके पैसे को मुद्रास्फीति (Inflation) के साथ तालमेल रखने में मदद मिलती है, जिससे इसकी क्रय शक्ति बनी रहती है।
- निवेश करने से आपको वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद मिल सकती है, जिससे आप कर्ज़ और वित्तीय तनाव से मुक्त हो सकते हैं।

ii धन के समय मूल्य की अवधारणा [CONCEPT OF TIME VALUE OF MONEY (TVM)] –

धन का समय मूल्य (TVM) वित्त में एक मौलिक अवधारणा है जो बताती है कि आज प्राप्त एक रुपया भविष्य में प्राप्त एक रुपये से अधिक मूल्यवान है। ऐसा इसलिए है क्योंकि आज प्राप्त धन का निवेश किया जा सकता है, ब्याज कमाया जा सकता है या समय के साथ उसका मूल्य बढ़ सकता है।

TVM अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि:

1. **धन की एक अवसर लागत होती है:** जब आपके पास धन होता है, तो आप उसका निवेश कर सकते हैं, ब्याज कमा सकते हैं या उसका उपयोग कुछ मूल्यवान वस्तुएं खरीदने के लिए कर सकते हैं।
2. **मुद्रास्फीति:** समय के साथ कीमतें बढ़ती हैं, जिससे धन की क्रय शक्ति कम हो जाती है।
3. **जोखिम और अनिश्चितता:** भविष्य अनिश्चित है, और एक जोखिम है कि धन प्राप्त न हो या उसका मूल्य उतना न हो जितना अपेक्षित था।

SCERT DELHI

TVM की गणना निम्न सूत्र का उपयोग करके की जाती है:

FV = PV x (1 + r)^n

जहाँ:

FV = भविष्य का मूल्य

PV = वर्तमान मूल्य

r = ब्याज दर या छूट दर

n = अवधियों की संख्या (वर्ष, महीने, आदि)

TVM अवधारणा वित्तीय निर्णय लेने में आवश्यक है, जैसे:

- निवेश
- उधार लेना
- बचत
- सेवानिवृत्ति योजना
- परियोजना मूल्यांकन

यह आपको समय के साथ पैसे के मूल्य को समझने और वित्तीय निवेश और व्यय के बारे में सूचित निर्णय लेने में मदद करता है।

iii निवेश पर रिटर्न की गणना (CALCULATION OF RETURN ON INVESTMENT)

निवेश पर प्रतिफल = ((कीमत का बिक्री मूल्य - खरीद मूल्य) + नकद प्राप्त)/(खरीद मूल्य)× 100

उदाहरण: श्री ओम मिश्रा अवेब लिमिटेड का शेयर 200 रुपए में खरीदता है और एक साल बाद उस शेयर को 220 रुपए में बेच देता हैं। इस अवधि के दौरन उसे 10 रुपए का लाभांश प्राप्त होता है। श्री ओम मिश्रा को होने वाले प्रतिफल की गणना कीजिए।

प्रतिफल = ((220 - 200) + 10)/(200)× 100=(30)/(200)× 100 = 15%

ब्याज (INTEREST)

ब्याज वह राशि है जो ऋणदाता द्वारा उधारकर्ता से मूलधन का निश्चित प्रतिशत एक शुल्क के रूप में निश्चित समय अवधि के लिए उस राशि/मूलधन को उपयोग करने के प्रतिफल में लिया जाता हैं।

SCERT DELHI

सीधे शब्दो में कहे तो किसी ओर के द्वारा अर्जित धन को उपयोग करने के बदले में दिया गया शुल्क ब्याज है जो की लेनदार और देनदार के बीच में पहले से निश्चित कर लिया जाता है जैसे धीरज ने विनीता को 10000 रूपये दो वर्ष के लिए 6 प्रतिशत ब्याज पर उधार दिये।

₹10000 x 6 x 2 / 100 = ₹1200

विनीता धीरज को दो वर्ष उपरांत ₹10000 के साथ ₹1200 उस धन को उपयोग करने के शुल्क के रूप में वापिस करेगी।

प्राप्तकर्ता के संदर्भ में, जो व्यक्ति किसी बैंक या वित्तीय संस्थान में पैसा जमा करता है, वह पैसे के समय मूल्य पर विचार करते हुए अतिरिक्त आय भी अर्जित करता है, जिसे जमाकर्ता द्वारा प्राप्त ब्याज कहा जाता है।

ब्याज दो प्रकार का होता है

साधारण ब्याज: साधारण ब्याज की गणना केवल उधार ली गई मूल राशि पर की जाती है।

चक्रवृद्धि ब्याज: चक्रवृद्धि ब्याज की गणना प्रत्येक अवधि में मूलधन और संचित ब्याज पर की जाती है।

व्यवस्थित निवेश योजना (SYSTEMATIC INVESTMENT PLAN)

व्यवस्थित निवेश योजना, तिमाही या मासिक जैसे नियमित अंतराल पर एक निश्चित राशि का निवेश करने की एक निवेश रणनीति है। यह धन निर्माण और पूंजी वृद्धि के लिए एक सरल और आसान निवेश रणनीति है।

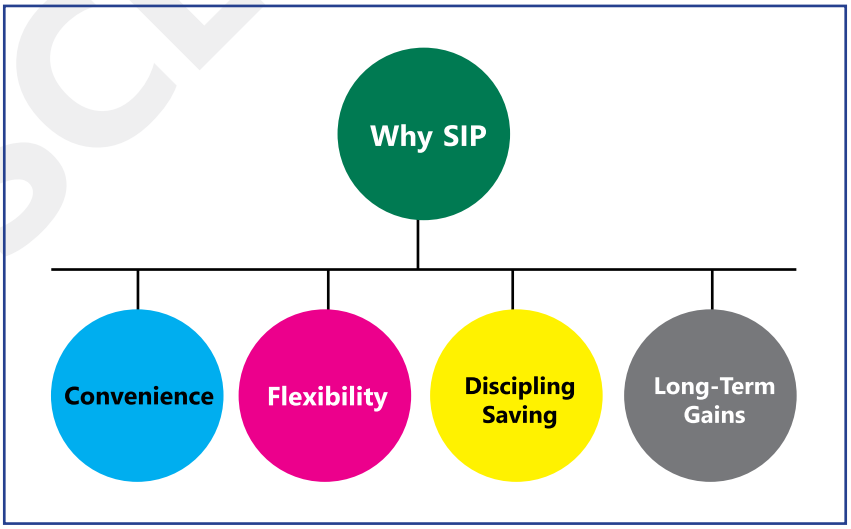

आप 100 या 500 रुपये की छोटी रकम के रूप में निवेश शुरू कर सकते हैं।

- यह निवेशकों को अपनी पसंद के अनुसार कोई भी राशि निवेश करने की सुविधा देता है।
- इससे आपको बचत और निवेश की अनुशासित आदत बनाने में मदद मिलती है, जो दीर्घकालिक वित्तीय सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।
- एसआईपी व्यक्तियों को प्रतिभूतियों के विविध पोर्टफोलियो में निवेश करने की अनुमति देता है, जिससे एकल सुरक्षा में निवेश का जोखिम कम हो जाता है।
- लंबी अवधि के निवेश के लिए एसआईपी एक बढ़िया विकल्प है, क्योंकि वे व्यक्तियों को चक्रवृद्धि की शक्ति का लाभ उठाते हुए, लंबी अवधि तक नियमित रूप से निवेश करने की अनुमति देते हैं।
- कुछ एसआईपी योजनाएं निवेशकों को कर लाभ प्रदान करती हैं।

सारांश (SUMMARY)

बचत आय का वह हिस्सा है जो वर्तमान व्यय पर खर्च नहीं किया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह भविष्य में उपयोग के लिए अलग रखा गया धन है और तुरंत खर्च नहीं किया जाता है। निवेश भविष्य में लाभ प्राप्त करने की आशा के साथ धन के नियोजन की एक प्रक्रिया है। अल्पावधि निवेश को सट्टेबाजी कहा जाता है। व्यवस्थित निवेश योजना नियमित अंतराल पर परिसंपत्तियों में निश्चित मात्रा में निवेश करने की एक निवेश रणनीति है। लंबी अवधि के निवेश के लिए एस.आई.पी एक बढ़िया विकल्प है, क्योंकि वे व्यक्तियों को चक्रवृद्धि की शक्ति का लाभ उठाते हुए, लंबी अवधि तक नियमित रूप से निवेश करने की अनुमति देते हैं। कुछ एसआईपी योजनाएं निवेशकों को कर लाभ प्रदान करती हैं।

सीखने का सुदृढ़ीकरण (LEARNING REINFORCEMENTS)

वाद-विवाद	1. एकमुश्त निवेश करना अच्छा विकल्प है। 2. व्यवस्थित निवेश योजना निवेश का एक अच्छा विकल्प है।
क्या आप जानते है	भारत में भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) निवेशकों के हितो की रक्षा कर्ता है। यह निष्पक्ष और पारदर्शी निवेश को बढ़ावा देने तथा अनुचित निवेश प्रथाओं पर रोक लगाने हेतु समय-समय पर दिशा निर्देश जारी करता है।

खोजे और जांच करें	निवेशक के लिए निवेश विकल्प क्या हैं? 1. छात्र निवेश के उन विकल्पों की सूची बनाएं जहां वे भविष्य में निवेश करना चाहते हैं। 2. छात्र उन संगठनों की सूची तैयार करें जहाँ वे अपना पैसा निवेश कर सकते हैं। 3. सेबी (SEBI) का गठन कब हुआ। सेबी के क्या-क्या कार्य है।

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

I सही विकल्प चुनें-

1. _____ निवेश का पहला चरण है।

   (क) नकद (ख) सोना

   (ग) प्रकार (घ) बचत

2. निम्नलिखित में से कौन सा वास्तविक संपत्ति का उदाहरण है?

   (क) सावधि जमा (ख) डिबेंचर

   (ग) भविष्य निधि निवेश (घ) हीरा

3. **कथन 1:** सट्टेबाज किसी परिसंपत्ति की कीमत में उतार-चढ़ाव का उपयोग करता है और इसमें जोखिम कम होता है।

   कथन 2: सट्टेबाजी में कुछ रिटर्न के लिए छोटी अवधि के लिए धन का निवेश किया जाता है।

(क) दोनों कथन सत्य हैं। (ख) दोनों कथन गलत हैं।

(ग) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सत्य है। (घ) कथन 2 गलत है, लेकिन कथन 1 सत्य है।

4. बचत का प्रतिफल _____ है।

   (क) निश्चित (ख) परिवर्तनीय

   (ग) अस्थिर (घ) शून्य

SCERT DELHI

5. वित्तीय संपत्तियों या वास्तविक संपत्तियों में धन के नियोजन को _____ के रूप में जाना जाता है।

(क) बचत (ख) आय

(ग) निवेश (घ) पैसा

6. निम्नलिखित में से कौन सा वित्तीय संपत्ति का उदाहरण नहीं है?

(क) रियल एस्टेट (ख) डिबेंचर

(ग) सावधि जमा (घ) शेयर

7. जब 10000 रुपये की एक निश्चित राशि 8% की ब्याज दर के साथ निवेश की जाती है। 2 वर्षों के बाद राशि पर लौटाया गया चक्रवृद्धि ब्याज क्या होगा?

(क) 11600 (ख) 11664

(ग) 10800 (घ) 10664

8. _____ ब्याज की गणना प्रत्येक अवधि में उधार ली गई मूल राशि और सभी अवैतनिक संचित ब्याज पर की जाती है।

(क) चक्रवृद्धि (ख) सरल

(ग) लंबा (घ) वर्तमान

9. निम्न में कहाँ पर धन का निवेश किया जा सकता है।:

(क) डाकघर में (ख) बैंक और कंपनियां में

(ग) भारतीय रिजर्व बैंक में (घ) दोनों (क) और (ख) में

10. निम्नलिखित में से कौन सा व्यवस्थित निवेश योजना की विशेषताओं के संबंध में नहीं है?

(क) यह निवेशक को हर महीने या हर तिमाही में एक निश्चित तारीख पर यूनिट खरीदने की अनुमति देता है।

(ख) निवेशक निवेश की जाने वाली राशि तय करने के लिए स्वतंत्र है।

(ग) बड़ी रकम निवेश करने की जरूरत है।

(घ) एसआईपी योजनाओं के लिए कर लाभ उपलब्ध हैं।

SCERT DELHI

11 रिक्त स्थान भरिए

1. बचत "उपभोग पर खर्च नहीं की जाने वाली प्रयोज्य आय का _____ है।" (भाग/पूरा/कोई भाग नहीं)

2. निवेश _____ लाभ प्राप्त करने की आशा के साथ धन का नियोजन है। (भविष्य/अतीत/वर्तमान)

3. अल्पावधि निवेश को _____ (सट्टा/निवेश/बचत) के रूप में जाना जाता है

4. _____ किसी भी वित्तीय संपत्ति में नियमित अंतराल पर एक निश्चित राशि का निवेश है। (सिस्टम निवेश योजना (एसआईपी)/सिस्टमेटिक ट्रांसफर योजना)

5. _____ की गणना केवल एक समयावधि के लिए उस मूलधन पर की जाती है। (साधारण ब्याज/चक्रवृद्धि ब्याज)

12. निवेश एक बार में या आवर्ती जमा की तरह नियमित अंतराल पर किया जा सकता है। व्यवस्थित निवेश योजना किसी भी वित्तीय संपत्ति में नियमित अंतराल पर एक निश्चित राशि का निवेश है। यह धन संचय करने और पूंजी वृद्धि के लिए सरल और समय पर निवेश रणनीति है।

    i निवेश के दो तरीकों का उल्लेख करें।

    ii निवेश का उद्देश्य क्या है?

    iii व्यवस्थित निवेश योजना क्या है?

13. अपना पैसा निवेश करना कुछ कारणों से महत्वपूर्ण है। आप ज़रूरत के समय, नौकरी छूटने पर, या भविष्य के लक्ष्यों के लिए मदद के लिए धन बनाना चाहते हैं। आप मुद्रास्फीति को ध्यान में रखते हुए चक्रवृद्धि का भी लाभ उठाना चाहते हैं, ताकि समय के साथ आपके पैसे का मूल्य कम न हो। इसके अलावा, यदि आप किसी बिंदु पर काम रोकने और सेवानिवृत्त होने की योजना बना रहे हैं, तो उन लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद के लिए निवेश करना महत्वपूर्ण है। निवेश के साथ आप चक्रवृद्धि ब्याज का लाभ उठा सकते हैं। चक्रवृद्धि ब्याज वह ब्याज है जो आप अपने निवेशित धन पर अर्जित करते हैं और साथ ही प्रत्येक पूर्व अवधि में अर्जित धन भी।

i निवेश के क्या लाभ हैं?

ii "पैसे का मूल्य भविष्य की बजाय वर्तमान में अधिक है" किस अवधारणा को संदर्भित किया जाता है?

iii चक्रवृद्धि ब्याज से क्या तात्पर्य है?

❖❖❖

इकाई - 11
बजट निर्माण

उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के बाद, विद्यार्थी

- बजट के अर्थ को परिभाषित कर पाएंगे।
- पारिवारिक (कुटुंब) बजट का वर्णन कर सकेंगे।
- पारिवारिक (कुटुंब) बजट को तैयार करने की प्रक्रिया को उदाहरण सहित स्पष्ट कर सकेंगे।
- पारिवारिक (कुटुंब) बजट को बनाने के सुझावों की व्याख्या कर पाएंगे।

परिचय

'समय' और **'आमदनी'** दोनों ही महत्वपूर्ण एवं सीमित 'साधन' हैं। दोनों का ही सदुपयोग जरूरी है। जैसे विभिन्न विषयों में निपुणता के लिए एक विद्यार्थी समय सारणी (टाइम टेबल) बनाता है और समय का सदुपयोग करता है, उसी प्रकार परिवार का मुखिया किसी एक समयावधि में अनुमानित प्राप्तियों एवं अनुमानित व्ययों की एक सूची बना सकता है जिसे तकनीकी भाषा में बजट कहते हैं। इससे सीमित धन का सदुपयोग होगा।

मुख्य शब्दावली

क्रम	शब्दावली		अर्थ
1.	बजट		बजट धन को आबंटित करने का प्रस्ताव है ताकि वित्तीय संसाधनों का कुशलतम उपयोग किया जा सके।

2.	पारिवारिक बजट अथवा घरेलू बजट (Family Budget)	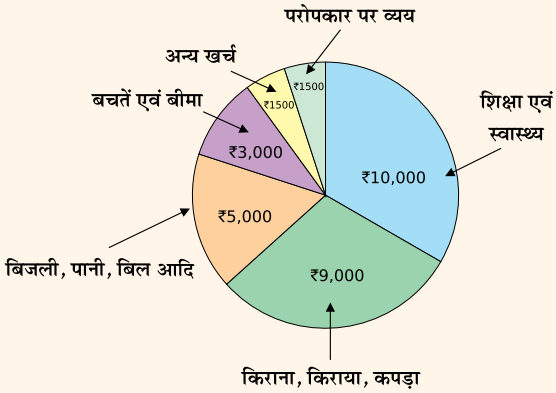	परिवार बजट' एक 'वित्तीय योजना' है जिसमें हम परिवार की आय को विभिन्न व्ययों और बचतों के लिए आबंटित करते हैं।
3.	वैयक्तिक बजट (Personal Budget)	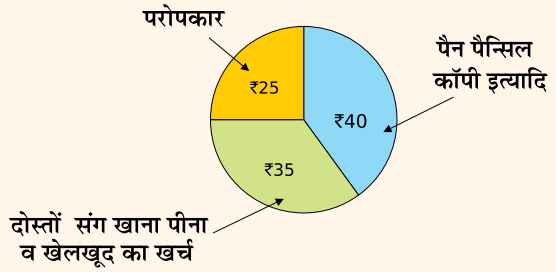	वैयक्तिक बजट एक व्यक्ति (छात्र) की निजी वित्तीय योजना है जिसमें वह अपनी प्राप्तियों को निजी व्ययों में आबंटित करता है।
4.	विवेकाधीन व्यय (Discretionary Expenses)		ऐसे व्यय जिन्हें नियंत्रित करना संभव है। उदाहरण, मनोरंजन, मोबाइल इत्यादि पर व्यय।
5.	गैर -विवेकाधीन व्यय (Discretionary Expenses)		ऐसे व्यय जिन्हें नियंत्रित करना या अनुमानित करना संभव न हो। उदाहरण, बुखार या किसी अन्य आकस्मिक बीमारी के इलाज पर होने वाला व्यय।

पारिवारिक बजट अथवा घरेलू बजट

पारिवारिक बजट अथवा 'घरेलू बजट', परिवार के खर्चों को प्राथमिकता के क्रमानुसार लगाकर, आय को समझदारी से उनमें विभाजित करने की एक विधि है।

बजट बनाने की विधि पर विस्तार में चर्चा करने से पहले एक बार नीचे दिए गए दो परिवारों की आय एवं व्यय के व्यवहार में अंतर देखें:

परिवार 'क'- जो की बजट नहीं बनाता (अर्थात आय का ध्यान रखे बिना खर्चे करता है) आय-व्यय का विवरण (सभी राशियाँ व मदें काल्पनिक हैं)			
वास्तविक प्राप्तियाँ	**राशि (₹)**	**वास्तविक व्यय**	**राशि (₹)**
आय	10,000	ऋण की किश्त एवं ब्याज	2,000
भेंट	0	रोटी, कपड़ा और मकान	7,000
सहायता	0	मौज मस्ती पर व्यय	4,000
		शिक्षा व स्वास्थ्य	मात्र 500
		अन्य खर्चे	1,500
कुल वास्तविक प्राप्तियाँ	**10,000**	**कुल वास्तविक व्यय**	**15,000**
आय कम है और व्यय ज्यादा, घाटे को पूरा करने के लिए इस परिवार को ऋण लेना होगा।			
ऋण ₹5,000		**भविष्य** अंधकारमय	

परिवार 'ख'- जो की बजट बनाता है (अर्थात आय का ध्यान रख कर खर्चे करता है) आय-व्यय का विवरण (सभी राशियाँ व मदें काल्पनिक हैं)			
अनुमानित प्राप्तियाँ	**राशि (₹)**	**अनुमानित व्यय**	**राशि (₹)**
आय	15,000	किराना, कपड़ा और किराया	4,000
भेंट	0	शिक्षा व स्वास्थ्य	6,000
सहायता	0	मनोरंजन	500
		आकस्मिक व्यय	250
		जीवन बीमा	1,500
		परोपकार पर व्यय	750
कुल अनुमानित प्राप्तियाँ	**15,000**	**कुल अनुमानित व्यय**	**13,000**
आय ज्यादा है और व्यय कम - इस परिवार के पास ₹2000 की बचत है।			
बचत ₹2,000		**भविष्य** उज्ज्वल	

परिवार क एवं ख में से परिवार ख का व्यय इसकी प्राप्तियों से कम है, (प्राप्तियां -₹15,000 और व्यय ₹13,000 शेष राशि को वह विभिन्न बचत माध्यमों मे लगा कर अपना एवं अपने परिवार का भविष्य उज्ज्वल कर सकता है।

पहले की इकाईयों में आय के साधनों, व्ययों, बचतों एवं अपने वित्तीय लक्ष्य के बारे में पढ़ चुके है, अब अगला कदम है लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कार्यों की सूची तैयार करना। वित्तीय लक्ष्य की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण है कि आप अपनी आय को विभिन्न कार्यों के लिए आबंटित करने का प्रस्ताव कैसे करते हैं अर्थात योजना कैसे बनाते हैं।

"बजट बनाने के लिए किसी विशेष कौशल की आवश्यकता नहीं होती परंतु अपने ही बनाए हुए बजट की अनुशासन से अमल करने की आवश्यकता होती है।"

बजट हमें समर्थ बनाता है जिससे हम धन को विभिन्न मदों में आबंटित करना सीखते हैं। इससे हम अपने वित्तीय संसाधनों (धन) का अधिक कुशलता से प्रबंधन कर पाते हैं, उन पर निरंतर नजर रख पाते हैं और अपने लक्ष्यों को भी हासिल कर पाते हैं।

'पारिवारिक (घरेलू अथवा कुटुंब) बजट' एक 'वित्तीय योजना' है जिसमें हम परिवार की आय को विभिन्न व्ययों और बचतों के लिए आबंटित करते हैं।

व्यय में निम्नलिखित शामिल हैं-

- किसी ऋण की वापसी अदायगी
- बच्चों की शिक्षा
- अनिवार्य वस्तुओं जैसे दूध, सब्जियों, फलों की खरीद,
- चिकित्सा और बिजली बिल आदि।

पारिवारिक बजट के लाभ

- पारिवारिक बजट द्वारा हम अपने धन का बेहतर प्रबंधन व नियंत्रण कर पाते हैं।
- बजट हमें व्यर्थ खर्चों से रोकता है।
- बजट बनाने से हमें वित्तीय चिंताओं से मुक्ति एवं मन की शांति मिलती है।

पारिवारिक बजट कैसे तैयार करें?

साधारण भाषा में कहें तो पारिवारिक बजट किसी परिवार के एक महीने के लिए आय-व्यय का विवरण है। इसे बनाने के लिए एक परिवार के सभी सदस्यों को एक-साथ बैठकर निर्णय लेना होगा।

बजट बनाने की प्रक्रिया

पारिवारिक (घरेलू अथवा कुटुंब) बजट तैयार करने के मुख्य चरण निम्नलिखित हैं

चरण-1 परिवार की मासिक आय की गणना

आय के विभिन्न स्रोतों की पहचान करके उन्हें सूचीबद्ध करेंगे और उनसे होने वाली आय के जोड़ से हमें कुल आय मिलती है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित सूची देखें:

स्रोत	आय	राशि (₹)
1. नौकरी	1. वेतन	
2. व्यापार	2. लाभ	
3. सम्पत्ति किराये पर देना	3. किराया	
4. बैंक व डाकघर में जमा राशि	4. बचत व मियादी जमा खाते पर ब्याज	
5. शेयरों में निवेश	5. निवेशों से प्रतिफल - लाभांश	
6. अन्य से	6. अन्य	
	कुल अनुमानित आय	

चरण-2 परिवार के मासिक व्यय

आय की गणना के बाद हम खर्चों की विभिन्न मदों की पहचान करके उन्हें सूचीबद्ध करेंगे। अब उनपर होने वाले व्ययों को लिखकर जोड़ने पर हमें कुल व्यय प्राप्त होगा। उदाहरण के लिए निम्नलिखित सूची देखें:

व्यय की मदें	राशि (₹)
1. ऋण की किश्त व ब्याज	
2. मकान का किराया	
3. किराना	
4. बिजली का बिल	
5. स्कूल, कॉलेज की फीस	
6. चिकित्सा व्यय	
7. बीमे की किश्त	
8. अन्य	
कुल अनुमानित व्यय	

चरण-3 विभिन्न व्ययों के लिए आय को आबंटित करना

- जब व्यय बिल्कुल हमारी आय के अंदर होता है तो कोई घाटा नहीं होता।
- जब व्यय आय से अधिक हो तो घाटा होता है।
- कुछ व्यय अनिवार्य होते हैं। जैसे, किराना बिल, शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर व्यय इत्यादि जिनको अनदेखा नहीं किया जा सकता।
- कुछ व्ययों से बचा जा सकता है और कुछ को बदला जा सकता हैं।

  उदाहरणत: यदि बच्चा कोई महंगा खिलौना लेना चाहता हैं तो हम उसे रोजाना पार्क में ले कर जाने के लिए या कुछ अच्छा खिलाने के लिए मना सकते हैं।

चरण-4 राशियों को आबंटित करने की विधियां

आय - व्यय = बचतें

विधि – '1'

मदों के अनुसार

लिफ़ाफ़े बनाना

प्राप्त आय को बजट के अनुसार आबंटित करने की यह एक पुरानी विधि है।

इस विधि में :

- सर्वप्रथम व्यय की विभिन्न मदों, जैसे 'मकान का किराया', 'किराना', 'बच्चों की शिक्षा', 'बीमों की किश्तें', 'ऋण की किश्त' इत्यादि के लिए कुछ लिफाफे बना लिए जाते हैं।
- प्रत्येक महीने इन विभिन्न लिफाफों में आबंटित राशि डाली जाती है।
- यदि खर्चों के बाद किसी लिफाफे में कुछ धन शेष रह जाता है तो उसका प्रयोग बचतों या कुछ अन्य महत्वपूर्ण खर्चों के लिए किया जा सकता है या फिर अगले माह के खर्च के लिए रखा जा सकता है।
- यदि धन कम पड़ जाता है तो शेष खर्च को अगले माह तक स्थगित करना चाहिए।

SCERT DELHI

विधि – '2'

वैकल्पिक विधि

'बजट' किसी 'पेपर' या 'नोट बुक' में भी तैयार कर सकते हैं।

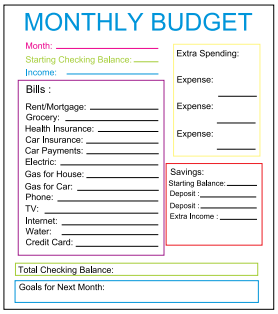

- हम व्यय की विभिन्न मदों के लिए राशि आबंटित कर सकते हैं।
- खर्च करते समय उचित मदों/शीर्षों को हिसाब में लिया जाना चाहिए और जोड़ किया जाना चाहिए।
- यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि संबंधित मदों/शीर्षों के लिए बजट आबंटन व्यय से न बढ़े।

स्मरण रहे, 'पारिवारिक (घरेलू) बजट' केवल एक दस्तावेज है जो कि परिवार के आर्थिक उद्देश्यों को व्यक्त करता है। बजट की सफलता इसे बनाने पर नहीं अपितु इसको ईमानदारी से लागू करने पर निर्भर करती है।

पारिवारिक (घरेलू) बजट कुटुम्ब बजट तैयार करने के कुछ सुझाव:

1. व्ययों के विभिन्न मदों को लिखें।

(अपना खर्च संबंधी व्यवहार अचानक न बदलें।)

2. एक महीने के लिए अपने सभी व्ययों को लिखें।

अपने खर्च की आदत को न बदलें

3. अपने व्यय का विश्लेषण करें और उसे विभिन्न श्रेणियों में बांटे।

ऐसा करना आपको यह समझने में सहायता करेगा कि आप ठीक खर्च कर रहें हैं या नहीं। यदि आप किसी अनावश्यक व्यय को टाल सकें तो यह आपका धन बचाने में सहायक होगा।

4. बचत करें और ऋण लेने से बचें

सोच समझकर खर्च करें जब तक कि आवश्यकता न हो। बिजली बचाएं, अपने घर किसी उपकरण को व्यर्थ न चलने दें ताकि बिजली का बिल कम आए। सभी बिलों को समय पर, देय तारीख से पहले, अदा करें एवं जुर्माने से बचें।

***(यदि आप किसी वस्तु को अचानक खरीदने को उत्सुक होते हैं तो उसे कम से कम 24 से 48 घंटे तक टालने का प्रयास करें और यदि अभी भी उसकी जरूरत महसूस हो तो उसे खरीद सकते हैं।)**

5. परिवार के सभी सदस्यों को शामिल करें

खर्चों के विश्लेषण और बजट संबंधी समझौतों में परिवार के सभी सदस्यों को शामिल करें। इससे बजट का पालन करने में उन सबका सहयोग मिलता है। परिवार की वस्तुओं को खरीदते समय भी बच्चों सहित सभी सदस्यों को शामिल करना चाहिए। निर्णय में भाग लेने के अवसर से बच्चों को भविष्य में भी मदद मिलेगी।

6. बजट बनाना केवल खर्च तक सीमित नहीं

कुटुम्ब बजट द्वारा हम आय को विभिन्न व्ययों के लिए आबंटित करते हैं। यदि हमारा व्यय हमारी आय से अधिक है तो हमें क्या करना चाहिए? इस स्थिति में हम अपनी आय बढ़ाने के उपायों का पता लगाएंगे या फिर अनावश्यक व्यय को कम करेंगे।

7. नकल न करें और अपने सामर्थ्यानुसार व्यय करें।

अन्य लोगों की नकल करने का प्रयास न करें। अपनी आय को समझदारी से खर्च करें और केवल उन चीजों को खरीदें जो आपके लिए अति आवश्यक और उपयोगी हों। केवल आपके पड़ोसी या किसी मित्र की नकल करके कुछ न खरीदें।

8. अत्यधिक दृढ़ नहीं बल्कि लचीले बनने का प्रयास करें

बजट जीवन के लिए एक विस्तृत योजना प्रदान करता है। अत्यधिक दृढ़ बनने की बजाए हमें थोड़ा लचीला व्यवहार अपनाना चाहिए। उदाहरण के लिए धागा जो पंतग उड़ाने के लिए प्रयोग किया जाता है पंतग को उड़ने से नहीं रोकता है परंतु धागा पतंग को कुछ सीमाओं में उड़ने देता है। इसलिए बजट लचीला होना चाहिए।

वैयक्तिक बजट (PERSONAL BUDGET)

वैयक्तिक बजट में बच्चों का भी बजट आता है। बच्चे अपने माता-पिता, दादा-दादी एवं अन्य रिश्तेदारों से तोहफे के रूप में पैसे प्राप्त करते हैं। वह यह पैसे विभिन्न समय अंतराल पर प्राप्त कर सकते हैं।

- जैसे आप, अपनी माँ से प्रतिदिन, पिता से साप्ताहिक आधार पर कुछ जेब खर्च ले सकते है।
- आपके दादा-दादी आपको "कुछ विशेष अवसरों" जैसे आपका जन्मदिन या त्यौहारों पर धन दे सकते हैं।

आप इस धन (पैसे) को विभिन्न मदों पर खर्च कर सकते हैं। जैसे-

- खाने की वस्तुएं
- स्टेशनरी/खिलौने
- पुस्तकें आदि के लिए प्रयोग कर सकते हैं

आपका वैयक्तिक बजट आपको योजना बनाने में सहायता करेगा और प्राप्त धन और खर्चों को संतुलित करेगा। कुछ धन जो आपके खर्चों के पश्चात् बचता है वह बचत है। यह बचत महत्वपूर्ण कारक है जो आपको आपके वित्तीय लक्ष्यों को पूरा करने में समर्थ बनाता है। किसी बजट का पालन करना आसान नहीं हो सकता, परंतु समय की अवधि के दौरान अभ्यास से हम अनुशासित हो जाएंगे। बजट की समीक्षा हमें किसी विचलन की पहचान करने और मौजूदा स्थिति को भी पुनः स्वीकार करने में सहायता देती है।

बजट विचलन का विश्लेषण (ANALYSIS OF BUDGET)

बजट को लागू करने के बाद उन व्ययों का विश्लेषण करना जरूरी है जिन पर हमारा नियंत्रण नहीं होता और जहां हमने अपने बजट से अधिक खर्च किया है। इस उदेश्य के लिए हम व्ययों को निम्न दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं:

1. **विवेकाधीन व्यय (DISCRETIONARY EXPENSES)**

   यह ऐसे व्यय हैं जिन्हें नियंत्रित करना संभव है। उदाहरण- कपड़ों, खाने-पीने, मनोरंजन, मोबाइल इत्यादि पर होने वाला व्यय।

2. **गैर-विवेकाधीन व्यय (NON-DISCRETIONARY EXPENSES)**

   ऐसे व्यय जिन्हें नियंत्रित करना या अनुमानित करना संभव नहीं होता। उदाहरण- शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि पर होने वाला व्यय। कोरोना बुखार या किसी अन्य आकस्मिक बीमारी के इलाज पर होने वाले व्यय का अनुमान लगाना और उसे नियंत्रित करना संभव नहीं होता।

सारांश

वित्तीय संसाधनों का कुशलतम उपयोग और वित्तीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बजट एक उत्तम साधन है। बजट विभिन्न स्रोतों से प्राप्त धन और खर्चों के मध्य संतुलन स्थापित करने का कार्य करता है । विवेकाधीन व्यय है, वह व्यय हैं जिन पर नियंत्रण करना संभव है और गैर-विवेकाधीन व्यय वह व्यय हैं जिन का अनुमान लगाना और जिन पर नियंत्रण करना संभव नहीं होता।

सीखने का सुदृढ़ीकरण (LEARNING REINFORCEMENTS)

वाद-विवाद	1. बजट एक निरर्थक प्रक्रिया है। 2. बजट बनाना केवल खर्च तक ही सीमित रह जाता है।

SCERT DELHI

क्या आप जानते है	1. भारत सरकार भी बजट बनाती है। 2. हर वित्तीय वर्ष (1 अप्रैल से 31 मार्च तक) के लिए अनुमानित प्राप्तियों और खर्ची का बजट तैयार किया जाता है। स्वतंत्र भारत का पहला बजट के शनमुखम चेट्टी ने 26 नवम्बर 1947 को पेश किया था। आज़ादी से पहले ब्रिटिश अर्थशास्त्री जेम्स विल्सन ने 1860 में भारत का पहला बजट पेश किया था।
खोजे और जांच करें	1. अपने घर की आय के विभिन्न स्रोतों की पहचान और खर्चों की विभिन्न मदों की पहचान करें और उन्हें सूचीबद्ध करें। 2. आप अपना एक महीने का बजट बनाएँ और अपने दोस्तों से कक्षा में चर्चा करें। 3. सरकार की प्राप्तियों के क्या स्रोत हैं? और सरकार खर्च कहाँ कहाँ करती है?

कार्यपत्रक (WORKSHEET)

1. बजट _____ को आबंटित करने का माध्यम है।

   (क) आय (ख) व्यय

   (ग) बचत (घ) धन

2. ऐसे व्यय जिनका नियंत्रण किया जा सकता है, उनको _____ व्यय कहा जाता है।

   (क) विवेकाधीन (ख) गैर विवेकाधीन

   (ग) उचित (घ) नियोजित

3. ऐसे व्यय जिन पर कोई नियंत्रण नहीं होता, उनको _____ व्यय कहा जाता है।

   (क) विवेकाधीन (ख) गैर विवेकाधीन

   (ग) अच्छे (घ) बुरा

4. पारिवारिक बजट एक _____ योजना है।

   (क) वित्तीय (ख) व्यय

   (ग) आय (घ) बचत

SCERT DELHI

5. निम्नलिखित में कौन सा पारिवारिक (घरेलू अथवा कुटुम्ब) बजट तैयार करने का सही सुझाव नहीं है।

(क) परिवार के सभी सदस्य को शामिल करना (ख) लचीलापन अपनाना

(ग) अपने पड़ोसी की देखा देखी खर्च करें (घ) बिजली बचाएं

6. दिए गए चित्र में किस प्रकार के व्यय को दर्शाया गया है –

Source: https://pixabay.com/photos/flower-roses-dry-rose-petals-1457676/

(क) विवेकाधीन (ख) गैर विवेकाधीन

(ग) आवश्यक (घ) बुरा

7. दिए गए चित्र में किस प्रकार के व्यय को दर्शाया गया है –

Source: https://pixabay.com/photos/medications-tablets-medicine-cure-1853400/

(क) विवेकाधीन (ख) गैर विवेकाधीन

(ग) अच्छे (घ) बुरा

8. पारिवारिक/घरेलू/कुटुंब बजट के क्या लाभ है?

9. पारिवारिक/घरेलू/कुटुंब बजट बनाने के लिए सुझावों का वर्णन कीजिये।

10. विवेकाधीन व्यय और गैर-विवेकाधीन व्यय के मध्य अंतर्भेद कीजिये।

❖❖❖

Appendix
(उत्तर कुंजी)

इकाई 1 _____धन क्या है?

कार्यपत्रक

1. वस्तु विनिमय
2. वर्ष 2016 में
3. धातु के सिक्के
4. भारतीय रिज़र्व बैंक
5. ₹1000 का नोट
6. (i) विनिमय का माध्यम
   (ii) मूल्य का मानक
   (iii) मूल्य का भंडार
7. अमूर्त धन

इकाई 2 धन विनमय प्रणाली

कार्यपत्रक

II. सही उत्तर का चयन कीजिए।

1. (क) अधिक कुशलता
2. (ख) वस्तु से वस्तु का लेन-देन
3. (ग) ये सभी

SCERT DELHI

II. रिक्त स्थान भरें-

1. चीन
2. भारतीय रुपया
3. विशेषता
4. ब्रिटेन

इकाई 3: मुद्रा की महत्वपूर्ण विशेषताएं

I. सही विकल्प चुनें -

1. (ख) वह सहर्ष स्वीकार्य होना चाहिए
2. (ग) प्रयोग करने योग्य मात्राओं में विभाज्य

II रिक्त स्थान भरें-

1. टिकाऊपन
2. बचत

III. सही या गलत बताएं - सही (द) अथवा (ग)

1. गलत
2. सही

IV कथन और कारण

1. ए और आर दोनों सत्य हैं लेकिन आर, ए का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
2. (क) ए और आर दोनों सत्य हैं और आर, ए कस सही स्पष्टीकरण है।

इकाई 4: वित्तीय नियोजन क्या है?

कार्यपत्रक 1 (worksheet 1)

बहुविकल्पीय प्रश्न

Q. 1. (क) पैसा

Q. 2. (ख) योजना

Q. 3. (ग) पैसा

SCERT DELHI

Q. 4. (घ) दोनों (ख) और (ग)

Q. 5. (घ) दोनों (क) और (ग)

Q. 6. (ग) दोनों (क) और (ग)

Q. 7. (क) ए और आर दोनों सत्य हैं और आर, ए का सही स्पष्टीकरण है।

Q. 8. (घ) कथन 1 सत्य है, लेकिन कथन 2 गलत है।

Q. 9. (क) ज़रूरतें

Q. 10. (घ) कपड़े

Q. 11. (ग) ए सत्य है लेकिन आर गलत है।

Q. 12. (ख) चाहत

Q. 13. (क) स्मार्ट

रिक्त स्थान भरें

1. पैसा
2. वित्तीय योजना
3. योजना
4. धन समय
5. मूल्य
6. गंतव्य स्थान
7. कार्य योजना
8. विश्लेषण करना

SCERT DELHI

इकाई 5: आय क्या है?

I. सही विकल्प का चयन करें

1. (ख) 2. (ग) 3. (घ)

II.

1. कटौतियाँ 2. ब्याज
3. किराया (रेंट) 4. मजदूरी

इकाई 6: आय क्या है?

I. सही विकल्प का चयन करें

I. सही विकल्प का चयन करें

II.

1. अपरिवर्तन 2. इच्छाओं की पूर्ति
3. परिवर्तनशील 4. बजट

इकाई 7: बैंक क्या होता है?

I. सही विकल्प का चयन करें

1. (ग) पासबुक 2. (ख) चालूखाता

II. रिक्त स्थान भरें

1. स्वचालित टेलर मशीन (एटीएम) 2. प्लास्टिक

III. सही या गलत बताएं - सही (✓) अथवा गलत

1. गलत 2. सही

इकाई 7: "बचत क्यों करें"

I. सही विकल्प का चयन करें

1. (ख) 9 वर्ष 2. (ग) 3. (ग)
4. (ख) 11,664 रूपये 5. (घ) 77,000 रूपये 6. (क) बचत
7. (क) चक्रवृद्धि ब्याज 8. (ख) दुगना 9. (घ) प्रयोजय आय

SCERT DELHI

इकाई 9: लक्ष्य निर्धारित करना

I. सही उत्तर का चयन करें

1. (ख) 2. 3. (ख)

II. सही (✓) या गलत (x) बताएँ

1. 2. सही 3. सही

इकाई 10: व्यवस्थित बचत और निवेश

I. सही विकल्प चुनें-

1. (घ) बचत 2. (घ) हीरा 3. (ग) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सत्य है।
4. (क) निश्चित 5. (ग) निवेश 6. (क) रियल इस्टेट
7. (ख) 11664 8. (क) चक्रवृद्धि 9. (घ) दोनों (क) और (ख)
10. (ग) बड़ी रकम निवेश करने की जरूरत है।
11. रिक्त स्थान भरें
    1. भाग
    2. भविष्य
    3. बचत
    4. व्यवस्थित निवेश योजना (एसआई पी)
    5. साधारण ब्याज

इकाई 11: बजट बनाना

1. (घ) धन 2. (क) विवेकाधीन 3. (क) गैर विवेकाधीन
4. (क) वित्तीय 5. (ग) अपने पड़ोसी को देखा देखी चर्चा करें
6. (क) विवेकाधीन 7. (ख) गैर विवेकाधीन

नोट : इस पुस्तक में प्रयुक्त सामग्री एवं चित्र पूर्णतः शैक्षणिक उद्देश्य के लिए है, किसी व्यावसायिक उपयोग के लिए नहीं।

SCERT DELHI

ISBN : 978-81-971736-6-0

"एक बुद्धिमान व्यक्ति को हमेशा बदलती बाज़ार स्थितियों के प्रति सचेत रहना चाहिए, और उसके अनुसार कार्य करना चाहिए।"

– चाणक्य

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
वरूण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली-110024